दैनिक

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

जयपुर,सीकर, झुंझुनू, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 118 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 21 मई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

गुणवत्तापूर्ण सेवाएं सरकार का ध्येय, अधिकारी करें बेहतरीन विभागीय प्रबंधन : सुधांश पंत

मुख्य सचिव सुधांश पंत सालासर आए, बालाजी मंदिर में किए दर्शन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्य सचिव सुधांश पंत मंगलवार को जिले के सालासर आए। मुख्य सचिव पंत ने सालासर ग्राम पंचायत कार्यालय स्थित आईटी सेंटर में बैठक लेकर फ्लैगशिप योजनाओं, विभागीय कार्यों, गतिविधियों, नागरिक सेवाओं व व्यवस्थाओं को लेकर अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण सेवाएं सरकार का ध्येय है। इसके लिए अधिकारी बेहतरीन विभागीय प्रबंधन करते हुए आमजन को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं दें। अधिकारी विभागीय सेवाओं की नियमित मॉनीटरिंग करें और आमजन से किसी भी माध्यम से प्राप्त शिकायतों का यथाशीघ्र निस्तारण करें। उन्होंने कहा कि गर्मियों के मौसम को देखते हुए बिजली, पेयजल व चिकित्सा सेवाओं का मजबूत विभागीय प्रबंधन रहे। अधिकारी फील्ड मशीनरी को मुस्तैद रखें तथा संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करें। मुख्य सचिव पंत ने कहा कि विभागीय कार्यालयों में फाइलें ई-फाइल मॉड्यूल में ही मूव करें तथा डिस्पोजल टाइम कम करें। इसी के साथ संपर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें। प्रयास करें कि प्रकरणों के निस्तारण में परिवादियों का संतुष्टि स्तर बेहतरीन हो। उन्होंने जिला कलक्टर से जिले में योजनाओं की क्रियान्विति की नियमित मॉनीटरिंग करने, फील्ड स्तरीय अधिकारियों की ओर से नियमित निरीक्षण, बेहतरीन लोक

सेवाएं सहित विभागीय गतिविधियों के नियमित एनालिसिस करने की बात कही। उन्होंने सीएमएचओ से कहा कि आभा आईडी वितरण पर फोकस करें। सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में सरकार की मंशानुरूप लाभ मिले। गर्मी के मौसम को देखते हुए बीमारियों आदि से बचाव के लिए समुचित प्रबंध किए जाएं। इसी के साथ विभागीय प्रोजक्ट कार्यों में गुणवत्ता का विशेष खयाल रखा जाए। उन्होंने पीएचईडी अधिकारियों से कहा कि जल जीवन मिशन सहित पेयजल योजनाओं से संबंधित कार्यों में गुणवत्ता व समयबद्धता का विशेष ख्याल रखा जाए। अधिकारी प्रोजेक्ट कार्यों की नियमित मॉनीटरिंग करें। प्रोजेक्ट कार्यों के नियमित निरीक्षण के साथ सुनिश्चित करें कि किसी प्रकार की लापरवाही न हो। उन्होंने सीडीईओ से कहा कि शिक्षा व्यवस्था में नियमित सुधार करें। शैक्षिक परिदृश्य में जिले की प्रगति को बरकरार रखें तथा मुख्यमंत्रा शिक्षित राजस्थान अभियान अंतर्गत क्वालिटी आउटकम पर फोकस करें। इसी के साथ कोड चूरू नवाचार में इनरोल विद्यार्थियों से प्रोडक्टिव व यूटिलिटी बेस्ड रिजल्ट सामने आएं, इसके लिए प्रशिक्षित करें। उन्होंने बैठक के दौरान मादक पदार्थों की तस्करी के विरूद्ध कार्रवाई, अवैध खनन के विरूद्ध कार्रवाई, महिलाओं के विरूद्ध अत्याचार पर कार्रवाई, धार्मिक पर्वों व साम्प्रदायिक घटनाओं, राष्ट्रीय राजमार्गों पर दुर्घटनाओं, कानून व सुरक्षा व्यवस्था, नए क्रिमिनल लॉ की क्रियान्विति, कन्वर्जन के लंबित प्रकरणों, म्यूटेशन के लंबित प्रकरणों, भूमि कन्वर्जन व म्यूटेशन का एवरेज टाइम, विभिन्न विभागों में कार्मिकों, अधिकारियों के एवरेज फाइल डिस्पोजल, संपर्क पोर्टल, आई गॉट मिशन कर्मयोगी पर पंजीकरण व प्रशिक्षण, भूमि अधिग्रहण लंबित प्रकरण, प्रदेश सरकार की बजट घोषणाओं में भूमि आवंटन, जल जीवन मिशन, अमृत योजना, पीएम

विश्वकर्मा योजना, नमो ड्रोन दीदी, सोलर दीदी, हरियालो राजस्थान अभियान, सीएम स्वनिधि योजना, कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान, मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान, राजस्व अर्जन, राइजिंग राजस्थान सहित विभागीय योजनाओं की समीक्षा कर समुचित निर्देश दिए। इसके बाद मुख्य सचिव ने सालासर ग्राम पंचायत कार्यालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखीं। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने जिले में व्यवस्थाओं व विभागीय गतिविधियों और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समुचित जानकारी दी। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशों की समुचित पालना के निर्देश दिए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेन्द्र दादरवाल ने जिले में कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था तथा विभागीय कार्यों व गतिविधियों की जानकारी दी। इस दौरान सीडीईओ गोविंद सिह राठौड़, पीएचईडी प्रोजेक्ट एडिशनल चीफ इंजीनियर राममूर्ति, सीएमएचओ डॉ मनोज शर्मा, डिस्कॉम एसई आरपी वर्मा, पीएचईडी एसई चुन्नीलाल आदि अधिकारी उपस्थित रहे।

बालाजी मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना की

बैठक से पूर्व मुख्य सचिव सुधांश पंत ने सालासर बालाजी मंदिर में दर्शन कर पूजा -अर्चना की तथा देश-प्रदेश में खुशहाली की कामना की। मंदिर में मांगीलाल पुजारी, यशोदानंदन पुजारी, मनोज पुजारी, प्रकाश पुजारी, जीतमल पुजारी, कमल पुजारी आदि ने पूजा अर्चना करवाई और बालाजी का चित्र व दुपट्टा भेंट कर मुख्य सचिव का स्वागत किया। मुख्य सचिव पंत ने मंदिर परिसर व सालासर के विकास कार्यों की जानकारी ली।

गौशाला में देखी व्यवस्थाएं

इसी अवसर पर मुख्य सचिव सुधांश पंत ने सालासर स्थित श्रीबालाजी गौशाला संस्थान में व्यवस्थाएं देखीं। उन्होंने गौशाला में गोवंश के लिए पेयजल, चारे, छाया व्यवस्था, संधारित गोवंश, चिकित्सा सुविधा सहित व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

सुप्रीम फैसलाः ज्यूडिशियल सर्विस में प्रवेश के लिए 3 साल की प्रैक्टिस अनिवार्य

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। सुप्रीम कोर्ट ने निचली अदालत के जजों यानी जूनियर डिविजन सिविल जज की नियुक्ति पर अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट का कहना है कि इन पदों पर परीक्षा के लिए उम्मीदवार को कम से कम तीन साल की लीगल प्रैक्टिस करना जरूरी है। कोर्ट ने लॉ ग्रेजुएट की सीधी भर्ती पर रोक लगा दी है। वह परीक्षा तभी दे सकेंगे, जब वो लॉ से ग्रेजुएट होने के बाद तीन साल वकील के तौर पर काम करें। मुख्य न्यायाधीश भूषण रामाकृष्ण गवई, जस्टिस एजी मसीह और जस्टिस विनोद चंद्रन की बेंच ने यह फैसला सुनाया है। जस्टिस गवई ने कहा कि नए लॉ स्नातकों की नियुक्ति से कई समस्याएं पैदा हुई हैं, जैसा कि हाईकोर्ट के हलफनामों से पता चलता है। हम हाईकोर्ट के साथ इस बात पर सहमत हैं कि न्यूनतम प्रैक्टिस की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब प्रत्याशी को न्यायालय के साथ काम करने का अनुभव हो। पिछले 20 सालों से,नए लॉ स्नातकों को बिना अभ्यास के न्यायिक अधिकारी के रूप में नियुक्त करना एक सफल अनुभव नहीं रहा है। ऐसे नए लॉ स्नातकों ने कई समस्याओं को जन्म दिया है। 2002 में सुप्रीम कोर्ट ने न्यूनतम प्रैक्टिस की आवश्यकता को खत्म कर दिया था, जिससे नए लॉ ग्रेजुएट्स को मुंसिफ-मजिस्ट्रेट पदों के लिए आवेदन करने की अनुमति मिल गई थी। हालांकि, बाद में सुप्रीम कोर्ट में आवेदन दायर किए गए थे जिसमें केवल वकीलों के लिए ही शर्त को बहाल करने की मांग की गई थी। कई उच्च न्यायालयों ने भी न्यूनतम प्रैक्टिस की आवश्यकता को बहाल करने के कदम का समर्थन किया।

स्कूलों में पढ़ाई जाएगी ब्रम्होस और आकाश मिसाइलों की शौर्य गाथा

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। चंद्रयान की तरह अब ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान को घुटने के बल लाने वाली ब्रम्होस और आकाश मिसाइलों के शौर्य की कहानी भी स्कूली बच्चे पढ़ेंगे। शिक्षा मंत्रालय जल्द ही इसे सभी भारतीय भाषाओं में स्कूली बच्चों तक पहुंचाने की तैयारी में है। जो स्कूलों में बच्चों तक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधियां और भारतीय भाषाओं को सिखाने के क्रम में रोचक तरीके से पहुंचाएगी जाएगी। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सोमवार को एक कार्यक्रम में इसके संकेत दिए और कहा कि ब्रम्होस और आकाश की ताकत हमारी शिक्षा व्यवस्था की मजबूती का प्रमाण है। ऐसे में हमें शोध पर अधिक बल देना चाहिए। इसके लिए पीएम रिसर्च फंड में जरूरी बदलाव किए जा रहे है। माना जा रहा है कि इस पहल से बच्चों के मन में ऐसे शोधों के प्रति रूझान बढ़ेगा, जो राष्ट्रीय हितों के प्रति जुड़ाव बढ़ाने वाले हो। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बच्चों में स्कूली स्तर से ही ऐसे बीच रोपने की सिफारिश की गई है, ताकि वह आगे चलकर शोध और इनोवेशन के क्षेत्र में देश का नाम रोशन कर सकें। मंत्रालय

से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक चंद्रयान की सफलता की कहानी को बच्चों के बीच जिस रोचक तरीके से पहुंचाया गा था, साथ ही वह बच्चों की जुबान पर छा गया है, उसे देखते हुए ब्रम्होस और आकाश मिसाइलों की सफलता की कहानी भी बच्चों की बीच पहुंचायी जाएगी। इनमें यह बताया जाएगा कि कैसे इन मिसाइलों ने पाकिस्तान की मिसाइलों को हवा में ही मार न सिर्फ ध्वस्त किया बल्कि इन मिसाइलों ने पाकिस्तान के सारे सुरक्षा तंत्र को भेदते हुए उसके भीतर घुसकर उसके हवाई अड्डों और आतंकी ठिकानों को नष्ट किया।

एएसआई 15 हजार रुपए रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

पाली(निस)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए सादड़ी थाना, जिला पाली में तैनात सहायक उप निरीक्षक (एएसआई) पदाराम उर्फ पदमाराम मीणा को 15 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई एसीबी चौकी पाली द्वितीय की टीम ने मुख्यालय के निर्देश पर अंजाम दी। एसीबी महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि पाली द्वितीय एसीबी चौकी को शिकायत प्राप्त हुई थी कि सादड़ी थाने में दर्ज एक प्रकरण में एफआर (अंतिम रिपोर्ट) देने के बदले एएसआई पदाराम मीणा रिश्वत की मांग कर रहा है। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए एसीबी ने रिश्वत मांग की पुष्टि के लिए प्राथमिक जांच की। ट्रेप कार्रवाई जोधपुर रेंज के उप महानिरीक्षक हरेन्द्र महावर के पर्यवेक्षण में संपन्न हुई। पाली द्वितीय एसीबी चौकी प्रभारी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक खींवसिंह व अन्य अधिकारियों ने संयुक्त रूप से

योजना बनाकर 20 मई को कार्रवाई को अंजाम दिया। आरोपी एएसआई मीणा को परिवादी से 15 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव के पर्यवेक्षण में आरोपी से पूछताछ की जा रही है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर आगे की जांच प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

पहलगाम आतंकी हमले पर मल्लिकार्जुन खरगे ने केंद्र को घेरा

जयपुर टाइम्स

विजयनगर(निस)।। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने केंद्र सरकार को घेरा। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को छोटा सा युद्ध बताया। कर्नाटक में कांग्रेस की समर्पण-संकल्प रैली को संबोधित करते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि पहलगाम में 26 लोग इसलिए मारे गए क्योंकि मोदी सरकार ने वहां पर्यटकों को सुरक्षा मुहैया नहीं कराई। मोदी कश्मीर नहीं गए क्योंकि खुफिया एजेंसियों ने उन्हें ऐसा करने से मना किया था। केंद्र सरकार ने पर्यटकों से पहलगाम न जाने के लिए क्यों नहीं कहा? अगर उन्हें बताया गया होता, तो 26 लोगों की जान बचाई जा सकती थी। ऑपरेशन सिंदूर तो छोटा सा युद्ध है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के ऑपरेशन सिंदूर को छोटा युद्ध बताने वाले बयान पर भाजपा सांसद संबित पात्रा ने पलटवार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पाकिस्तान को ऑक्सीजन देने का काम करती है। सब जानते हैं कि हाफिज राहुल गांधी को क्यों पसंद करते हैं? कांग्रेस पार्टी और खरगे कह रहे हैं कि ऑपरेशन सिंदूर एक छोटा युद्ध है। क्या राहुल गांधी और खरगे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि हमारे सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान में घुसकर वहां नौ आतंकी ठिकानों पर हमला किया और 100 से अधिक आतंकवादियों को मार गिराया। पाकिस्तान की ओर से जवाबी कार्रवाई के बाद उनके 11 एयरबेस नष्ट कर दिए गए और आज पाकिस्तान दर्द से कराह रहा है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर छोटा युद्ध कहना देश और सशस्त्र बलों की बहादुरी के साथ धोखा है। राहुल गांधी जी पिछले दो दिनों से सबूत मांग रहे हैं। हम पहले दिन से ही डिजिटल सबूत पेश कर रहे हैं। पाकिस्तानियों ने खुद सबूत दिखाए हैं। इसके बावजूद आप सशस्त्र बलों के साहस का सबूत मांग रहे हैं। यही कारण है कि राहुल गांधी और उनके नेता पाकिस्तान में पोस्टर बॉय बन गए हैं। ऑपरेशन के समय सिंदूर पाक डीजीएमओ ने राहुल गांधी वीडियो दिखाए थे। भारत ने 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकियों के ठिकानों पर सटीक हमले किए। यह कार्रवाई 22 अप्रैल को पाहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में की गई थी। इसके बाद पाकिस्तान ने 8, 9 और 10 मई को भारतीय सैन्य ठिकानों पर हमले की कोशिश की, जिनका भारतीय सेना ने करारा जवाब दिया।

फिर खतराः देश के 11 राज्यों में फैला कोरोना

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। कोरोना वायरस का नया स्ट्रेन अब तक 257 लोगों को अपनी चपेट में ले चुका है और इसका असर देश की राजधानी दिल्ली सहित 11 राज्यों तक हो चुका है। इससे स्वास्थ्य एजेंसियां एक बार फिर सक्रिय हो गई हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना के नए स्ट्रेन की अब तक की संक्रामकता से यह संभावना दिखाई

दे रही है कि यह कोविड 19 के पहले और दूसरे म्यूटेशन की तरह बहुत संक्रामक नहीं हो सकता है। लेकिन फिर भी अन्य बीमारियों से जूझ रहे लोगों पर इसका नकारात्मक असर दिखाई दे सकता है। अन्य बीमारियों से जूझ रहे लोगों को सतर्क रहना चाहिए और कोई भी लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सकों से परामर्श करना चाहिए।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के कोविड डैशबोर्ड पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार 20 मई तक देश में कोरोना के 257 सक्रिय मामले हैं। इसमें 164 मामले नए दर्ज किए गए हैं। मुंबई के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल में दो लोगों की मौत भी हो चुकी है, हालांकि इन मौतों के पीछे अन्य कारण बताए गए हैं। मृतकों में 59 वर्षीय एक व्यक्ति कैंसर से पीड़ित था, जबकि दूसरी मृतक एक 14 वर्षीय किशोरी थी जिसको भी अन्य परेशानियां थीं। इस समय सबसे ज्यादा कोरोना के मामले केरल में दर्ज किए गए हैं जहां सक्रिय मरीजों की संख्या 95 तक पहुंच चुकी है। इसमें 69 केस नए हैं। दूसरे नंबर पर तमिलनाडु है जहां इस समय कुल 66 सक्रिय केस हैं। इसमें 34 मामले नए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र का नंबर आता है जहां कुल सक्रिय मरीज 56 हैं जिसमें 44 मामले नए दर्ज किए गए हैं। नए मामलों में महाराष्ट्र तमिलनाडु से आगे है। गुजरात में कोरोना के सात मामले सक्रिय हैं जिसमें छः मामले नए दर्ज किए गए हैं। पुडुचेरी में कोरोना के मामलों में कमी आई है। यहां इस समय 10 सक्रिय केस हैं, जबकि तीन मरीजों को पूरी तरह स्वस्थ घोषित कर दिया गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजस्थान दौरा कल, बीकानेर आएंगे

जयपुर टाइम्स

जयपुर/बीकानेर(कासं)।। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 22 मई को राजस्थान के दौरे पर आएंगे। वे बीकानेर जाएंगे और सुबह करीब 11 बजे देशनोक स्थित करणी माता मंदिर में दर्शन करेंगे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री सुबह लगभग 11.30 बजे अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकसित देशनोक स्टेशन का उद्घाटन करेंगे और बीकानेर -मुंबई एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। इसके बाद, प्रधानमंत्री 26,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित करेंगे और पलाना में एक सार्वजनिक समारोह को भी संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री देश में रेल

अवसंरचना को निरंतर बेहतर बनाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 86 जिलों में 1,100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 103 पुनर्विकसित अमृत स्टेशनों का उद्घाटन करेंगे। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 1,300 से अधिक स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं के साथ पुनर्विकसित किया जा रहा है, जिन्हें क्षेत्रीय वास्तुकला को प्रतिबिंबित करने और यात्री सुविधाओं को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। करणी माता मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की सेवा करने वाला देशनोक रेलवे स्टेशन मंदिर वास्तुकला, मेहराब और स्तंभ विषयवस्तु से प्रेरित है। तेलंगाना में बेगमपेट रेलवे स्टेशन काकतीय साम्राज्य की वास्तुकला से प्रेरित है। बिहार में थावे स्टेशन में 52 शक्तिपीठों में से एक मां थावेवाली का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न भित्ति चित्र और कलाकृतियां शामिल हैं और मधुबनी पेंटिंग को भी दर्शाया गया है। गुजरात का डाकोर स्टेशन रणछोड़राय जी महाराज से प्रेरित है। देश भर में पुनर्विकसित अमृत स्टेशनों में सांस्कृतिक विरासत के साथ आधुनिक बुनियादी ढांचे, दिव्यांगजनों के लिए यात्री-केंद्रित सुविधाओं और यात्रा के अनुभव को बेहतर करने के लिए टिकाऊ प्रथाओं को एकीकृत किया गया है। भारतीय रेलवे अपने नेटवर्क के 100 प्रतिशत विद्युतीकरण की ओर अग्रसर है, जिससे रेलवे संचालन अधिक कुशल और पर्यावरण अनुकूल बन रहा है। इसी क्रम में, प्रधानमंत्री चूरू-सादुलपुर रेल लाइन (58 किलोमीटर) की आधारशिला रखेंगे और सूरतगढ़-फलोदी (336 किलोमीटर); फुलेरा-डेगाना (109 किलोमीटर); उदयपुर -हिम्मतनगर (210 किलोमीटर); फलोदी-जैसलमेर (157 किलोमीटर) और समदड़ी-बाड़मेर (129 किलोमीटर) रेल लाइन विद्युतीकरण को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। राजस्थान में सड़क अवसंरचना को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री 3 वाहन अंडरपास के निर्माण, राष्ट्रीय राजमार्गों के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण की आधारशिला रखेंगे। वे राजस्थान में 7 सड़क परियोजनाओं को भी समर्पित करेंगे। 4850 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली ये सड़क परियोजनाएं माल और लोगों की सुगम आवाजाही की सुविधा प्रदान करेंगी। राजमार्ग भारत-पाक सीमा तक फैले हुए हैं, जो सुरक्षा बलों के लिए आवाजाही में सुगमता को बढ़ाते हैं और भारत के रक्षा अवसंरचना को मजबूत करते हैं।

राजपूत समाज निकालेगा विशाल केसरिया ध्वज यात्रा 24 को

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। लक्ष्मेश कुमार सिंह प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा राजस्थान ने बताया कि करनी सेना एवं समस्त राजपूत समाज अलवर द्वारा दिनांक 24 मई 2025 शनिवार को पृथ्वीराज चौहान की जयन्ती पर विशाल केसरिया ध्वज यात्रा निकालेगी। देवेन्द्र प्रताप सिंह चौहान जिलाध्यक्ष ने बताया विशाल केसरिया ध्वजा यात्रा राजपूत छात्रावास परशुराम सर्किल, अलवर से प्रारम्भ होकर अशोका टाकीज, त्रिपोलिया, होप सर्कस, घण्टाघर, मन्नी का बड़ होते हुए कम्पनी बाग स्थित शहीद स्मारक पर समाप्त होगी। इस विशाल ध्वज यात्रा में चौपरिया, दुपरिया वाहना, डी.जे. के साथ राजपूत समाज के गणमान्य लोग, युवा शामिल होगे। समाज एवं सर्व समाज के गणमान्य लोगों से अपील है कि अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर यात्रा को सफल बनाने में सहयोग करे। पृथ्वीराज चौहान की जयन्ती पर निकाली जाने वाले विशाल केसरिया ध्वजयात्रा का पोस्टर विमोचन भी किया गया। इस पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में विजेन्द्र सिंह चौहान, जितेन्द्र राठौड, रामदयाल सिंह, दीपक सिंह तॅवर, भूपेन्द्र राठौड, पवन सिंह निर्वाण, हितेन्द्र सिंह नरूका, टोनू बना, उम्मेद सिंह चौहान, विक्रम सिंह चौहान सहित राजपूत समाज के लोग शामिल रहे।

वन मंत्री ने सुनी जनता की समस्याएं

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने मंगलवार को अपने निवास स्थान 201 रघुमार्ग पर जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में ग्राम पंचायत पुनर्गठन, सडक, विद्युत, पुलिस, स्थानांतरण की परिवेदनाएं प्रमुख रही जिस पर मंत्री शर्मा ने संबंधित अधिकारियों को दूरभाष से परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिये। परिवेदनाओं के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरते जाने पर सख्त कार्रवाई अमल में लाई जावेगी। उन्होंने फरियादियों से कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा आमजन के कल्याण हेतु विभिन्न योजनाएं संचालित की गई है जिनका जागरूक रहकर लाभ उठाने के साथ-साथ अन्य लोगों को लाभ उठाने हेतु जागरूक करें।

केंद्रीय मंत्री यादव की अनुशंषा पर उटोली ग्राम में पेयजल हेतु 58.86 लाख रूपये की राशि स्वीकृत

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेंद्र यादव की अनुशंषा पर ग्राम उटोली (बहरोड) में पेयजल समस्या के समाधान हेतु राज्य योजना (ग्रामीण) के अन्तर्गत 58.86 लाख रूपये की राशि स्वीकृति जारी हुई है। स्वीकृत राशि से गांव में 1 ट्यूबवेल मय थ्री फेस कनेक्शन व 1 पानी की टंकी बनेगी और 4500 मीटर पानी की लाइन डाली जाएगी।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय मल्लाना में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) पंचायत समिति के मल्लाना में स्थित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में कक्षा 7,8,9 व 11 में प्रवेश हेतु आवेदन प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। विद्यालय प्राचार्य जगदीश प्रसाद बैरवा ने बताया कि इच्छुक विद्यार्थी विभागीय बेवसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन भरने की अंतिम तिथि 2 जून है। वहीं प्रवेश परीक्षा 9 जून को आयोजित होगी।

10 दिवसीय एनसीसी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कल से

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) कस्बे के राजकीय महाविद्यालय में राज आमर्ड स्कवाडन केडिट कोर, अलवर का 10 दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर कैम्प कमांडेंट कर्नल राहुल शर्मा के कुशल निर्देशन में आयोजित किया जाएगा। यह प्रशिक्षण शिविर 22 से 31 मई तक आयोजित होगा। कैम्प में विभिन्न महाविद्यालयों व विद्यालयों के लगभग 500 एनसीसी कैडेट्स प्रतिभागी कर रहे हैं। एनसीसी कर्नल राहुल शर्मा ने बताया कि शिविर में कैडेट्स को योग ड्रिल, हथियार चलाने का प्रशिक्षण, बेसिक मिलिट्री ट्रेनिग, खेलकूद, नृत्य, प्राथमिक चिकित्सा, मैप रीडिंग, आपदा प्रबंधन समेत अन्य प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों से व्याख्यान भी करवाया जाएगा। वहीं शाम के समय सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। जिसमें कैडेट्स खेल एवं कला क्षेत्र में प्रदर्शन करेंगे। कैंप में कैडेट्स को एकता और अनुशासन का पाठ पढ़ाया जायेगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए सामूहिक चर्चाएं भी कराई जायेगी। विशेष रूप से जल सेना, वायु सेना तथा थल सेना में अग्निवीर तथा अधिकारी बनने की प्रक्रिया भी समझायी जायेगी। इस शिविर में शामिल कैडेट्स को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से ट्रैनिंग दी जायेगी। इसमें कैडेट्स को भी यह बताया जाएगा कि नेशनल कैडेट कोर में मिलने वाले प्रशिक्षण से युवा कैसे देश की रक्षा के क्षेत्र में कैरियर बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि सभी गतिविधियां सुबह के समय होगी। प्राचार्य डॉ के एल मीना ने बताया कि एनसीसी कैंप को लेकर सम्पूर्ण तैयारियां पूरी कर ली गयी है। यहां एनसीसी कैडेट्स के आवास एवं भोजन के अलावा कैडेट्स को ट्रेनिंग देने और विभिन्न खेल प्रकार की स्पर्धा के लिए टैंण्ट एवं मैदान तैयार किया गया।

सहस्त्रबाहु सोमवंशी वेलफेयर सोसायटी की बैठक हुई आयोजित

समाज के विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जयपुर स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर परिसर में श्री सहस्रबाहु सोमवंशी वेलफेयर सोसायटी राजस्थान की बैठक आयोजित की गई। भगवान सहस्रबाहु अर्जुन की फोटो पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित करने के बाद मीटिंग का शुभारंभ हुआ। बैठक में पधारे हुये सभी स्वजातीय बंधुओं का संस्था के अध्यक्ष राम चरण सोमवंशी, महामंत्री ओम प्रकाश जायसवाल (दूरदर्शन) कोषाध्यक्ष किशोर सेठी ने माला एवं दुपटटा पहनाकर स्वागत किया। वहीं संस्था की महिला प्रतिनिधि गीता सोमवंशी एवं मधु सेठी ने पधारी हुई स्वजातीय महिलाओं का माला एवं दुपटटा पहनाकर स्वागत किया सोसायटी के अध्यक्ष राम चरण सोमवंशी ने अपने उदबोधन में मीटिंग में पधारे सभी स्वजातीय बंधुओं का अभिनंदन एवं स्वागत किया। सोमवंशी ने कहा कि सोसायटी का मूल उद्देश्य समाज के हर वर्ग को साथ लेकर, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में सहयोग करना है। हमें समाज की गौरवशाली परम्परा, संस्कृति और इतिहास की जानकारी भावी पीढ़ी को देनी चाहिए। उन्होंने जाति आधारित जनगणना में सरकारी रिकॉर्ड में जाति के कालम में कलाल लिखने का अनुरोध किया सोसायटी के महामंत्री ओम प्रकाश जायसवाल (दूरदर्शन) ने बैठक में पधारे सभी स्वजातीय

बंधुओं का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि समाज की प्रगति, एकता और कल्याण के लिए साझा दृष्टिकोण और योजनाओं पर चर्चा की जानी चाहिए।

मीटिंग में जाति आधारित जनगणना में जाति के कालम में सिर्फ कलाल लिखने, सहस्त्रबाहु जयंती पर शोभा यात्रा निकालने, राज्य सरकार से रियायत दर पर भूमि आवंटित करने हेतु पत्रावली तैयार करने, गरीब विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने, कौशल विकास कार्यक्रम/रोजगार सर्जन एवं हर साल होली/दीपावली मिलन समारोह आयोजित करने पर भी चर्चा हुई।

संस्था के कोषाध्यक्ष किशोर सेठी ने कहा कि सोसायटी को ओर सक्रिय करने के लिए महिला एवं युवा विंग का शीघ्र गठन किया जायेगा। समाज सेवा को समर्पित इच्छुक स्वजातीय बंधु सम्पर्क कर सकते हैं सोसायटी की संरक्षक सुनीता मावर पार्षद ने जाति आधारित जनगणना पर प्रकाश डालते हुए जनगणना के समय सरकारी रिकॉर्ड में जाति के कालम में सिर्फ कलाल लिखने की अपील की ताकि हमारी जाति का सरकारी रिकॉर्ड में अपडेट आंकड़े इकटठे हो सके वरिष्ठ समाजसेवी एवं भामाशाह शिवचरण हाड़ा ने अपने उद्बोधन में जातिगत जनगणना के मुद्दे पर देश में चल रही चर्चाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हम कल्चुरी वंशज है और जनगणना के समय हमें जाति के कालम में कलाल लिखना चाहिए।

भगवान सहस्रबाहु अर्जुन जयंती पर शोभायात्रा निकालने के मुद्दे पर अन्य सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने इस पर बाद में चर्चा करने का निर्णय लिया पूर्व विधायक प्रकाश चौधरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए राज्य सरकार द्वारा रियायत दर पर जमीन लेने के लिए हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया जरूरतमंद विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने के मुद्दे पर जायसवाल वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष गोविन्द नारायण ने बताया कि जो मेधावी छात्र हैं एवं उनके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हैं उनको कापी, किताब, बैग एवं अन्य सामग्री हमारी संस्था उपलब्ध करवाती है।

हर साल होली एवं दीपावली मिलन समारोह आयोजन पर राजस्थान हैहयवंशी कलाल महासभा के महामंत्री उत्तम चंद चौधरी ने बताया कि ये कार्यक्रम महासभा छात्रावास भवन पर आयोजित होते हैं तो उन्हें नि-शुल्क स्थान पूर्व में भी उपलब्ध करवाया जाता रहा है एवं भविष्य में भी उपलब्ध करवाया जायेगा। बैठक में मनीषा सुवालका ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

बैठक हरिबाबू माहुर, पूनम गुप्ता, गीता सोमवंशी, विजय कटारा, कंचन हाड़ा, गोविन्द जायसवाल, कमल किशोर जायसवाल, के.एन.गुप्ता, राजेन्द्र सेठी, वेद प्रकाश लालसोट, लोकेश जायसवाल, सुरेन्द्र सिंह, राजपाल सिंह, राम अवतार, वेद प्रकाश जायसवाल, ललित जायसवाल, विजय शंकर, धर्म सिंह, डा.रामअवतार, सुनील साईवाल, त्रिलोक हाड़ा, एन.आर.माहुर, विनोद जायसवाल, राकेश सेठी, निधि सुवालका, कृष्ण गुप्ता, मधु सेठी, मीतू हाड़ा, मीनू गोपालिया, सुनीता गोपालिया, अमित हाड़ा, प्रकाश हाड़ा, महेश, नवल सेठी सहित बड़ी संख्या में स्वजातीय बंधु उपस्थित रहे।

कल होगा वर्चुअल लोकार्पण

अपर मंडल रेल प्रबंधक ने रेलवे स्टेशन का किया निरीक्षण

विभिन्न मांगों के लिए नगरपालिका व राजगढ़ विकास मंच ने सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) कस्बे के रेलवे स्टेशन का मंगलवार को रेलवे के आला अधिकारियो ने निरीक्षण किया। गौरतलब है की राजगढ़ स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना मे शामिल करते हुए 13 करोड़ रूपये की लागत से पुनर्विकास किया गया है। जिससे आधुनिकता की झलक देखने को मिलती है। रेलवे के एडीआरएम संजीव दीक्षित ने बताया की पुराने स्टेशन भवन मे पर्याप्त स्थान की कमी थी और यात्री सुविधाओं को विकसित करने मे कठिनाई हो रही थी, यात्री सुविधाओं मे विस्तार करने हेतु स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना मे शामिल करते हुए पुनर्विकास किया गया है। जिसमे नए भवन का निर्माण, प्रवेश व निकास द्वार, प्लेटफार्म शेल्टर, वेटिंग हाल, कोच इण्डिकेशन, 12 मीटर चौड़ा पुल सहित विभिन्न विकास किया गया है। इस दौरान अपर मंडल रेल प्रबंधक संजीव दीक्षित ने अधिकारियों के साथ राजगढ़ रेलवे स्टेशन का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं को देखा।

रेलवे स्टेशन का कल होगा वर्चुअल लोकार्पण

राजगढ़ रेलवे स्टेशन का 13 करोड़ रुपए की लागत से पुर्नविकास किया गया है। 22 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजस्थान के बीकानेर के पलाना से 103 रेलवे स्टेशनों का वर्चुअल लोकार्पण करेंगे। मंगलवार को रेलवे अधिकारी लोकार्पण की तैयारियों का जायजा लेने राजगढ़ आये थे।

राजगढ़ विकास मंच व नगरपालिका मंडल ने सौंपा ज्ञापन

वही राजगढ़ विकास मंच व नगरपालिका मंडल के द्वारा विभिन्न मांगों के ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें राजगढ़ रेलवे फाटक संख्या 140 पर ओवरब्रिज बनाने व स्टेशन पर मंडोर व इलाहाबाद प्रयागराज एक्सप्रेस गाड़ियों के ठहराव तथा बांदिकुई-दिल्ली डीएमयू का पुनः संचालन की माँग की गयी इस मौके पर राजगढ़ विकास मंच के अनिल गुप्ता, नगरपालिका अध्यक्ष सतीश दुहारिया, राजेन्द्र जैन, दीपक, राजेंद्र, संजय सहित रेलवे के अधिकारी मौजूद रहे।

ख्यातिनाम सानिया हॉस्पिटल में अब मधुमेह एवं हार्मोन रोग विशेषज्ञ और न्यूरो फिजिशियन की सेवाएं भी मिलेंगी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। शहर के एनईबी थाना क्षेत्र स्थित ख्यातिनाम सानिया हॉस्पिटल में मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अस्पताल में सभी विभागों के विशेषज्ञ की सेवाएं उपलब्ध हैं, जिसमें हर रोग के विशेषज्ञ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हैं। अब सानिया हॉस्पिटल में नए डॉक्टर्स के जुडने् से मरीजों को और भी बेहतर सेवाएं मिल सकेंगी। सानिया हॉस्पिटल के प्रबन्ध संचालक डॉ. तैय्यब खान ने बताया कि अस्पताल में अब दो ओर नए डॉक्टर्स जुड़ गए हैं, जिनमें एक मधुमेह एवं हार्मोन रोग विशेषज्ञ तो दूसरे न्यूरो फिजिशियन हैं। ये नए चिकित्सक डॉ. विपिन सिंघल व डॉ. पुरुषोत्तम पोषवाल हैं। डॉ. विपिन सिंघल ने बताया कि मधुमेह और हार्मोन से संबंधित बीमारियों का निदान और उपचार करना उनकी विशेषज्ञता है। उन्होंने कहा कि सानिया हॉस्पिटल में मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। डॉ. सिंघल ने आगे बताया कि मधुमेह के मरीजों को नियमित जांच और उपचार की आवश्यकता होती है, और सानिया हॉस्पिटल में मरीजों को इस तरह की सेवाएं प्रदान की जाएंगी। डॉ. पुरुषोत्तम पोषवाल ने बताया कि न्यूरो फिजिशियन के रूप में उनकी विशेषज्ञता मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र से संबंधित बीमारियों का निदान और उपचार करना है। उन्होंने कहा कि सानिया हॉस्पिटल में मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जाएगी। डॉ. पोषवाल ने आगे बताया कि मिर्गी, लकवा, कमर दर्द जैसी समस्याओं का निदान और उपचार करने में उनकी विशेषता रहेगी है।

एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता को मिला लायंस इंटरनेशनल लीडरशिप अवार्ड 'गोल्ड मैडल'

लायंस क्लब इंटरनेशनल से मिले अवार्ड पर अलवर में छायी खुशी, सभी ने दी बधाई

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस्ं.)। देश हित एवं प्रांत हित के संदर्भ में न्यूट्रल आब्जर्वर पूर्व अंतरराष्ट्रीय निदेशक आर.मथनागोपाल से वचार-विमर्श के बाद 10 एवं 11 मई को जयपुर के बिरला आडिटोरियम में 'लायनकॉन शिखर 2025 का आयोजन 19, 20 मई को भरतपुर के होटल दा ग्रांड बरसो में आयोजित किया गया। जहां एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता को मिला लायंस इंटरनेशनल लीडरशिप अवार्ड 'गोल्ड मैडल' से नवाजा गया। जिसकी सूचना पर अलवरवासियों ने उन्हें शुभकामनाएं भी दी। लायंस क्लब अलवर मत्स्य के सीनियर लायन मे बर एम.जे.एफ. लायन डॉ. एस.सी.मित्तल ने बताया कि कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पी.एम.जे.एफ. लायन सुनील अरोडा की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि के रूप में लायन जे.पी.सिंह इंटरनेशनल डायरेक्टर 2018-21, मुख्य वक्ता के रूप में लायन डॉ. विनोद कुमार लाडिया इंटरनेशनल डायरेक्टर 2021-23, न्यूट्रल आब्जर्वर पूर्व अंतरराष्ट्रीय निदेशक आर.मथनागोपाल 2022-24 कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रथम दिन रजिस्ट्रेशन एवं किट वितरण, इनौगुरल सेशन, सभी अतिथियों का स्वागत, सभी अतिथियों के उद्बोधन, क्रेडेंशियल डिस्ट्रीब्यूशन, तथा अवार्ड सरेमोनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लायंस क्लब अलवर मत्स्य के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में रीजन 2 सांवरियाँ के रीजन चेयरपर्सन एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता को लायंस क्लब इंटरनेशनल से आये हुए लायंस इंटरनेशनल लीडरशिप अवार्ड- गोल्ड मैडल से नवाजा गया। लायन जे.पी.सिंह - इंटरनेशनल डायरेक्टर, लायन डॉ. विनोद कुमार लाडिया इंटरनेशनल डायरेक्टर, न्यूट्रल आब्जर्वर पूर्व अंतरराष्ट्रीय निदेशक आर. मथनागोपाल, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पी.एम.जे.एफ. लायन सुनील अरोडा, पूर्व प्रान्तपाल एम.जे.एफ. लायन सुनील गोयल, पूर्व प्रान्तपाल एम.जे.एफ. लायन अशोक ठाकुर द्वारा प्रदान किया गया। यह मैडल लायन गिरीश गुप्ता द्वारा मानव सेवा में तत्पर एवं विभिन्न गतिविधियों जैसे 72 बार स्वेच्छिक रक्तदान, सफाई अभियान, वृक्षारोपण, फू ड फॉर हंगर कार्यक्रमों को आयोजित करके लायंस इंटरनेशनल में बेहतरीन लायन लीडर की भूमिका अदा करने हेतु यह सम्मान दिया गया। यह जानकारी एमजेएफ लायन सुधा अग्रवाल सचिव ने दी।

पेपर कवर, लिफाफे और फाइल बनाने के 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बूंटोली, लक्ष्मणगढ़ में पेपर कवर, लिफाफे और फाइल बनाने के 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रमेश मीणा सीनियर मैनेजर जिला अग्रणी कार्यालय और संस्था निदेशक जे पी मीणा रहे। संस्था निदेशक जे पी मीणा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बूंटोली गाँव की 35 महिलाओ ने भाग लिया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता आरसेटी निदेशक जे पी मीणा ने की। मुख्य अतिथि रमेश मीणा ने महिलाओ को सम्बोधित कर उनका मार्गदर्शन किया उन्होंने कहा आज महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं व उन्होंने सभी के उज्जवल भविष्य की कामना की। निदेशक जे पी मीणा ने बताया की महिला सशक्तिकरण एवं गरीबी उन्मूलन में आरसेटी का अहम योगदान रहा है संकाय सदस्य रेणु जैन ने महिलाओ को स्वरोजगार कर अपनी आजीविका को ओर बेहतर बनाने के बारे में जानकारी दी।

जिला कलक्टर ने पेट्रोल पंप पर करवाया औचक मॉकड्रिल

6 मिनट में पहुंचे जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक

खैरथल-तिजारा(निसं.)।। आपातकालीन स्थितियों से निपटने की तैयारियों को परखने के लिए मंगलवार को खैरथल एवं किशनगढ़

रोड के बीच स्थित एक पेट्रोल पंप पर जिला प्रशासन द्वारा औचक मॉकड्रिल की गई। मॉकड्रिल के तहत आग लगने की सूचना जिला कलेक्टर किशोर कुमार द्वारा जिला सचिवालय कंट्रोल रूम से सुबह 11.20 बजे दी गई। सूचना मिलते ही प्रशासनिक तंत्र हरकत में आ गया। केवल 6 मिनट में जिला कलेक्टर किशोर कुमार एवं पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार मौके पर पहुंच गए। साथ ही, अन्य विभागों की त्वरित कार्रवाई का आंकलन भी किया गया। सूचना मिलने के पश्चात पेट्रोल पंप पर एंबुलेंस को 11.26 पर सूचना 11.30 पर पहुंच, पुलिस विभाग के सभी अधिकारी 11.20 से 11.23 पर सूचना 11.26 से 11.32 तक पहुंच, दमकल को 11.23 पर सूचना 11.28 पर पहुंच, चिकित्सा को 11.23 पर सूचना 11.35 तक स्टाफ पहुंचा। प्रशासन की इस तत्परता और समन्वय को देखकर जिला कलेक्टर ने सभी विभागों की सराहना की। उन्होंने कहा कि आपात स्थिति में समयबद्ध प्रतिक्रिया जीवन रक्षक सिद्ध हो सकती है, और यह मॉकड्रिल इसी तैयारी की एक कड़ी है। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक खैरथल रतनलाल भार्गव, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, एएसपी राजेंद्र कुमार, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

नई दिल्ली में कृषि सम्मेलन आयोजित, केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने किया संबोधित

'खरीफ फसलों के लिए कृषि परामर्श' पुस्तक का विमोचन, किसानों की समृद्धि पर दिया जोर

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली/किशनगढ़ सोमवार को नई दिल्ली स्थित पूसा परिसर में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ह्रष्ट्र) संस्थानों के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित हुआ। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने सहभागिता की। केंद्रीय राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार किसानों की समृद्धि के लिए सतत प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि खेती को लाभकारी बनाने के लिए कृषि शिक्षा और विस्तार की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने भाषण में उन्होंने खाद्य सुरक्षा, प्रति हेक्टेयर उत्पादकता, कृषि यंत्रीकरण, प्राकृतिक खेती, सौर ऊर्जा आधारित संरक्षण तकनीकों और किसानों की आय में वृद्धि जैसे विषयों पर जोर दिया। मंत्री ने कहा कि 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' विज्ञान को किसानों से जोड़ने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है। जैविक खेती और नई तकनीकों का उपयोग भविष्य की सतत और समृद्ध कृषि के लिए अनिवार्य है। सम्मेलन के दौरान 'खरीफ फसलों के लिए कृषि परामर्श' नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक का विमोचन भी किया गया, जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित है। इस अवसर पर पूसा परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। मंत्री चौधरी ने सभी कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों से आह्वान किया कि वे अपनी भूमिका को और प्रभावी बनाएं ताकि किसानों तक नवाचार और अनुसंधान का सीधा लाभ पहुंचे।

22 मई को होगा रोजगार सहायता शिविर का आयोजन

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बनीपार्क में होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उप प्रादेशिक रोजगार कार्यालय जयपुर द्वारा करियर मार्गदर्शन एवं रोजगार सहायता शिविर का आयोजन दिनांक 22 मई 2025 को प्रातः 10 बजे से बनीपार्क स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में किया जाएगा। उप प्रादेशिक रोजगार कार्यालय की उपनिदेशक श्रीमती नवरेखा शिविर में निर्माण, लॉजिस्टिक, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मा, सिक्योरिटी, कॉल सेन्टर, बीमा आदि क्षेत्रों से संबंधित लगभग 30 निजी नियोजक मौके पर ही युवा आशार्थियों का साक्षात्कार के पश्चात् प्राथमिक चयन कर लाभान्वित करेंगें। उन्होंने बताया कि विभिन्न सरकारी विभाग शिविर में भाग ले कर अपनी विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान कर आशार्थियों को लाभांवित करेगें। शिविर में ज्यादा से ज्यादा युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उप प्रादेशिक रोजगार कार्यालय जयपुर द्वारा एक क्यूआर कोड जारी किया गया है जिसके जरिये युवा शिविर के लिए अपना पंजीयन करवा सकेंगे। उन्होंने बताया कि माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा, आईटीआई पॉलिटेक्निक आदि सभी योग्यताधारी रोजगार के इच्छुक बेरोजगार युवाओं हेतु इस रोजगार सहायता शिविर में रिक्तियाँ है, अतः सभी योग्यताधारी आशार्थी अपने शैक्षणिक प्रमाण पत्रों की मूल व छाया प्रति के साथ उक्त रोजगार मेले का लाभ उठायें।

7 प्रतिष्ठानों से लिए गए सैंपल पाए गए अनसेफ

मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट जयपुर प्रथम/द्वितीय में प्रस्तुत किये गए प्रकरण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रवि सिंह शेखावत ने बताया कि आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण राजस्थान के निर्देशानुसार लिये गये खाद्य पदार्थों के नमूनों में से अनसेफ पाये गये प्रकरणों में निम्न फर्मों रस्तोगी सेल्स प्राइवेट लिमिटेड जयपुर का एमडीएच गरम मसाला, श्याम धणी इंडस्ट्रीज जयपुर का श्याम धणी गरम मसाला, लक्ष्मी स्वीट्स केटर्स सुभाष चौक जयपुर की नमकीन,पेट पूजा होटल महादेव बनीपार्क जयपुर की ग्रेवी, अमरलाल स्वीट्स केटर्स जयपुर के लडडू,लक्ष्मी जोधपुर मिष्ठान भंडार, स्वेज फार्म जयपुर के लड्डू, मोहम्मदी पैलेस चांदपोल जयपुर की ग्रेवी, चिकन चंगेजी एवं काली मिर्च, के विरुद्ध प्रकरण मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट जयपुर प्रथम/द्वितीय में प्रस्तुत किये जा चुके है।

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह सम्पन्न, राज्यपाल ने शोध और समय पर डिग्री वितरण पर दिया जोर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह मंगलवार को बिड़ला सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने विद्यार्थियों को समय पर डिग्री देने पर बल देते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों में उसी वर्ष दीक्षांत समारोह आयोजित हो, जिस वर्ष विद्यार्थी की शिक्षा पूर्ण हो। राज्यपाल ने चिकित्सा शिक्षा में मौलिक शोध व अनुसंधान को बढ़ावा देने की बात कही और कहा कि विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता विकसित हो, ताकि समाज को प्रतिभाशाली डॉक्टर मिल सकें। उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए नालंदा विश्वविद्यालय, आयुर्वेद, भास्कराचार्य और आर्यभट्ट के योगदान की सराहना की। इस अवसर पर उन्होंने "नेशनल अकादमिक डिपोजिटरी पोर्टल" का डिजिटल शुभारंभ किया, जिससे विश्वविद्यालय के योग्य अभ्यर्थियों के शैक्षणिक रिकॉर्ड डिजिटली सुरक्षित रहेंगे। राज्यपाल ने डॉ. विश्व मोहन कटोच को बायोमेडिकल रिसर्च में योगदान के लिए "डॉक्टर ऑफ साइंस (मेडिसिन)" की मानद उपाधि प्रदान की। समारोह में मेडिसिन, दंत, फार्मेसी, नर्सिंग, फिजियोथैरेपी, ऑक्यूपेशनल व पैरामेडिकल संकायों के विद्यार्थियों को पदक व उपाधियां प्रदान की गईं। इस अवसर पर पीएसआरआई हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. के.के. तलवार ने दीक्षांत व्याख्यान दिया। कुलपति प्रो. प्रमोद येवले ने विश्वविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

खेत में खेलते समय मिट्टी में दबा मासूम, मौत

पोखरण

खेत में खेलते समय ढाई साल का मासूम गड्ढे में गिरा, जिसके बाद मिट्टी ढहने से नीचे दब गया। परिजन पूरे दिन उसे खेत व आसपास में तलाशते रहे। संदेश होने पर जब ट्रैक्टर से मिट्टी हटाई गई तो रात में बच्चे का शव मिला। घटना पोकरण क्षेत्र के फलसुंड थाना अंतर्गत बांधेवा के देवपालपुरा गांव में सोमवार को हुई। फलसुंड थानाधिकारी सुमेरदान ने बताया कि सादाराम का ढाई साल का बेटा मोटाराम सोमवार सुबह अपने परिजनों के साथ खेत में गया था। परिजन ट्रैक्टर से खेत की जुताई कर रहे थे, वहीं मासूम खेत में खेल रहा था। दोपहर के समय खेलते-खेलते वह खेत में बने एक गड्ढे में जा गिरा और ऊपर से मिट्टी खिसकने के कारण वह दब गया। परिजनों को हादसे की भनक तक नहीं लगी। काफी देर तक जब बच्चा नजर नहीं आया, तो उसकी तलाश शुरू की गई। संदेह होने पर आसपास की मिट्टी हटाने का प्रयास किया गया

SC/ST युवाओं के लिए निःशुल्क एक वर्षीय कोचिंग और कंप्यूटर प्रशिक्षण, आवेदन 31 मई तक

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के 12वीं पास युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर सामने आया है। भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले नेशनल करियर सर्विस सेंटर, जयपुर द्वारा निशुल्क एक वर्षीय स्पेशल कोचिंग स्कीम और कंप्यूटर ओ लेवल सॉफ्टवेयर तथा कंप्यूटर हार्डवेयर मेंटिनेंस प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इस योजना के तहत सरकारी नौकरी की तैयारी के साथ-साथ आशुलिपि का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। NIELIT के माध्यम से कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान कक्षा में 80% या अधिक उपस्थिति पर छात्रों को 1000 रुपये प्रतिमाह वजीफा और निशुल्क स्टेशनरी भी दी जाएगी। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम 1 जुलाई 2025 से शुरू होंगे और सभी कक्षाएं जयपुर में आयोजित की जाएंगी।

आयु सीमा

स्पेशल कोचिंग स्कीम के लिए 18 से 27 वर्ष
ओ लेवल और CHM प्रशिक्षण के लिए 18 से 30 वर्ष

आवेदन की अंतिम तिथि 31 मई 2025 है। इच्छुक उम्मीदवार 10वीं व 12वीं की मार्कशीट, रोजगार पंजीयन कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, 4 पासपोर्ट फोटो और 3 लाख रुपये तक का वार्षिक आय प्रमाण पत्र लेकर कार्यालय में संपर्क करें या ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सोमवार से शुक्रवार सुबह 9.30 से शाम 6.00 बजे तक नेशनल करियर सर्विस सेंटर, ब्लॉक-बी, कमरा नंबर 131-132, इएमआई कैंपस, झालाना, जयपुर में संपर्क करें या 0141-2708915 पर कॉल करें।

धौलपुर जिला प्रशासन ने दी लू और तापघात से सतर्क रहने की अपील

सभी चिकित्सा केंद्रों पर की गई विशेष व्यवस्था, आमजन से सावधानी बरतने का आग्रह

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले में लगातार बढ़ते तापमान और भीषण गर्मी को देखते हुए जिला प्रशासन ने आमजन से लू और तापघात से सतर्क रहने की अपील की है। जिला कलेक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि गर्मी के चलते स्वास्थ्य विभाग को विशेष सतर्कता बरतने और सभी आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर ने बताया कि राज्य सरकार के दिशा-निर्देशानुसार जिले के सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर लू और तापघात से निपटने के लिये पर्याप्त दवाएं, ओआरएस, ड्रिपसेट, जीवन रक्षक घोल सहित अन्य आपातकालीन किट उपलब्ध करवाई गई हैं। साथ ही अस्पतालों में बिजली व शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश भी जारी किए गए हैं। मनरेगा और अन्य श्रमिक स्थलों पर छाया, ठंडा पेयजल एवं प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि श्रमिकों को लू से सुरक्षा मिल सके। स्वास्थ्य विभाग ने लू-तापघात के लक्षणों में सिरदर्द, थकान, अधिक प्यास, जी मिचलाना, बेहोशी, त्वचा का लाल व सूखा हो जाना जैसे लक्षण बताए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार लू का असर शरीर में लवण और जल की कमी से होता है, जिससे शरीर का ताप नियंत्रक तंत्र प्रभावित होता है। ऐसे में रोगी को तुरंत छायादार स्थान पर ले जाकर ढीले कपड़े पहनाएं और होश में होने पर ठंडे पेय पदार्थ, आमपना या ओआरएस दिया जाए। स्थिति गंभीर होने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाएं या 108 एंबुलेंस सेवा का उपयोग करें। जिला प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि अत्यधिक गर्मी में अनावश्यक बाहर न निकलें, हल्के व ढीले कपड़े पहनें और पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करें।

नशा मुक्त जयपुर अभियान के तहत अंतर्विभागीय जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में मंगलवार को वैशाली नगर स्थित एक निजी होटल में नशा मुक्त जयपुर अभियान के तहत अंतर्विभागीय जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यवाहक मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जयपुर द्वितीय डॉ. मनीष मित्तल ने बताया कि कार्यशाला में पुलिस अधीक्षक श्री सत्यवीर सिंह ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए सबके सामूहिक सहयोग से समाज को नशा मुक्त करने की बात कही। कार्यशाला में जिला परिषद, जीसीटीसीएसएल, आईसीडीएस, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग, नेहरू युवा केन्द्र, शिक्षा विभाग, आरएसआरसीटी विभाग, पुलिस उपायुक्त (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ग्रामीण एवं ट्रैफिक), डिप्टी सीएमएचओ प्रथम डॉ. इन्द्रा गुप्ता, डिप्टी सीएमएचओ, द्वितीय डॉ. सुरेन्द्र कुमार गोयल, डीपीओ (एनटीसीपी) डॉ. योगेश पूनिया व अर्पित भारद्वाज, औषधि नियंत्रक, खाद्य सुरक्षा अधिकारी (जयपुर प्रथम व द्वितीय) उपस्थित रहे। कार्यशाला में समाज मे पांव पसारती नशे की लत पर लगाम लगाने के संबंध में व्यापक विचार विमर्श हुआ। चिकित्सा विभाग समेत सभी विभागों के अधिकारियों ने विभिन्न प्रकार के नशों से युवा पीढ़ी को बचाने संबंधी मंथन किया। कार्यशाला में स्टेट कंसल्टेंट नरेन्द्र सिंह ने बताया कि सन 2025 में तम्बाकू उपभोग में 30 प्रतिशत की कमी का लक्ष्य रखा गया है। राजस्थान में 1.36 करोड़ व्यक्ति तम्बाकू का सेवन करते हैं और इसमे 41 लाख लोगों की कमी लाए जाने का लक्ष्य है। एसआरकेपीएस के सीईओ श्री राजन चौधरी ने कार्यशाला के उद्देश्य पर सारगर्भित प्रकाश डाला। इसी प्रकार डीसीओ श्रीमती सपना पारीक, डॉ. कशिश थापर (एसएमएस अस्पताल), कपिल शर्मा (एनसीबी), हरीश भूटानी (चेयरमैन, नवविकल्प संस्थान) ने अपने विचार व्यक्त किए। अंत मे सीएमएचओ प्रथम डॉ. रवि शेखावत ने सभी आमंत्रित प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीजफायर पर अमेरिका की घोषणा अप्रत्याशितः सचिन पायलट

सेना के पराक्रम पर देश को गर्व, प्रधानमंत्री से राजस्थान के लिए ठोस कार्यवाही की मांग

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) ।कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने भारत-पाकिस्तान के बीच हाल ही में घोषित सीजफायर को लेकर केन्द्र सरकार पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा कि इस समझौते की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा किया जाना अत्यंत अप्रत्याशित है। पायलट ने केन्द्र से स्पष्टीकरण मांगा कि किन आधारों पर पाकिस्तान के साथ यह सहमति बनी और किन आश्वासनों के तहत भारत ने यह कदम उठाया। पायलट ने आशंका जताई कि जिस देश ने कुछ ही घंटों में सीजफायर का उल्लंघन कर दिया, उस पर भविष्य में भरोसा कैसे किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ह्वरूद्वारा पाकिस्तान को बड़ा ऋण और अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ने की चर्चाओं के बीच यह चिंता और भी गहरी हो जाती है कि कहीं पाकिस्तान इसका दुरुपयोग भारत के खिलाफ आतंकवाद फैलाने में न करे। उन्होंने कश्मीर को द्विपक्षीय मुद्दा बताते हुए इसके अंतर्राष्ट्रीयकरण को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ पूरा देश एकजुट है और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सेना के अद्भुत पराक्रम पर देश को गर्व है। प्रधानमंत्री के राजस्थान दौरे पर प्रतिक्रिया देते हुए पायलट ने कहा कि प्रधानमंत्री का स्वागत है, परंतु वह पूर्व की तरह सिर्फ घोषणाएं करके न जाएं, बल्कि ईआरसीपी को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने जैसे ठोस कदम उठाएं। भाजपा विधायक कंवरलाल की सदस्यता पर पायलट ने कहा कि कोर्ट के स्पष्ट निर्णय के बावजूद सरकार उन्हें बचा रही है, जबकि राहुल गांधी की सदस्यता बिना ठोस कारण के समाप्त की गई थी। यह भाजपा सरकार का पक्षपातपूर्ण रवैया दर्शाता है।

ट्रांसपोर्ट-कंपनी के ड्राइवर ने चुराया 1.20 करोड़ का घी, बेचने पहुंचा तो सैंपल फेल हुआ, मैनेजर से बोला- एक्सीडेंट हो गया

जयपुर टाइम्स

दौसा(निस.) मिल्क फैक्ट्री का 1 करोड़ 20 लाख की कीमत का 21 हजार किलो घी सप्लाई की जगह बेचने की फिराक में निकले ट्रक ड्राइवर सहित उसके 4 साथियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पूछताछ में सामने आया कि ये एक फैक्ट्री में घी का सौदा कर चुके थे। लेकिन, फैक्ट्री मालिक ने घी का सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा था। इसमें सैंपल फेल हुआ तो डील नहीं हो सकी। इसके बाद बेचने की फिराक में घूमते हुए आरोपियों को पुलिस ने पकड़ लिया। इनके पास से 1 करोड़ कीमत का घी बरामद किया जा चुका है जबकि 3 टन घी को लेकर पूछताछ जारी है।

मामला दौसा के मामला दौसा जिले के महवा थाना इलाके की दाऊजी मिल्क फूड प्राइवेट लिमिटेड, टिकरी, जाफरान का है। महवा थाना इंचार्ज राजेंद्र कुमार ने बताया- मामले में मास्टरमाइंड मध्य प्रदेश के आगरा निवासी संजय मालवीय, उज्जैन निवासी योगेंद्र देव पांडे, धार जिले के सादलपुर निवासी रोहित प्रजापत और मुरैना क्षेत्र के बामोर निवासी पवन बघेल को गिरफ्तार किया है। राजेंद्र कुमार ने बताया- रिपोर्ट 15 मई को दाऊजी मिल्क फैक्ट्री का मैनेजर अशोक कुमार ने दर्ज करवाई थी। इसमें बताया- 11 मई को योगेंद्र देव पांडे ट्रेवलिंग एजेंसी से ट्रक बुक किया था। 11 की रात को सवा 9 बजे 21850 किलो घी लेकर अहमदनगर (महाराष्ट्र) के लिए रवाना हुआ था। घी की कीमत 1 करोड़ 20 लाख रुपए थी। इसकी डिलीवरी अहमदनगर में सनफ्रेश एग्रो इंडस्ट्रीज को करनी थी। रिपोर्ट में बताया- 15 मई की सुबह तक भी घी की डिलीवरी नहीं हुई तो ट्रक ड्राइवर संजय मालवीय को फोन किया। उसने बताया कि ट्रक का एक्सीडेंट हो गया है और सारा घी सड़क पर बिखर गया। जानकारी पुख्ता करने के लिए ट्रक मालिक योगेंद्र देव पांडे को कॉल किया तो उन्होंने ट्रक के एक्सीडेंट के संबंध में कोई जानकारी नहीं होना बताया।

स्थानीयता है कुंजी

जलवायु परिवर्तन, भूख, कुपोषण, बढ़ती गरीबी, घटते संसाधन, ये सभी ऐसी समस्याएं हैं जिनसे आज सारी दुनिया जूझ रही है। अरबों रुपए इन समस्याओं के हल के लिए अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों पर खर्च किए जा चुके हैं। आगे भी किए जाएंगे। पर हल तब भी शायद ही निकले। तो क्या किया जाए? गांधी-विचारों में रची-बसी, स्वाश्रयी महिला सेवा संघ (सेवा), अमदाबाद की संस्थापक और गुजरात विद्यापीठ की चांसलर इला भट्ट के अनुसार, इसके लिए हमें वैश्विकता से स्थानीयता पर आना होगा। अभी हो यह रहा है कि हम जो उगाते हैं उसे खाते नहीं और जो खाते हैं उसे उगाते नहीं। हमारा उगाया हुआ कहां जा रहा है, हम नहीं जानते, और जो खा रहे हैं वह कहां से आया है, हमें पता नहीं। जबकि हमारे स्थानीय खाद्यान्न हमारी जलवायु तथा वातावरण के अनुकूल और जैव विविधता लिये होते हैं और इसीलिए स्वास्थ्य व समाज के लिए अधिक उपयोगी होते हैं। उत्पादन के श्रम के बहुविध लाभ भी स्थानीय लोगों को मिलते हैं। उत्पादक व उपभोक्ता दोनों ही एक दूसरे के पूरक और सामुदायिकता के वाहक होते हैं। सामुदायिकता का दायरा मानव तक सीमित न होकर प्रकृति, पर्यावरण, जीव-जगत सभी के विकास को अपने में समेटे हुए और मूल्यों पर आधारित होता है। इसमें किसी एक का विकास किसी दूसरे की कीमत पर नहीं होता बल्कि सभी एक दूसरे को संपोषित व संवर्धित करते हैं। इसे ही वे 'संपोषक अर्थव्यवस्था' का नाम देते हैं।

आज की वैश्विक तथा बहुराष्ट्रीय आधारित अर्थव्यवस्थाएं शोषणव लालच पर आधारित हैं- शोषण मानव श्रम का, संसाधनों का। भारी लाभ की नीयत से इसमें प्राकृतिक संसाधनों का क्रूरता की हद तक दोहन व संचयन किया जाता है और हौवा खड़ा किया जाता है कि धीरे-धीरे सभी प्राकृतिक संसाधन कम हो रहे हैं और एक दिन ऐसा आएगा जब सब नष्ट हो जाएगा। यह बात प्रकृति के सिद्धांतों से कहीं मेल नहीं खाती। प्रकृति में पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता। एक से दूसरा आकार लेता रहता है। ऐसे में हमें ही यह सोचना व देखना होगा कि हम जो काम कर रहे हैं उसका प्रभाव क्या व कहां तक होगा। जब हम यह सोचने लगेंगे तो प्रकृति और अपने आसपास की हर चीज के प्रति संवेदनशील होते जाएंगे।

उदाहरण के लिए, बिसलरी की बोतल को ही लें। इसको हाथ में लेते हुए अगर हम विचार करें कि आखिर पानी हमें खरीद कर क्यों पीना पड़ रहा है, फिर जो पानी पी रहे हैं वह हमारे लिए तो हो सकता है ठीक हो, पर इस पानी को तैयार करने में कितना पानी बेकार हुआ, बेहिसाब प्लास्टिक बोतलों का निर्माण, आरओ के पार्ट्स का कचरा, इन सबसे मिलकर क्या बनता है और क्या वह हमें या हमारी धरती को कहीं नुकसान तो नहीं पहुंचा रहा? यह खयाल आएगा तो शायद हम अपने आसपास के जल संसाधनों की स्वच्छता व सुरक्षा के प्रति गंभीर हो जाएं। गंभीर होने का अर्थ है कि आप स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ रहे हैं और उसके सतत विकास में योगदान कर रहे हैं। यह विकास किसी एक का नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र का व बहुआयामी होगा। इससे पानी सिर्फ हमारे पीने के लिए नहीं, बल्कि खेती, बागवानी और पशु-पक्षी, सभी के लिए होगा। इससे धरती का भंडार खाली नहीं होगा। सहभागिता व सामाजिकता बढ़ेगी।

उदाहरण के लिए, बिसलरी की बोतल को ही लें। इसको हाथ में लेते हुए अगर हम विचार करें कि आखिर पानी हमें खरीद कर क्यों पीना पड़ रहा है, फिर जो पानी पी रहे हैं वह हमारे लिए तो हो सकता है ठीक हो, पर इस पानी को तैयार करने में कितना पानी बेकार हुआ, बेहिसाब प्लास्टिक बोतलों का निर्माण, आरओ के पार्ट्स का कचरा, इन सबसे मिलकर क्या बनता है और क्या वह हमें या हमारी धरती को कहीं नुकसान तो नहीं पहुंचा रहा? यह खयाल आएगा तो शायद हम अपने आसपास के जल संसाधनों की स्वच्छता व सुरक्षा के प्रति गंभीर हो जाएं। गंभीर होने का अर्थ है कि आप स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ रहे हैं और उसके सतत विकास में योगदान कर रहे हैं। यह विकास किसी एक का नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र का व बहुआयामी होगा। इससे पानी सिर्फ हमारे पीने के लिए नहीं, बल्कि खेती, बागवानी और पशु-पक्षी, सभी के लिए होगा। इससे धरती का भंडार खाली नहीं होगा। सहभागिता व सामाजिकता बढ़ेगी।

जाहिर है, स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण हमें स्थिरता देता है। जबकि बोतलबंद पानी बेचने वाली कंपनियां निर्ममता से अपने लाभ के लिए भूजल का दोहन करती हैं और पानी की समस्या को लगातार बढ़ाती चली जाती हैं। इससे कंपनियों के मालिकों को तो पैसा मिल जाता है मगर पानी, खेती व पर्यावरण की समस्या इस हद तक बढ़ जाती है कि रोजगार, खाद्यान्न, स्वास्थ्य हर तरह का संकट जीवन को मुश्किलात से भर देता है और अंतत विस्थापन व अस्थिरता को बढ़ावा देता है। यही बात रासायनिक खाद, कीटनाशक व बीज कंपनियों पर लागू होती है। अपने मुनाफे के लिए वे कई तरह का झूठ फैलाती हैं जबकि हकीकत यह है कि उनसे हमारी जमीन व भूजल तो प्रदूषित हो ही रहे हैं, लाइलाज बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। जबकि वर्मी कंपोस्ट व जैविक खाद से मिट्टी की पोषकता बढ़ती है और फसल की गुणवत्ता व मात्रा में सुधार आता है।

खाद्यान्न असुरक्षा व कुपोषण भी लगातार बढ़ता ही जा रहा है तो इसका एक बड़ा कारण कीटनाशक व रासायनिक खाद भी है। बोतलबंद पानी और कीटनाशक बनाने वाली कंपनियां उस पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रतीक हैं जो दूसरों की कीमत पर अपने हितों का विस्तार करती हैं जबकि स्थानीय स्तर पर जल प्रबंधन तथा भू व मृदा प्रबंधन संपोषक अर्थव्यवस्था का। पहली व्यवस्था प्रकृति व पर्यावरण के प्रतिकूल है और दूसरी व्यवस्था अनुकूल। पहली व्यवस्था में संसाधनों का अधिग्रहण कर उनका निजी हित में संचय किया जाता है, जबकि दूसरी में संसाधनों को संभाला व सहेजा जाता है। पहली व्यवस्था की अंतिम परिणति विनाश, उजाड़, अस्थिरता व विस्थापन है जिससे जलवायु परिवर्तन, भूख, बीमारी व गरीबी जैसी वैश्विक समस्याएं खड़ी होती हैं, जबकि दूसरी व्यवस्था इन समस्याओं को कम करते हुए सतत विकास और स्थिरता को बढ़ावा देती है। उद्यमशीलता व आर्थिक संरचनाओं का निर्माण इस अर्थव्यवस्था के अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। यह उदारवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था की तरह मानव श्रम के शोषण पर नहीं पलती। इसमें हर व्यक्ति खुद श्रम करता है और जितना करता है उसके आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक व सामुदायिक लाभों को देखें तो उसे कई गुना होकर वापस मिलता है। भू प्रबंधन, जल प्रबंधन, खेती, उत्पाद, बीज का प्रबंधन, माल का बाजार प्रबंधन, गांव में अन्य हस्तकौशल आधारित उद्यमों का विकास व प्रबंधन, कौशल को प्रोन्नत करने के लिए सतत प्रशिक्षण, अपनी आय व बचत का प्रबंधन, ये सब वे आर्थिक संरचनाएं हैं जिनकी आज गांवों से शहर तक, हर स्तर पर जरूरत है, पर इन्हें उपर से थोपा नहीं जाना चाहिए।

तकनीक के क्षेत्र में नए ज्ञान के साथ-साथ हमारे परंपरागत हुनर को भी महत्त्व दिया जाना जरूरी है। उसमें विकास की संभावनाओं को तलाशा जाना चाहिए। 'सेवा' संस्था ने ऐसे कई प्रयोग किए भी। मसलन, खेड़ा में पेयजल की समस्या से निपटने के लिए अपनी कार्यकर्ताओं को वर्षा जल संचयन के लिए पानी के टाके बनाने का प्रशिक्षण दिलवाया। उससे कितनी ही महिलाओं को रोजगार तो मिला ही, पेयजल की समस्या भी हल हो गई। पानी लेने के लिए अब उन्हें दूर नहीं जाना पड़ता था, जिससे उनका समय व श्रम बचा, जिसे वे अपने कढ़ाई या बुनकरी के काम में लगाने लगीं। इससे उनका उत्पादन बढ़ा। इन प्रशिक्षणों के लिए वे स्कूली पढ़ाई को जरूरी नहीं मानतीं। अलबत्ता उनका कहना है कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में शुरू से ही हुनर को शामिल किया जाना चाहिए। हमारे यहां आम आदमी के हालात ऐसे नहीं हैं

सम्पादकीय

अगर ठेस पहुंची हो' नहीं चलेगा अब, सुप्रीम कोर्ट ने मंत्री से कहा- ये क्षमा योग्य नहीं

राजनेताओं में यह प्रवृत्ति पिछले कुछ समय से काफी तेजी से पनपी है कि वे सार्वजनिक मंचों से अशोभन, अमर्यादित और भड़काऊ बयान देना अपनी शान समझते हैं। अगर उन पर आपत्ति दर्ज कराई जाती है, तो अक्सर वे उस पर टालमटोल का रुख अख्तियार करते हैं। ज्यादा दबाव बनता है, तो यह कहते हुए वे क्षमा मांग लेते हैं कि अगर उनके बयान से किसी को ठेस पहुंची है, तो वे अपनी बात वापस लेते हैं। मगर सर्वोच्च न्यायालय की सख्ती के बाद शायद राजनेताओं को कुछ सबक मिले। मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री विजय शाह ने कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में जैसी भद्दी टिप्पणी की, उसे लेकर स्वाभाविक ही लोगों में रोष पैदा हुआ। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने उस पर स्वतः संज्ञान लेते हुए मंत्री के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया। पुलिस ने उस पर भी टालमटोल का रवैया अख्तियार किया, जैसा कि रसूखदार लोगों के मामले में वह अक्सर करती है। तब उच्च न्यायालय ने दुबारा सख्त प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया। फिर, मंत्री महोदय ने सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष क्षमा याचना की। मगर सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हें कड़ी फटकार लगाते हुए स्पष्ट कर दिया कि आपका कृत्य क्षमा योग्य नहीं है। इस मामले की जांच के लिए बाहरी राज्य के तीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का एक विशेष कार्यबल गठित करने का आदेश दिया, जिसमें एक महिला अधिकारी भी होगी। न्यायालय इस जांच पर नजदीक से नजर रखेगा।

सर्वोच्च न्यायालय के इस रुख से जाहिर है कि मंत्री के खिलाफ कड़ा फैसला आ सकता है। किसी निष्ठावान सैन्य अधिकारी का संबंध आतंकवादियों से जोड़ना न केवल उसका अपमान करना, बल्कि पूरी सेना का मनोबल गिराने का प्रयास कहा जा सकता है। इस पर स्वाभाविक ही पूरे देश में रोष जाहिर हुआ, मगर विचित्र है कि विजय शाह के बयान के बचाव में भी कुछ लोग उतर आए। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व इस पर अभी तक खामोश है। इससे विपक्षी दलों को बैठे-बिठाए निशाना साधने का मौका मिल गया है। अब तो राजग के कुछ सहयोगी भी इस मामले की कड़ी निंदा करने लगे हैं। कुछ मामले व्यक्तिगत नहीं होते, कि जिन पर पार्टी चुप्पी साध सके। अनेक मामलों में देखा जाता रहा है कि जब भी कोई बड़ा नेता इस तरह अपने किसी बयान के कारण विवादों में घिरता है, तो पार्टी उससे अपने को अलग कर लेती है। मगर विजय शाह के मामले में ऐसा नहीं किया जा सकता। वे एक राज्य सरकार में जिम्मेदार मंत्री पद का निर्वाह कर रहे हैं। अगर विजय शाह के खिलाफ अदालत कोई कड़ा कदम उठाती है, तो इससे पार्टी की किरकिरी और बढ़ेगी ही। इस तरह के बयान देने वाले नेताओं को संरक्षण देकर आखिरकार पार्टियों की साख पर ही धब्बा लगता है। अपने नेताओं को अनुशासन का पाठ पढ़ाना पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का दायित्व होता है। फिर, सवाल मध्यप्रदेश सरकार पर भी उठे ही हैं कि आखिर मुख्यमंत्री किन दबावों में एक विवादित नेता को मंत्री पद पर बरकरार रखे हुए हैं। किसी भी राजनीतिक दल के लिए यह अच्छी बात नहीं मानी जाती कि उसके किसी नेता को अनुशासित करने के लिए अदालत को कदम उठाने पड़ें। इतना कुछ हो जाने के बाद विजय शाह को खुद भी शायद इस बात का अहसास नहीं हो पाया है कि उन्होंने गैरजिम्मेदाराना बयान देकर अपने और पार्टी के लिए मुसीबत खड़ी कर दी है।

संकट में बच्चे

कोबच्चों की यही पीढ़ी देश का भविष्य तय करती है। लेकिन आज हम लगातार देख रहे हैं कि हमारे बच्चे ऐसे संकटों का सामना कर रहे हैं जिससे उनका उज्ज्वल भविष्य खतरे में पड़ता जा रहा है। बाल मन पर जिस तरह से मानसिक विकृति और नकारात्मकता हावी होती जा रही है, उसका नतीजा हिंसक गतिविधियों के रूप में देखने को मिल रहा है।

छोटे-छोटे बच्चे और किशोर जिस तरह से जघन्य अपराधों में लिप्त होते जा रहे हैं, वह गंभीर चिंता का विषय है। जाहिर है, सोशल मीडिया, इंटरनेट और इलेक्ट्रानिक गैजेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल के दुष्प्रभाव हैं ये सब। यही कारण है कि बच्चों में नैतिकता की गिरावट साथ ही आदर्श व्यवहार की कमी बड़े रूप में देखी जा सकती है।

देखा जाए तो इसका एक कारण पश्चिमी संस्कृति का असर भी है जिसने उपभोक्तावाद को तेजी से बढ़ाया है। बच्चे आज जो स्कूली शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उसमें सबसे ज्यादा जोर सिर्फ इसी पर रह गया है कि कैसे भी करके अधिक से अधिक नंबर लाइए, अव्वल आइए और प्रतिस्पर्धा के बाजार में शामिल हो जाइए। भले नैतिक जीवन चौपट हो जाए, इसकी कोई चिंता नहीं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लगातार इस बात पर जोर दिया कि हमारी शिक्षा नैतिकता से युक्त हो, हम ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो केबल अंकीय शिक्षा पर शिक्षित ना होकर वास्तविक रूप से समाज राष्ट्र, विश्व के लिए तैयार हो, जिसमें सेवा भाव, आदर-सम्मान की भावनाएं प्रबल हों। लेकिन इन बच्चों के लिए पहली समस्या बड़े रूप में जो है वह है कि इनका मोबाइलीकरण हो जाना।

अत्यधिक मोबाइल इस्तेमाल से बच्चों में अवसाद और निराशा तेजी बढी है। बच्चे आभासी दुनिया को ही वास्तविक दुनिया समझ बैठे हैं। साथ ही इनको ई-स्पोर्ट के चलते अन्य शारीरिक बीमारियां भी देखने में मिल रही हैं। इसके अलावा इंटरनेट पर फैली अश्लीलता इनके मन मस्तिष्क को को दूषित कर रही है। इसलिए अभिभावकों को ध्यान देना होगा कि बच्चे इंटरनेट और मोबाइल का उपयोग कितना और किस मकसद से कर रहे हैं। अगर समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो समाज के लिए यह किसी आपदा से कम नहीं होगा।

दूसरी समस्या है बच्चों में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति। हुक्का, सिगरेट, शराब, गुटका इत्यादि का सेवन जिस तेजी से बच्चों को अपनी गिरफ्त में ले रहा है, वह खतरनाक है। इससे इनके स्वास्थ्य पर तो प्रभाव पड़ ही रहा है साथ ही इनकी आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक स्थिति पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ापन और हिंसक होना इन्हीं सबका नतीजा है। बच्चों को ऐसे संकटों से बचाना है तो समाज और परिवारों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

पर्यावरण के हक में

प्लास्टिक की थैलियां, बोतलें और डिब्बे अधिकतर घरों में बार-बार धोकर उपयोग में लाए जाते हैं। देश में पॉलिथीन की थैलियों का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। थोड़ी-सी सुविधा के चलते लोग कपड़े से बने थैलों की अपेक्षा पॉलिथीन की थैलियों को ज्यादा उपयोगी समझ रहे हैं और धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं। पूरे विश्व में प्रति मिनट कितना प्लास्टिक कचरा इकट्ठा होता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह तकनीकी जानकारी भी देना उचित नहीं लगता कि कितने माइक्रोन की पॉलिथीन का उपयोग करना चाहिए।

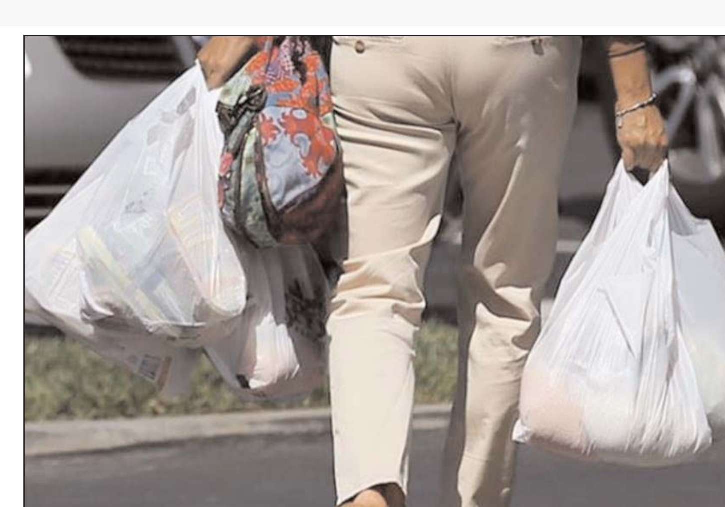

एक साहित्यिक विमर्श के दौरान इस बात पर चर्चा हुई कि सड़क के किनारे पन्नी खाती गाय को देख कर ख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने उसे अपने व्यंग्य में उकेरा है। वह स्थिति आज भी उतनी ही गंभीर बनी हुई है। पन्नियां घटी नहीं, बल्कि बढ़ती ही गईं और आए दिन शहरों में न जाने कितनी ही गायें पन्नियों को खाकर बीमार होती हैं या फिर मर जाती है। आज इसके खिलाफ की जाने वाली तमाम बातों के बावजूद हालत में कितना बदलाव आया है। मेरे दिवंगत पिता पशु चिकित्सक थे। मुझे याद है कि उन्होंने कितनी ही गायों का ऑपरेशन करके पेट से पन्नियों का ढेर निकाले जाने की चर्चा की थी। आश्चर्य है कि गाय को लेकर आम लोग कई बार हमलावर होने की हद तक संवेदनशील होते हैं, लेकिन पन्नी खाकर उनके मरने को लेकर उन्हें कोई फिक्र नहीं होती। अधिकतर लोग बाजार से खरीदारी करने के बाद सामान के लिए पन्नियों का ही उपयोग करते हैं। हर रोज शाम को हाथ हिलाते हुए बिचरने जाते हैं और लौटते वक्त दोनों हाथों की पांचों अंगुलियों में सब्जियों से भरी पन्नियों की थैलियां घर लाते हैं। हमारी परंपरा में चीजों के बारंबार उपयोग में विश्वास है। अक्सर 'यूज एंड थ्रो' यानी 'इस्तेमाल करो और फेंक दो' वाली चीजों का भी हम बार-बार उपयोग करने से नहीं चूकते हैं। प्लास्टिक की थैलियां, बोतलें और डिब्बे अधिकतर घरों में बार-बार धोकर उपयोग में लाए जाते हैं। देश में पॉलिथीन की थैलियों का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। थोड़ी-सी सुविधा के चलते लोग कपड़े से बने थैलों की अपेक्षा पॉलिथीन की थैलियों को ज्यादा उपयोगी समझ रहे हैं और धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं। पूरे विश्व में प्रति मिनट कितना प्लास्टिक कचरा इकट्ठा होता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह तकनीकी जानकारी भी देना उचित नहीं लगता कि कितने माइक्रोन की पॉलिथीन का उपयोग करना चाहिए। दरअसल, उपयोगकर्ता चाहे कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, इतनी निपुणता नहीं रखता कि वह नियत माइक्रोन की पॉलिथीन की बनी थैलियों को चुनाव कर सके। इसलिए प्लास्टिक को पूरी तरह 'न' कहा जाए, इस बात पर जोर दिया जाना ज्यादा जरूरी है। अब इसके व्यापक नुकसानों और पर्यावरण पर घातक असर को देखते हुए राजनीतिकों की ओर से भी इस पर पाबंदी की बातें की जाने लगी हैं, लेकिन सच यह है कि पर्यावरणविद लंबे समय से इस बारे में देश और समाज को चेतावनी देते रहे हैं। अगर वक्त रहते देश के राजनीतिक वर्ग और समाज ने इसके प्रति कोई ठोस संकल्प नहीं लिया, तो आने वाले वक्त में इसका भयावह खमियाजा उठाना पड़ सकता है। कुछ समय पहले एक खबर आई थी कि कचरे के ढेर से अपनी भूख मिटाती गायें अचानक बीमार पड़ गईं। खाना-पीना बंद कर दिया था, उनके पेट बुरी तरह फूल गए थे और फिर कई गायों की तड़प-तड़प कर मौत हो गई थी। गायों का जब पोस्टमार्टम किया गया तो पता चला कि उनकी आहार नलिका पॉलिथीन की थैलियों से बुरी तरह अवरुद्ध हो गई थी। ऑपरेशन से जो थैलियों का कचरा आंत से निकाला गया, उनमें से अधिकतर थैलियों में घरों से फेंका गया अतिरिक्त खाना अब भी सुरक्षित था। ऐसा केवल इसलिए हुआ कि लोग घर लाई गई पॉलिथीन की थैलियों को फेंकने के पहले उनमें घर की अतिरिक्त खाद्य सामग्री, फलों या सब्जियों के छिलके आदि को भर कर रख देते हैं। फिर इसको पोटलीनुमा बना कर फेंक देते हैं। कचरे के ढेर से अपनी भूख मिटाते जानवर इन पोटलियों को साबुत निकल जाते हैं। भारत तीज-त्योहार और उत्सवों का देश है। जगह-जगह मंदिर निर्मित किए गए हैं। इनमें पूजन प्रसाद का वितरण प्लास्टिक की थैलियों, कटोरिया और ग्लासों में किया जाता है। भक्त और दर्शनार्थी इस प्रसाद को श्रद्धापूर्वक ले तो लेते हैं, लेकिन प्रसाद को खाने के बाद लापरवाही से सड़क पर फेंक देते हैं। इनमें बचा हुआ प्रसाद जानवरों को आकर्षित करता है और वे उसे निगल लेते हैं। कमोबेश सभी पर्यटन स्थलों की स्थिति भी ठीक नहीं है। मैं पांच साल मुंबई में पदस्थ था। एक सपना लेकर गया था कि गेटवे ऑफ इंडिया से खूबसूरत नीले समुद्र को निहारूंगा। लेकिन वहां की हालत देख कर सारे सपने टूट गए। मुंबई के अधिकतर समुद्र तट पानी की खाली प्लास्टिक के बोतलों से अटे पड़े थे।

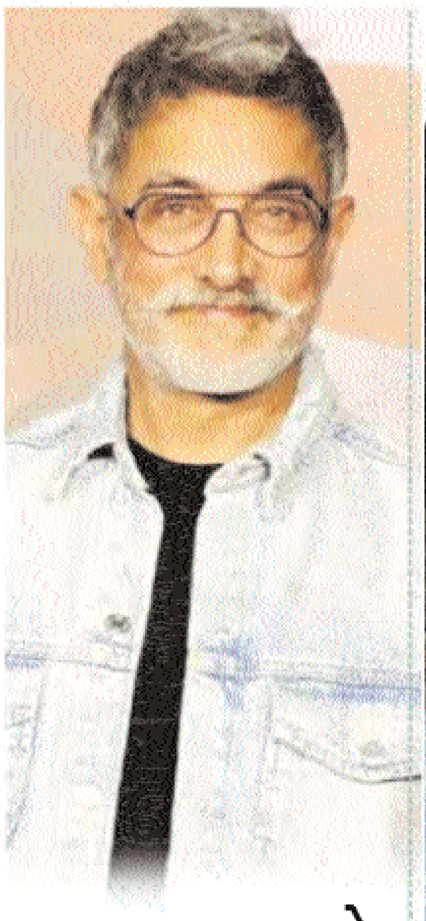

दादा साहब फाल्के की बायोपिक करने जा रहे आमिर खान

दादा साहब फाल्के को भारतीय सिनेमा का पितामह कहा जाता है। उन्होंने ही भारतीय फिल्मों की नींव रखी। तभी उनके नाम पर सिनेमा का सबसे बड़ा पुरस्कार 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' रखा गया। दादा साहब के जीवन और फिल्मों को लेकर उनकी कहानी काफी रोचक है। अब ये कहानी बड़े पर्दे पर भी नजर आएगी। जी हां, सही सुना आपने, दादा साहब फाल्के के ऊपर फिल्म बनने जा रही है। जानिए कौन बनाने जा रहा है ये फिल्म।

आमिर खान और राजू हिरानी की जोड़ी बनाएगी फिल्म

भारतीय सिनेमा और फिल्मों के जनक कहे जाने वाले दादा साहब फाल्के की कहानी अब हर किसी को पता चलेगी। क्योंकि दादा साहब फाल्के के जीवन पर अब फिल्म बनाने की तैयारी है। जिन्होंने भारतीय फिल्मों को लाया, अब उन पर फिल्म लाने का काम करने जा रहे हैं बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट कहे जाने वाले आमिर खान। 'थ्री इडियट्स' और 'पीके' जैसी शानदार ब्लॉकबस्टर फिल्में देने वाली जोड़ी आमिर खान और राजकुमार हिरानी अब दादा साहब फाल्के के जीवन को पर्दे पर उतारने की तैयारी कर रहे हैं। इस जोड़ी के इस फिल्म पर काम करने से लोगों को फिल्म से काफी उम्मीदें बंधने लगी हैं। अक्टूबर में शुरू होगी फिल्म की शूटिंग आजादी की जंग के दौर में बसी ये कहानी एक ऐसे कलाकार की है, जिसने शून्य से शुरुआत कर हर मुश्किल का सामना करते हुए दुनिया की सबसे बड़ी स्वदेशी फिल्म इंडस्ट्री की नींव रखी। जानकारी के मुताबिक, इसी साल अक्टूबर से इस फिल्म की शूटिंग शुरू होगी। आमिर खान अपनी आगामी फिल्म 'सितारे जमीन पर' की रिलीज के तुरंत बाद अपने किरदार की तैयारी में जुट जाएंगे। जबकि फिल्म के दौर और समय को दिखाने का काम वीएफएक्स के जरिए पहले से ही शुरू किया जा चुका है। राजकुमार हिरानी, अभिजात जोशी, हिंदुकुश भारद्वाज और अविष्कार भारद्वाज फिल्म की स्क्रिप्ट पर पिछले चार साल से काम कर रहे हैं। दादा साहब फाल्के के पोते चंद्रशेखर श्रीकृष्ण पुसालकर ने इस प्रोजेक्ट का पूरा समर्थन किया है और दादा साहब फाल्के के जीवन से जुड़ी कई खास बातें और घटनाएं साझा की हैं। आमिर खान और राजकुमार हिरानी के फिल्म के लिए फिर से साथ आने से इस फिल्म के बड़े स्तर पर बनने की उम्मीद है।

पहले सोचा करती थी कि काश मैं उस सुपरस्टार के घर पैदा होती

हिंदी और पंजाबी फिल्मों में नाम कमा चुकी बेहद खूबसूरत वामिका गब्बी बेबी जॉन और 83 जैसी फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। इन दिनों चर्चा में हैं वह अपनी फिल्म भूलचूक माफ को लेकर। इस फिल्म में वह राजकुमार राव के साथ नजर आ रही हैं।

आपने इंडस्ट्री में लंबा समय बिताया है और अब आपको अच्छे मौके भी मिल रहे हैं। आप अपने अब तक के सफर को किस तरह देखती हैं?

मैं इतने समय से इंडस्ट्री में हूं तो इसकी वजह मेरे माता-पिता का साथ है। उन्होंने मुझे हमेशा से बहुत सुरक्षित महसूस कराया है। मेरे पास ऐसे दोस्त थे जो मेरे साथ खड़े थे। इस वजह से मैं अपने सफर में कभी निराश नहीं हुई। मुझे लगता है कि जब आपकी खुद एनर्जी साफ होती है तो आप अच्छे लोगों को अट्रैक्ट करते हैं। जब मैं अपनी जिंदगी में खुद तैयार हो गई थी, तो मुझे लगता है कि मौका खुद मेरे रास्ते पर आ गया था। मुझे नहीं पता था कि मैं कभी ये वक्त देख पाऊंगी जब मैं भूल चूक माफ जैसी फिल्म कर रही हूं। पहले मैं ये सोचती थी कि काश मैं उस सुपरस्टार के घर पैदा होती तो जिंदगी कितनी अच्छी होती। अब मैं भगवान का शुक्रिया अदा करती हूं कि जैसी मेरी लाइफ है, जो मेरे पिता हैं, मैं उसी सुपरस्टार के लिए पैदा हुई हूं।

आने वाले दिनों में आपकी कौन सी फिल्में हैं?

मैंने एक तमिल और एक तेलुगू फिल्म की है। एक फिल्म है जीनी, ये फैंटेसी फिल्म है। एक और फिल्म दिल का दरवाजा खोल ना डार्लिंग भी है।

आपकी नई फिल्म में दिखाया गया है कि आपका परिवार आपके लिए सरकारी नौकरी वाला लड़का ढूंढ रहा है। आपने कभी अपने आसपास ऐसा देखा है कि लोग कहते हों कि सरकारी नौकरी वाला लड़का चाहिए?

मुझे लगता है कि ये हर जगह है। सरकारी नौकरी एक तरह की सुरक्षा है जिसमें पेंशन है और बाकी सुविधाएं भी हैं। पहले तो ये बहुत ज्यादा होता था लेकिन आज उतना नहीं है। हां, छोटे शहरों में आज भी इसको बहुत महत्व दिया जाता है।

राजकुमार आज इंडस्ट्री के भी राजकुमार हैं और इन्होंने कई अच्छी फिल्में की हैं। आपका राजकुमार के साथ काम करने का अनुभव कैसा रहा?

मेरा तो राजकुमार के साथ करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। मैं तो उनके साथ काम करने के लिए खुश थी। साथ ही मेरे माता-पिता बहुत खुश थे कि मैं राजकुमार के साथ फिल्म कर रही हूं। थोड़ी नर्वस भी थी लेकिन राजकुमार और डायरेक्टर करन शर्मा ने मुझे काफी सहज महसूस कराया। इसी वजह से मैं अपना बेस्ट दे पाई। शूटिंग का माहौल बहुत ही अच्छा था।

भोजपुरी वाले मुझे अफोर्ड नहीं कर सकते

पॉपुलर टीवी एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री और वहां के एक्टर्स को लेकर चौंकाने वाला बयान दिया है। आकांक्षा पुरी हाल ही एक पॉडकास्ट में पहुंची थीं, जिसके वीडियो क्लिप्स सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। आकांक्षा पुरी पिछले कुछ समय से भोजपुरी सिनेमा में काम कर रही हैं। उनके भोजपुरी गाने यूट्यूब खूब ट्रेंड कर चुके हैं। आकांक्षा पुरी ने भोजपुरी में खेसारी लाल यादव के साथ कई भोजपुरी गाने किए हैं, जो हिट रहे हैं। उनकी जोड़ी भी काफी पसंद की जा रही है। लेकिन अब आकांक्षा का कहना है कि वह भोजपुरी में ज्यादा काम नहीं करना चाहतीं। साथ ही कहा कि भोजपुरी की हीरोइनें उनसे जलती हैं।

आकांक्षा से पहले खेसारी की जोड़ी काजल राघवानी, अक्षरा सिंह और आम्रपाली दुबे संग बनी। आकांक्षा पुरी ने कहा, भोजपुरी की फीमेल एक्टर्स मुझसे जरूर जल रही होंगी क्योंकि उनके गानों पर भी शायद इतने व्यूज नहीं आए, जितने मेरी इंस्टा स्टोरीज को आ जाते हैं। आकांक्षा पुरी ने आगे कहा, वहां बजट बहुत कम है। जो पर डे (प्रति दिन) हम लेते हैं गाने का, उतने बजट में तो वहां पूरा गाना शूट हो जाता है। तो उन लोगों के लिए हम लोगों को अफोर्ड करना थोड़ा मुश्किल है। बहुत काम तो मैं वहां नहीं करना चाहती क्योंकि मेरा बहुत नुकसान हो जाएगा।

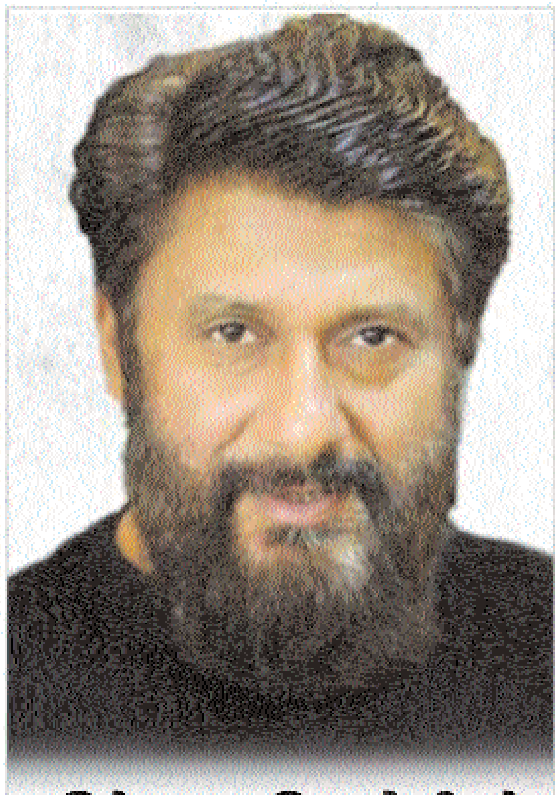

विवेक अग्निहोत्री ने बताया क्या बनाता है अनिल कपूर को खास

फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री ने हाल ही में मेगास्टार अनिल कपूर के साथ काम करने का अपना अनुभव साझा किए, जिन्होंने चॉकलेट-डीप डार्क सीक्रेट्स में अनिल कपूर ने 'एडवोकेट कृष्ण पंडित' की भूमिका निभाई थी। इस दौरान अग्निहोत्री ने उनके बेहतरीन अनुशासन और समर्पण के कुछ अनसुने किस्से बताए, जो अनिल कपूर की कला के प्रति सच्ची लगन और सादगी को दर्शाते हैं।

अग्निहोत्री ने कहा, अनिल कपूर वो ऐसे इंसान हैं जो सेट पर आते ही वहीं पे फट से कपड़े चेंज कर लेते हैं। उन्होंने बताया कि कैसे अनिल कपूर बिना झिझक शूटिंग फ्लोर पर ही कपड़े बदलकर एक काला कपड़ा पहन लेते और कहते, क्यों टाइम वेस्ट करना यार, नीचे वैन में जाने का कौन झंझट लेगा? एक किस्सा याद करते हुए विवेक ने बताया कि अनिल कपूर ने एक बार उनसे पूछा, एक बात बता, इस शर्ट का एक बटन खोलूं या दो?—इस बात को समझने के लिए कि एक सोफिस्टिकेटेड वकील किस तरह खुद को पेश करेगा। जब विवेक ने कहा कि एक बटन काफी होगा, तो अनिल बोले, अच्छा, समझ गया। तुझे अनिल कपूर की इमेज नहीं चाहिए, तुझे अनिल कपूर एक्टर चाहिए। अच्छा, ठीक है। यही स्पष्टता, जिज्ञासा और किरदार में गहराई से उतरने की आदत उन्हें दूसरों से अलग बनाती है।

उन्होंने यह भी साझा किया कि एक सीन के दौरान अनिल कपूर की इंटेंसिटी देखकर खुद इरफान खान भी एक पल के लिए ठहर गए थे—यह इस बात का सबूत है कि अनिल कपूर की उपस्थिति कितनी प्रभावशाली होती है। विवेक अग्निहोत्री ने यह भी बताया कि एक बार जब वे अनिल कपूर की वैनिटी वैन में गए, तो उन्होंने देखा कि अनिल, राज कपूर के पुराने सीन देख रहे थे। पूछने पर अनिल ने कहा, इंस्पिरेशन चाहिए होती है यार। जब ग्रेट लोगों को देखते हो ना, तो दिल के अंदर कुछ अलग ही चीज़ जगती है। हर डायलॉग परफेक्ट नहीं हो सकता, लेकिन राज कपूर जैसे महान लोगों को देखने से उन्हें प्रेरणा मिलती है, अनिल कपूर लगातार महान अभिनेताओं से प्रेरणा लेकर अपने कौशल को निखारते हैं, जिस पर विवेक अग्निहोत्री अभिनेता की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, इसीलिए मुझे अनिल कपूर, नाना पाटेकर, और मिथुन दा जैसे लोगों के साथ काम करने में अलग ही मजा आता है।

जल्द ही दर्शक अनिल कपूर की वही तीव्रता उनकी आने वाली फिल्म सूबेदार में देख पाएंगे, जिसका निर्देशन सुरेश त्रिवेणी ने किया है। यह फिल्म एक अत्यधिक सम्मानित सेना अधिकारी की भावनात्मक यात्रा को दर्शाएगी, जो व्यक्तिगत क्षति से जूझते हुए अपनी ड्यूटी के प्रति समर्पित रहता है। यह फिल्म एक गहन और प्रभावशाली परफॉर्मेंस का वादा करती है। सूबेदार का प्रीमियर ओटीटी पर होने वाली है, और उम्मीदें बहुत अधिक हैं क्योंकि अनिल कपूर एक बार फिर ऐसी भूमिका में हैं जो गंभीरता और संवेदनशीलता दोनों को एक साथ जीवंत करेंगे।

अलगाव की अफवाहों पर बोलीं युविका मैंने चुप रहना बेहतर समझा

प्रिंस नरूला और युविका चौधरी की मुलाकात 'बिग बॉस 9' के दौरान हुई, इसके बाद ही ये रिलेशनशिप में आए। साल 2018 में ये दोनों शादी के बंधन में बंध गए। पिछले साल इनके अलगाव की खबरों ने तब जोर पकड़ा, जब युविका और प्रिंस माता-पिता बने। दरअसल, प्रिंस ने बेटी के जन्म पर कहा था कि युविका ने इसकी जानकारी उन्हें नहीं दी। जिस दिन युविका हॉस्पिटल पहुंची, प्रिंस शूटिंग में व्यस्त थे। इसी बात के कारण ही प्रिंस और युविका के अलगाव की अफवाहों ने जोर पकड़ लिया। अब युविका ने इन्हीं सब अफवाहों को लेकर चुप्पी तोड़ी है।

अफवाह का असल कारण बताया

बातचीत में युविका कहती हैं, 'हम दोनों घर पर नहीं बैठ सकते थे किसी को बाहर जाकर काम करना था। मैं भी खुश थी प्रिंस हमारे लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं। प्रिंस अपने प्रोजेक्ट्स में व्यस्त रहते थे, उसी दौरान हमारा घर भी बन रहा था। प्रिंस घर और काम दोनों को देखकर रहे थे। उसी दौरान कुछ लोगों ने मेरा व्लॉग देखा और अनुमान लगाना शुरू कर दिया कि हमारा अलगाव हो रहा है। इस वजह से हमारे पैरेंट्स काफी परेशान हो गए।'

युविका ने सफाई क्यों नहीं दी

युविका आगे कहती हैं, 'अगर मैं मीडिया में आकर इन बातों के बारे में सफाई देती तो ये बातें और बढ़ सकती थीं। ऐसे में मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। मुझे पता था एक दिन सब कुछ नॉर्मल हो जाएगा। जबकि प्रिंस मुझसे अलग हैं। वह काफी इमोशनल, हाइपर भी हैं। इसके बावजूद हमने इस सिचुएशन को अच्छे से हैंडल किया।'

युविका का करियर फ्रंट

इन दिनों युविका चौधरी करियर ब्रेक पर हैं, वह अपनी बेटी की परवरिश पर ध्यान दे रही हैं। साथ ही अपना एक व्लॉगिंग चैनल भी यूट्यूब पर चलाती हैं। युविका ने अपने करियर की शुरुआत फिल्म 'ओम शांति ओम' से की थी, इसके बाद वह कई फिल्मों, टीवी सीरियल और रियालिटी शो में नजर आईं।

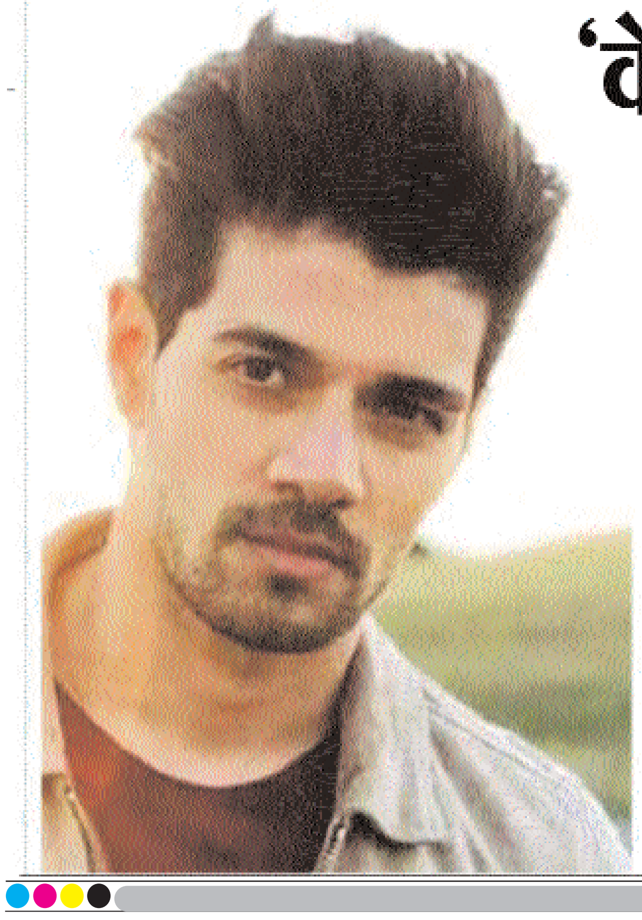

'केसरी वीर' से सूरज पंचोली का फिल्मों में कमबैक

फिल्म केसरी वीर से एक्टर सूरज पंचोली चार साल बाद बॉलीवुड में वापसी कर रहे हैं। इसी फिल्म से आकांक्षा शर्मा भी अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत करेंगी। फिल्म में सोमनाथ मंदिर की कहानी दिखाई जाएगी। सूरज पंचोली और आकांक्षा शर्मा के अलावा फिल्म में सुनील शेट्टी और विवेक ओबेरॉय भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। हाल ही में सूरज ने खास बातचीत की। उन्होंने कहा कि हमें इस फिल्म में काम करने का मौका मिला, यह हमारे लिए गर्व की बात है।

चार साल बाद आप फिल्मों में कमबैक कर रहे हैं। इस पल को लेकर आप कैसा महसूस कर रहे हैं और आपके जज्बात क्या है?

मैं वाकई बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं। काफी लंबे समय बाद फिल्मों में वापसी हो रही है। फिल्म तो सही है, लेकिन जो चीज मैंने सबसे ज्यादा मिस की, वो है प्रमोशन का दौर। लोगों से मिलना, बातें करना, वो माहौल। ये सब सच में बहुत याद आता था। एक बार फिर से उसी जगह लौटकर बेहद खुशी हो रही है।

आपको इस फिल्म का ऑफर कैसे मिला था और उस वक्त आपके क्या एहसास थे?

फिल्म के प्रोड्यूसर कनु चौहान सर हमारे घर आए थे। उनके आने से कुछ दिन पहले ही मैं सोमनाथ गया था, इसलिए मुझे सोमनाथ के इतिहास के बारे में अच्छी जानकारी थी। जब मुझे बताया गया कि मुझे एक योद्धा का किरदार निभाना है, तो मैं बेहद खुश हुआ। यह मेरा सपना था कि मैं अपने जीवन में कभी एक योद्धा का रोल निभाऊं। इसलिए इस मौके को पाकर मैं काफी खुश हूं।

फिल्म में आपने एक योद्धा का किरदार निभाया है। आपकी निजी जिंदगी भी किसी योद्धा से कम नहीं रही है। ऐसे में आपका यह कमबैक कितना चुनौतीपूर्ण या खास रहा?

सच कहूं तो मुझे पहले भी फिल्में ऑफर हो रही थीं, लेकिन मैं सिर्फ एक सही फिल्म और सही समय का इंतजार कर रहा था। फिर वो मौका आया भी। बिल्कुल सही वक्त पर। मेरा मानना है कि हर अच्छी चीज अपने तय समय पर ही होती है। इसलिए यह कमबैक मेरे लिए बहुत खास रहा और इसके लिए मैं दिल से भगवान का धन्यवाद करता हूं।

जब आप फिल्मों से दूर थे, उस दौरान आप क्या कर रहे थे?

मैं बस खाना खाता था और सोता था। इसके अलावा, मैं खुद पर ध्यान दे रहा था और खुद को फिट रखने की कोशिश कर रहा था। सबसे बड़ी बात, मैं फिल्मों में वापसी का इंतजार कर रहा था।

आजकल बॉलीवुड में इतिहास और संस्कृति पर कई फिल्में बन रही हैं। जो हिट भी हो रही हैं। हाल ही में आई छावा। आपकी फिल्म भी इतिहास पर आधारित है। क्या आपको लगता है इससे आपकी फिल्म को फायदा मिलेगा?

स्कूलों में हमारे वीर योद्धाओं के बारे में ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता और न ही उन पर बहुत सी किताबें उपलब्ध हैं। ऐसे में यह फिल्म हमारी तरफ से केसरी वीरों को एक छोटा-सा ट्रिब्यूट है। उन वीरों को जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया और लोगों की रक्षा के लिए खड़े रहे।

हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर आप क्या कहना चाहेंगे?

जो कुछ भी पहलगाम में हुआ, वह बेहद दुखद और पीड़ादायक है। लेकिन हमें इस बात का भरोसा है कि हमारी सरकार और हमारे सैनिक वहां पूरी मजबूती से मौजूद हैं और हमें सुरक्षित रखने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। वे ही हमारे असली केसरी वीर हैं।

सुनील शेट्टी के साथ काम करके कैसा लगा? क्या आपने उनसे कुछ सीखा?

मुझे सुनील सर के साथ काम करके बहुत अच्छा लगा। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा भी। सुनील सर की बेटी, आथिया, मेरी पहली को-स्टार थीं। कहते हैं ना, जिसके साथ आप पहली बार काम करते हैं, वह हमेशा खास होता है, आथिया भी मेरे लिए वैसी ही हैं। उसी दौरान मेरी मुलाकात सुनील सर से हुई थी, और तब से लेकर आज तक उन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित किया है।

क्या आप अपने अगले प्रोजेक्ट्स के बारे में कुछ बताना चाहेंगे?

अभी मेरा पूरा फोकस फिल्म केसरी वीर पर है, जो जल्द ही रिलीज होने वाली है। फिलहाल मैं सिर्फ इसी प्रोजेक्ट पर ध्यान दे रहा हूं। आने वाले वक्त में देखते हैं कि क्या नया आता है।

सौंदर्य टिप्स

ये 5 टिप्स हमेशा के लिए खत्म कर देंगे डार्क सर्कल्स

आंखों के नीचे काले घेरे आपका पूरा लुक खराब कर देते है. स्ट्रेस, कम नींद, धूप में बिना चश्मे के निकलना, एजिंग और जेनेटिक ऐसे कई कारण हैं जिसकी वजह से डार्क सर्कल्स होते है. इन्हें ठीक करने के लिए आपने कई नुस्खे आज़माएं होंगे, लेकिन यहां आपको वो कारगर तरीके बता रहे हैं जिन्हें आज़मा कर आपकी आंखों के काले धब्बे हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे.

1. आई पैक

आलू को कद्दूकस कर इसका जूस निकालें और इसमें रुई को डिपकर आंखों पर रखें. इसके अलावा आप ग्रीन टी बैग्स को आंखों पर रख सकते हैं. इसके लिए गरम पानी में ग्रीन टी बैग्स को एक बार डालें, फिर इन्हें फ्रिज में 20 मिनट के लिए रख दें. इन ठंडे टी बैग्स को रात को सोते समय आंखों पर रखें और रिलैक्स करें.

2. सनस्क्रीन लगाएं

डार्क सर्कल्स को कम करने के लिए सबसे जरूरी है कि धूप में निकलने से पहले सनस्क्रीन लगाकर निकलें. आंखों पर डायरेक्ट धूप लगने से मेलेनिन प्रोडक्शन में बढ़ावा होता है, जो आंखों की आस-पास वाली स्किन को काली बनाती है. इसीलिए जरूरी है कि जिंक ऑक्साइड और टाइटेनियम डाइऑक्साइड से भरपूर सनस्क्रीन का इस्तेमाल करें.

3. आई मसाज

रोज़ाना रात को सोने से पहले दो बूंद बादाम का तेल लें और इससे हल्के हाथों से आंखों की मसाज करें. मसाज हमेशा हाथों की बीच की दो अंगुलियों से ही करें.

4. आंखों को धोएं

रोज़ाना घर पहुंचते ही हाथ-मुंह धोने के साथ-साथ आंखों को भी धोएं. सबसे पहले गुनगुने पानी से आंखों को क्लीन करें और फिर ठंडा पानी आंखों पर मारें. इससे आंखों की दिनभर की थकान कम होगी और ब्लड फ्लो बेहतर होगा.

5. जरूरी टिप्स

दिन भर में 8 से 10 ग्लास पानी पिएं. 7 से 8 घंटे की नींद लें. आंखों को कभी भी टाइट ना रगड़ें. अगर आप लाइट वीक है तो चश्मा लगाकर काम करें और आई मसल्स वीक हैं तो एंटी-ग्लेयर लगाकर काम करें. 1 घंटे से ज्यादा टीवी ना देखें. स्मोकिंग से बचें और स्ट्रेस कम लें. क्योंकि चिंता सबसे पहले आंखों के नीचे काले घेरे लेकर आती है.

हेल्थ के लिए बेहद फायदेमंद है गाय का दूध

गाय का दूध सेहत के लिहाज से बेहद स्वास्थ्यवर्धक होता है। इसमें कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो हड्डियों को मजबूत बनाने में सहायता करता है। गाय का दूध प्रोटीन का भी बेहतरीन स्रोत होता है।

इसके अलावा इसमें विटमिन बी 2 और विटमिन बी 12 भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। ये दोनों विटामिन शरीर को ऊर्जान्वित रखने में मदद करते हैं। शरीर में मसल्स और ऊतकों के निर्माण में भी यह बेहद लाभदायक होता है।

यह कैंसर, एनआईबी, दिल संबंधी बीमारियां, हाई ब्लडप्रेशर और माइग्रेन जैसी समस्याओं से बचाव करने में भी सक्षम है। शरीर को संपूर्ण पोषक तत्व प्रदान करने वाले इस दूध के और भी बहुत सारे फायदे होते हैं। तो चलिए जानते हैं कि ये फायदे क्या हैं।

बढ़ाए रोग प्रतिरोधक क्षमता

गाय के दूध में कैल्शियम, प्रोटीन, एंटी-ऑक्सीडेंट्स के साथ-साथ विटामिन ई, सेलेनियम, जिंक आदि भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। ये तत्व हमारे शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।

त्वचा रोग में लाभकारी

गाय का दूध त्वचा के रोमछिद्रों को सिकोड़कर छोटा कर देता है। इससे ब्लैकहेड्स की समस्या से निजात मिलती है। रूखी और बेजान त्वचा के लिए भी गाय का दूध काफी लाभदायक होता है।

वजन कम करने में उपयोगी

गाय का दूध पीने से आपका मेटाबॉलिज्म बढ़ता है, जिससे आपको बार-बार भूख नहीं लगती है। इसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन भी होता है जो वर्कआउट के लिए आपको पर्याप्त ऊर्जा मुहैया कराता है।

दिमाग-आंखों के लिए फायदेमंद

बच्चों के दिमाग का विकास करने के लिए उन्हें नियमित रूप से गाय का दूध पिलाना चाहिए। इसके अलावा इस दूध में पाया जाने वाला कैरोटिन आंखों की रोशनी बढ़ाने में भी मदद करता है।

जानिए संतरे खाने के 5 फायदों के बारे में

सर्दियां आते ही बाजार में आ जाते हैं ताजे संतरे. जिसे आप और हम कई तरीकों से अपनी डाइट में शामिल करते हैं. कोई सुबह जूस की तरह पीता है तो कई इसे शाम के स्नेक में खाना पसंद करता है. विटामिन सी, ए, अमिनो एसिड, बी कॉम्प्लेक्स, फ्लेवोनॉयड, कैल्शियम, फॉस्फोरस, सोडियम जैसे मिनरल्स से भरे इस फल को खाने के कई फायदे होते हैं. सिर्फ एक दिन में एक संतरा शरीर को कई बीमारियों से बचा कर रखता है. यहां आपको संतरे खाने के 5 फायदों के बारे में बता रहे हैं.

1. ब्लड प्रेशर कंट्रोल करे

ब्लड प्रेशर को लो होने से बचाने के लिए सबसे जरूरी है सोडियम की मात्रा को बैलेंस रखना. संतरा सोडियम की मात्रा को नॉर्मल रख ब्लड प्रेशर को सही रखता है. इसीलिए जिसे भी हाई या लो ब्लड प्रेशर की परेशानी हो वो अपनी डाइट में संतरा जरूर शामिल करें.

2. कैंसर से बचाए

विटामिन सी से भरपूर संतरा शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले फ्री-रेडिकल्स से सुरक्षित रखता है. साथ ही इसमें पाया जाने वाला लाइमोनिन कैंसर सेल्स को बढ़ने से रोकता है. मैंडरिन संतरे में विटामिन ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है. जापान में हुई एक स्टडी के मुताबिक मैंडरिन संतरा लिवर कैंसर होने के खतरे को कम करता है.

3. किडनी पथरी से रखे सेफ

रोज़ाना संतरे का सेवन किडनी में होने वाली पथरी के खतरे को कम करता है. इसीलिए आप संतरे को रोज़ाना अपनी डाइट में शामिल करें. पथरी के लिए संतरे को लिक्विड रूप में पीएं ज्यादा फायदा होगा.

4. बवासीर में दिलाए आराम

संतरा पेट के अल्सर को खत्म करता है और बवासीर में राहत दिलाता है. इसके लिए रोज़ाना खाना खाने के बाद एक ग्लास संतरे का जूस पीएं. बवासीर के मरीज संतरे के छिलके के पाउडर को भी पानी में मिला कर पी सकते हैं.

5. सर्दी-जुकाम करे छुमंतर

संतरे में मौजूद विटामिन सी सर्दी-जुकाम में राहत दिलाता है. लोगों का ऐसा मानना है कि संतरे की तासीर ठंडी होती है इसीलिए इसे सर्दी-खांसी में नहीं खाना चाहिए, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं होता है. बल्कि संतरा या विटामिन सी वाले सभी फल सर्दी में राहत दिलाते हैं.

घर संसार

ये छोटे-छोटे ट्रिक्स अपनाकर घर को बनाएं और भी खूबसूरत

खुद के घर को सजाने का मजा कुछ अलग है। घर की सजावट ऐसी होनी चाहिए जो दिन भर की थकान को दो मिनटों में गायब कर दें। हम लोग अपने घर को सजाने के लिए कोई कोई एक्सपेरिमेंट्स करते ही रहते है। अगर आप भी अपने भी आसान तरीकों से अपने घर को सजाए रखना चाहते है तो आइए हम आपको कुछ टिप्स बताते है जो घर की लुक को कर देंगे चेंज।

1. सीप रखें

एक कांच के कंटेनर में सीप डालकर साईड टेबल पर या कॉर्नर में रखें। इसको लीविंग रूम में रखें। इससे रोमांटिक फील आएगा।

2. टायर पॉट

पुराने टायर को अच्छा सा पेंट करें और उसमें पौधे लगाएं। यह आपके गार्डन को अलग ही लुक देंगे।

3. वॉलपेपर

दीवारों को डिफरेंट और यूनिक लुक देने के लिए वॉलपेपर इस्तेमाल करें। इनमें आपको कई रंग, डिजाइनर, पैटर्न्स मिल जाएंगे। इन्हें आप खुद भी लगा सकते हैं।

4. शंकु देंगे विन्टेज लुक

यह आपको किसी भी फूलवाले के यहां आसानी से मिल जाएंगे। आप इन्हें सीढ़ियों में डिफरेंट पेंट करके सजा सकते हैं। किसी मेसन जार में भी रख सकते हैं।

5. हैंगिंग पौधे

छोटे-छोटे पौधों को किसी पुरानी बोतल में उगाएं और नेट के कपड़े से कवर करें। हैंगिंग की तरह लगा दें। इसे आप अंदर और बाहर सजा सकते है।

6. पुरानी चीजें, नया लुक

कुछ पुराने कन्टेनर्स जैसे मग, वॉटर केन्स, डब्बे आदि को पौधे लगाने के लिए इस्तेमाल करें। इससे गार्डन को अलग लुक मिलेगी।

7. गार्डन में पोन्ड

गार्डन पोन्ड को नया लुक देना चाहते है तो उसके आस-पास पत्थर जोड़कर उसकी बाउन्ड्री वॉल बनाएं। इसके बीच-बीच में अलग-अलग रंगों के फ्लॉवर लगाएं।

ट्रेडमिल पर दौड़ते समय रखें इन बातों का ध्यान

बढ़े हुए वजन को कम करने के लिए अक्सर ट्रेडमिल पर चलने व दौड़ने की सलाह दी जाती है। ट्रेडमिल जिम में आसानी से मिलने वाली एक मशीन है, जो वजन कम करने के साथ ही शारीरिक तौर पर कई बदलाव लाती है। वजन कम करने के अलावा इस मशीन से दिल बेहतर काम करता है। शरीर में सकारात्मक बदलाव आते हैं, पर एक छोटी-सी लापरवाही समस्याओं को बढ़ा भी सकती है।

ट्रेडमिल के लाभ

- हृदय संबंधी गतिविधियों यानी कार्डियो वैस्कुलर एक्टिविटीज को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।
- पर्वतारोही पहाड़ी पर चढ़ाई से पहले इस पर प्रैक्टिस कर अपनी रफ्तार और पैरों की पकड़ को मजबूत बनाते हैं। पिंडलियों की मांसपेशियां भी मजबूत बनती हैं।

कैलरी खपत में भी ये मशीन मदद करती है। तनाव कम करने में भी सहायक होती है।

सेहत से जुड़ी कोई परेशानी है तो

अगर सेहत से जुड़ी कोई परेशानी है तो इंस्ट्रक्टर को बताएं। उसी के निर्देशों का पालन करें। गोल्ड जिम के मैनेजर और इंस्ट्रक्टर विनीत कपूर बताते हैं, ट्रेडमिल पर दौड़ लगाने से पहले उसकी स्पीड और दौड़ने के तरीके के बारे में जान लें।

- मधुमेह रोगियों को ट्रेडमिल पर दौड़ने या बहुत तेज चलने से बचना चाहिए। घुटने या पैरों में चोट या दर्द है तो दूर रहना बेहतर होगा।
- ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए भी ट्रेडमिल पर दौड़ने से बचने की सलाह दी जाती है। हृदय कमजोर है तो भी परहेज करें।
- माइग्रेन या सिर से जुड़ी समस्या होने पर विशेषज्ञों की राय ले लें। बहुत दुबले लोगों को कम स्पीड पर अभ्यास करना चाहिए। अगर इनमें से किसी तरह की दिक्कत नहीं है तो ट्रेडमिल पर अभ्यास करना सही रहेगा।

इन बातों पर करें गौर

- पानी की बोतल जरूर पास रखें। पसीना ज्यादा आने पर बीच-बीच में कुछ पानी पीते रहें, ताकि डीहाइड्रेशन न हो।
- शुरुआत में मशीन की रफ्तार कम रखें। धीरे-धीरे बढ़ाएं।
- वजन कम करना है तो कम से कम 20 मिनट जरूर चलें।
- मशीन में दिए इमरजेंसी स्टॉपर क्लिप को कपड़े से लगाकर रखें। अगर गति नियंत्रण से बाहर होती है तो ये क्लिप उसको ऑटोमैटिक बंद कर सकता है।
- ट्रेडमिल पर नंगे पांव न दौड़ें। पैर फिसलने पर गंभीर चोटें आ सकती हैं।
- ट्रेडमिल पर दौड़ते समय एक्स्ट्रा पैडिंग वाले जूते पहनें, पैर में मोच नहीं आती। चलते वक्त नीचे पांव की ओर न देखें। गति बेकाबू हो सकती है।
- ट्रेडमिल पर दौड़ते वक्त हैंडरेल को न पकड़ें। इससे बांहों में दर्द हो सकता है।
- ट्रेडमिल की रफ्तार धड़कनों की गति ध्यान रखकर बढ़ाएं। बहुत अधिक रफ्तार बढ़ाना हृदय पर भारी पड़ सकता है।
- मशीन पूरी तरह से रुकने पर ही मशीन से नीचे उतरें।
- घुटनों में दर्द है तो पहले विशेषज्ञ से बात कर लें।
- ट्रेडमिल पर दौड़ते समय सेफ्टी बार को पकड़कर ना रखें। पोस्चर बिगड़ सकता है।

अंदरूनी चोट के दर्द को राई से करें दूर

आजकल हर किसी की लाइफस्टाइल बहुत व्यस्त हो गई है। हर कोई चाहता है कि उसका काम जल्दी से निपट जाए लेकिन कई बार हड़बड़ाहट में चोट भी लग जाती है। बाहर से दिखाई देने वाली चोट के जख्म तो जल्दी भर जाते है लेकिन कई बार शरीर के अंदरूनी हिस्सों में भी चोट लग जाती है। जो दिखाई नहीं देती लेकिन दर्द बहुत करती है। कई बार तो इस चोट का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है लेकिन घरेलू इलाज से इस परेशानी से छुटकारा पाया जा सकता है। राई खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है। दर्द से छुटकारा पाने के लिए राई का इस्तेमाल बेहद लाभकारी है। राई को सरसों के नाम से भी जाना जाता है।

इस तरह करें राई का इस्तेमाल : राई में एंटीऑक्सिडेंट, सेलेनियम और मैग्निश्यम भरपूर मात्रा में होते हैं। चोट लगने पर राई को पानी में मिलाकर इसका गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें। इसे चोट वाली जगह पर लेप कर लें। बहुत आराम मिलेगा। इसके अलावा पानी में राई के दाने उबालकर इस पानी में कॉटन का कपड़ा भिगोकर चोट वाली जगह पर थपथपाएं। ऐसा करने से दर्द बहुत कम हो जाएगा। इसके साथ ही खाने में भी राई का इस्तेमाल करें। छौंक लगाने,स्वाद,अचार आदि तरीकों से राई खा सकते हैं।

घबराहट होने पर लाभकारी है राई : राई के छोटे-छोटे दाने सेहत के लिए बहुत लाभकारी है। घबराहट होने पर हाथ की हथेलियों और पैरों के तलवों पर राई को रगड़ें। इससे बहुत आराम मिलता है।

रेसिपी

खट्टे बैंगन की सब्जी

5-6 लंबे बैंगन, दो कटे हुए प्याज, एक बारीक कटा हुआ टमाटर, एक दालचीनी, एक बड़ा चम्मच जीरा, आधा चम्मच इलायची पाउडर, एक चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च, एक छोटा चम्मच हींग, एक छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, एक बड़ा चम्मच सोंठ, एक बड़ा चम्मच सौंफ, एक बड़ा चम्मच नींबू का रस, बारीक कटा हुआ हरा धनिया, स्वादानुसार नमक बनाने की

विधि

सबसे पहले एक कढ़ाई में तेल डालकर गर्म करें। जब ये गर्म हो जाए तो इसमें दालचीनी, जीरा, इलायची पाउडर, कश्मीरी लाल मिर्च, हींग, धनिया पाउडर, हल्दी और नमक डालें और अच्छी तरह से फ्राई कर लें। इसके बाद इसमें थोड़ा सा पानी डाल दें। जिससे कि मसाला जले न। जब यह तेल छोड़ने लगे तो इसमें सोंठ डाल दें और कम से कम 2 मिनट पकाएं इसके बाद इसमें प्याज और बैंगन डालकर अच्छी तरह से फ्राई करके कम से कम 20 मिनट के लिए ढक्कन बंद कर दें। 20 मिनट बाद इसमें टमाटर, सौंफ और थोड़ा सा पानी डालें। अब टमाटर पकने दें। जब टमाटर पक जाए और गाढ़ी सी ग्रेवी तैयार हो जाए। तब आंच बंद कर दें। आपकी कश्मीरी खट्टे बैंगन की सब्जी बनकर तैयार है। इसमें नींबू डालकर गर्मागर्म रोटी के साथ सर्व करें।

वेज उपमा

सामग्री

पानी : 660 मिलीलीटर

गाजर- 75 ग्राम हरे मटर : 40 ग्राम

ग्रीन बीन्स- 35 ग्राम घी- 1 बड़ा चम्मच

सरसों के बीज : 1/2 चम्मच करी पत्ते : 7-8 : प्याज : 75 ग्राम सूजी : 100 ग्रामहरी मिर्च : 1 चम्मच नमक : 1 चम्मच

धनिया : 1 बड़ा चम्मच

विधि

डीप पैन को मध्यम आंच पर रखें और उसमें 660 मिलीलीटर पानी, 75 ग्राम गाजर, 40 ग्राम हरे मटर, 35 ग्राम ग्रीन बीन्स डालकर उबाल लें। अब एक डीप पैन को मध्यम आंच पर रखें और उसमें आधा चम्मच सरसों के बीज, 7-8 करी पत्ता डालें और अच्छी तरह से हिलाएं। फिर इसमें 75 ग्राम प्याज डालकर फ्राई करें, जब तक यह हल्के ब्राउन न हो जाए। अब इसमें 100 ग्राम सूजी डालें और मध्यम आंच पर 2-3 मिनट तक पकाएं। इसमें 1 हरी मिर्च डालकर अच्छे से मिक्स करें। फिर इसमें उबली हुई सब्जियां, 1 चम्मच नमक, 1 बड़ा चम्मच धनिया डालें और अच्छे से मिक्स करें। अब इसे 3-5 मिनट तक मध्यम आंच पर पकाएं। कभी-कभी इसे हिलाते रहें। जब यह गाढ़ा हो जाए तो आंच से उतार लें और सर्व करें

मंजू टेलर व महावीर टेलर की शादी की 40वीं सालगिरह पर 120 यूनिट रक्त दान, 101 पौधों का रोपण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सांगानेर सीतापुरा स्थित एमके टेलरिंग हाउस में मंजू टेलर एवं महावीर कुमार टेलर की शादी की 40वीं सालगिरह के अवसर पर भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एमके टेलरिंग के मोहित टेलर ने बताया कि माताजी-पिताजी की सालगिरह को समाज सेवा से जोड़ते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कुल 120 यूनिट रक्त एकत्र किया। शिविर का आयोजन भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल, महात्मा गांधी हॉस्पिटल एवं स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के सहयोग से किया गया। सोहित टेलर ने बताया कि गर्मियों के मौसम में रक्त की कमी को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि हर वर्ष शादी की सालगिरह पर रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी सराहनीय पहल की गई। महावीर टेलर ने बताया कि बढ़ती गर्मी को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर 101 पौधे लगाए गए और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी भी ली गई। इस कार्यक्रम में नामदेव समाज, सीतापुरा गारमेंट एक्सपोर्टर, जयपुर कुर्ती मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन, रोटरी क्लब, बीजेपी श्योपुर मंडल, फैक्ट्री स्टाफ, पार्षदगण व मित्रगण सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भीषण गर्मी में उत्तर पश्चिम रेलवे मजदूर संघ ने पशु-पक्षियों के लिए लगाए परिंडे

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भीषण गर्मी में जहां इंसानों का जीवन प्रभावित हो रहा है, वहीं बेजुबान पशु-पक्षी भी गर्मी से परेशान हैं। इसी को देखते हुए उत्तर पश्चिम रेलवे के कोच केयर कॉम्प्लेक्स, जयपुर मंडल में वरिष्ठ कोचिंग डिपो अधिकारी गौरव गुप्ता के मार्गदर्शन में उत्तर पश्चिम रेलवे मजदूर संघ शाखा 01 द्वारा पशु-पक्षियों के लिए परिंडे लगाए गए। संघ के पदाधिकारियों ने न सिर्फ परिंडे लगाए, बल्कि उनमें नियमित रूप से पानी व दाना भरने की जिम्मेदारी भी तय की। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी गौरव गुप्ता ने इस कार्य की सराहना करते हुए

कहा कि यह कार्य मानवता की मिसाल है और सभी को इसमें भागीदारी निभानी चाहिए। संघ प्रवक्ता अनिल चौधरी ने बताया कि यह पहल सिर्फ एक शुरुआत है। आगे भी कार्यस्थल पर और अन्य स्थानों पर परिंडे लगाए जाएंगे ताकि बेजुबान जीवों को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि भोजन और पानी की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। इस अवसर पर संघ चेयरमैन याकत अली, डिपो प्रभारी दीपाराम परिहार, सोशल मीडिया प्रभारी महेश शर्मा सहित अर्जुन लाल कुमावत, पृथ्वी सिंह यादव, निकेद्र सिंह शेखावत, रामजीलाल नोदल, भगवान सहाय मीना, मुकेश मीना, आदित्य निठारवाल, मुस्कान बैरवा, ऋषिराज मंतवाल, सीता मीना व अन्य कई पदाधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। सभी ने मिलकर इस पुनीत कार्य में सक्रिय भागीदारी निभाई।

विद्युत ट्रांसफार्मर से कॉपर वायर व तेल चोरी करने वाले तीन शातिर लोग गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं.) पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण दिगत आनंद आई.पी.एस ने बताया कि ललित कुमार शर्मा अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण के मार्गदर्शन एवं सुरेंद्र सिंह आर.पी.एस. सहायक पुलिस आयुक्त चाकसू जयपुर दक्षिण के निर्देशन में थानाधिकारी कोटखावदा भरत महर पु.नि. के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा कोटखावदा थाना में 20 फरवरी 2025 में विद्युत टांसफार्मर से कॉपर वायर व तेल चोरी करने वाले बावरिया गैंग के तीन शातिर अभियुक्तो को गिरफ्तार किया गया है। कोटखावदा थानाधिकारी भरत महर ने बताया कि मंयक शर्मा पुत्र घनश्याम शर्मा उम्र 32 साल हाल निवासी कनिष्ठ अभियंता विद्युत विभाग कोटखावदा ने 20 फरवरी को करायी कि गांव राडोली में रात को विद्युत टांसफार्मर से कॉपर वायर व तेल चोरी कर ले गये। इलाक़े मे बढती चोरी नकबजनी की वारदातों का खुलासा करने के लिए थानाधिकारी कोटखावदा भरत महर पु.नि. के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा बावरिया गैंग के तीन शातिर अभियुक्त राजेंद्र बावरिया पुत्र अर्जुनलाल बावरिया जाति बावरिया उम्र 22 साल हाल निवासी सुरजपुरा दौसा, धर्मसिंह पुत्र गोपाल जाति बावरिया उम्र 21 साल हाल निवासी सुरजपुरा दौसा, सरदार उर्फ जंगा पुत्र मुसीराम जाति बावरिया उम्र 22 साल निवासी सुरजपुरा दौसा को प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया गया। विशेष टीम सदस्य भरत महर पु.नि. थानाधिकारी थाना कोटखावदा, सुवालाल उ.नि. थाना कोटखावदा, विरेंद्र कुमार हैडकानि, सुभाषचंद कानि, लोकेश कुमार कानि, सीताराम,कानि, मोहनलाल कानि, गोविद नारायण कानि रहें।

सड़क हादसे में एक युवक और सात भैंसों की मौत

जयपुर टाइम्स

टोंक(निसं.)। सदर थाना क्षेत्र में मंगलवार अलसुबह जयपुर-कोटा फोरलेन पर खड़े टाटा आइसर (मिनी ट्रक) को पीछे से ट्रोले के टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि टाटा आइसर में सवार चित्तौड़गढ़ जिले के एक व्यक्ति और आधा दर्जन से ज्यादा भैंसों की मौत हो गई। सूचना पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मृतक को सआदत अस्पताल ले गए।

बिजली से परेशान वार्डवासियो ने किया प्रदर्शन : कम वॉल्टेज से आहत लोगो ने डिस्कॉम को सौंपा ज्ञापन

दो दिन में समस्या का समाधान नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन करने की चेतावनी दी

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। एक तरफ भयानक गर्मी तो दूसरी ओर बिजली से आमजन परेशान हैं। शहर से लेकर गांवो तक बिजली की समस्या दिन-बे दिन बढ़ती जा रही है,कई वॉल्टेज कम तो कई बार बिजली गुल। लगातार बिजली की समस्या के चलते ग्रामीणों में भारी आक्रोश प्राप्त है। इस समस्या को लेकर मंगलवार को नगरपालिका सुमेरपुर के शिव कॉलोनी वार्डवासी हाथों में ज्ञापन लेकर विद्युत विभाग कार्यालय पहुंचे जहां मौजूद लोगों ने खरी खोटी सुनाई,और जबरदस्त प्रदर्शन किया। वार्डवासियों ने डिस्कॉम के अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा,और बिजली संबंधित आ रही समस्या समाधान की मांग रखी। ज्ञापन में बताया कि रात 9 बजे बाद बिजली पावर सप्लाई डिम हो जाता है,जिससे ना पंखे,कुलर,पानी मोटर चलते हैं ना लाइट जलती है। बिजली जैसी रोज की समस्या के कारण कॉलोनी वाशी बहुत परेशान है, और रात सड़कों पर गुजारने को मजबूर हैं। यहां पर मजदूर वर्ग के लोग निवास करते हैं दिनभर अंग झुलसा गर्मी में मजदूरी करके आते हैं,फिर भी बिजली से राहत नहीं मिलती है। वार्डवासियों ने कहा कि रात को सोने के समय बिजली की समस्या से सोना दुर्लभ हो गया है। वार्डवासियों के साथ भाजपा सोशल मीडिया सदस्य भरत सोलंकी ने इस समस्या को लेकर प्रशाशन को पहले भी लिखित में कई बार अवगत कराया था, लेकिन इस समस्या पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इस पर प्रशाशन का एक ही जवाब मिलता है कि ट्रांसफार्मर बदलना है लेकिन 2 महीने से अधिक समय बीत जाने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस समस्या के निराकरण की अतिशीघ्र मांग की है, नहीं तो विद्युत विभाग के बाहर धरना प्रदर्शन और उग्र आंदोलन करने की चेतावनी दी। इस मौके पर नटवर रामीणा, कानू देवी,सीता देवी, भिखी देवी,नीमा , ममता,शांति देवी , मंजू देवी आदि उपस्थित रहे।

माली समाज का चतुर्थ प्रतिभावान सम्मान समारोह 22 जून को

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निस्.)। माली समाज नवयुवक मंडल द्वारा 22 जून को पंच परगना के तत्वाधान में चतुर्थ प्रतिभावान सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। इसको लेकर रविवार को माली समाज नवयुवक मंडल की बैठक माली समाज अध्यक्ष खीमाराम देवड़ा के नेतृत्व व नवयुवक मंडल अध्यक्ष हिम्मत गहलोत की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में सरक्षक मीठालाल देवड़ा,महेश परिहार,प्रचार मंत्री दीपक गोयल ने बताया कि मलेश्वर महादेव मंदिर चौधरी कॉलोनी में आयोजित की गई,जिसमें निर्णय लिया गया आगामी 22 जून को लिखमीदास जी शिक्षण संस्थान सुमेरपुर टाउन हॉल के सामने प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। विद्यार्थी सम्मान समारोह को लेकर रूपरेखा तैयार की गई जिसमें पंच परगना गांव के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस सम्मान समारोह में कुंडाल परगना,शिवगंज परगना,सताइस परगना,आठ गांव व बाहरी परगना के पांच परगनाओं के विद्यार्थियों का सम्मान होगा। कार्यक्रम का आयोजन साधु संतों के सानिध्य में किया जाएगा। जहां सांस्कृतिक कार्यक्रम सुबह 9.00 बजे प्रारंभ होगा और 9.00 से 12.00 तक चलेगा। वही 12.00 विद्यार्थी सम्मान समारोह लिखमीदास जी शिक्षण संस्थान टाउन हॉल के सामने होगा। बैठक में भरत देवड़ा, उत्तम देवड़ा, कांतिलाल देवड़ा, श्रवण देवड़ा, एडवोकेट जयंतीलाल माली, सुकन राज, दीपक गोयल, अशोक गहलोत, रमेश देवड़ा, जगदीश देवड़ा, सुरेश देवड़ा, रमेश परिहार, ललित परिहार, सुरेश देवड़ा, रमेश देवड़ा, भीखाराम, शंकर माली, जयेश देवड़ा सहित माली समाज नवयुवक मंडल के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

नगर निगम ग्रेटर की बड़ी कार्यवाही: 59 हजार रुपये वसूले, 10 वाहन जब्त

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर जयपुर की सतर्कता शाखा ने सोमवार को अतिक्रमण के खिलाफ बड़ी कार्यवाही करते हुए 59 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया और 8 केन्टर व 2 ट्रैक्टर-ट्रॉली सामान जब्त किया। यह कार्यवाही निगम आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देश पर, उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में की गई। सतर्कता शाखा की टीम ने मानसरोवर स्थित रीको काँटा चौराहा, 7 नंबर चौराहा जगतपुरा से अक्षय पात्र चौराहा, जगतपुरा पुलिया से केपिटल मॉल तक एवं इन्दिरा गाँधी नगर सेक्टर-3 सहित अन्य स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण हटाया। जब्त किए गए सामान को निगम गोदाम में भिजवाया गया। उपायुक्त अजय कुमार ने बताया कि अतिक्रमणकारियों को मौके पर ही समझाइश दी गई और मौखिक चेतावनी दी गई कि भविष्य में दोबारा अतिक्रमण किया गया तो उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही एवं भारी चालान किया जाएगा। नगर निगम की इस सख्ती से क्षेत्र में अस्थाई अतिक्रमण करने वालों में हड़कंप मच गया है। निगम प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण से बचें और नगर सौंदर्य बनाए रखने में सहयोग करें।

नगर निगम ग्रेटर की सतर्कता टीम की बड़ी कार्यवाही, 25 हजार का कैरिंग चार्ज वसूला, 3 केन्टर सामान जब्त

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर की सतर्कता शाखा ने मंगलवार को आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देश पर और उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में व्यापक कार्रवाई की। टीम ने एसएफएस चौराहे से मानसरोवर प्लाज़ा तक, वैशाली नगर, आम्रपाली सर्किल, राठौड़ नगर, मालवीय नगर ए ब्लॉक झालाना ग्राम, गंगा मार्ग सीबीआई फाटक, खो-नागोरियान फ्रेंड्स कॉलोनी, आगरा रोड से बंधे तक और गेटोर रोड जगतपुरा क्षेत्र में अस्थाई अतिक्रमण हटवाया। इस दौरान 3 केन्टर सामान जब्त कर निगम गोदाम भिजवाया गया एवं अतिक्रमणकारियों से मौके पर ही 25 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूला गया। कार्यवाही के दौरान टीम ने मौके पर मौजूद दुकानदारों और ठेले वालों को समझाइश देते हुए मौखिक रूप से पाबंद किया कि भविष्य में समय रहते अस्थाई अतिक्रमण हटा लें। नगर निगम ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि भविष्य में अवैध अतिक्रमण पाया गया तो भारी चालान और सख्त कार्रवाई की जाएगी। यह अभियान नगर निगम क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त बनाने की दिशा में एक सख्त कदम माना जा रहा है।

दिव्यांशी, प्रभव और सुभाष का एशियन जूनियर के लिए चयन

जयपुर(निसं.)। राजस्थान के स्क्वैश खिलाड़ी दिव्यांशी जैन, प्रभव बाजोरिया और सुभाष चौधरी एशियन जूनियर इंडिविजुअल स्क्वैश चैंपियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे। राजस्थान स्क्वैश रैकेट्स एसोसिएशन के सचिव घीरज सिंह ने बताया कि इन खिलाड़ियों का चयन 15 से 19 मई तक चेन्नई में आयोजित ट्रॉयल के आधार पर किया गया है। एशियन जूनियर इंडिविजुअल चैंपियनशिप का आयोजन 1 से 6 जुलाई तक दक्षिण कोरिया में किया जाएगा। धीरज ने बताया कि स्क्वैश रैकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया की देखरेख में आयोजित चयन ट्रायल में

नेशनल रैंकिंग को आधार मानते हुए टॉप 8 खिलाड़ियों को आमंत्रित किया गया था। इसके बाद इन खिलाड़ियों के बीच राउण्ड रोबिन आधार पर मैच आयोजित किए गए। धीरज ने बताया कि दिव्यांशी जैन, प्रभव बाजोरिया और सुभाष चौधरी ने अपने- अपने आयु वर्ग में टॉप 4 में रहते हुए भारतीय टीम में जगह बनाई। उन्होंने बताया कि दिव्यांश जैन लड़कियों की अंडर-13 कैटेगरी में देश का प्रतिनिधित्व करेंगी, वहीं इसी आयु वर्ग में लड़कों में प्रभव बाजोरिया चुनौती पेश करेंगे। सुभाष चौधरी को अंडर-17 कैटेगरी में चुना गया है।

श्री गणेशपुरी धाम विकास समिति कार्यकारिणी का गठन

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं.)। चाकसू कस्बे में सिद्ध पीठ श्री गणेश पुरी धाम के समुचित विकास के लिए बाबा के सेवकों की एक बैठक मंगलवार को महंत राजेंद्र पुरी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री गणेशपुरी धाम विकास समिति महामंत्री पद पर रविंद्र सिंह तोमर, राजेंद्र गोस्वामी, गुड्डु जांगिड, गिरिराज मीणा को मंत्री, अंबालाल यादव को कोषाध्यक्ष एवं लालचंद सैन को प्रचार प्रसार मंत्री का दायित्व दिया गया है। उपाध्यक्ष पद का दायित्व विनोद राजोरिया,बलराम शर्मा, मोतीलाल शर्मा, कालूराम गुर्जर को तथा संरक्षक पद पर महंत राजेंद्र पुरी महाराज, राजेंद्र मामोडिया ओम गोस्वामी, नंदलाल मामोडिया एवं रामजीलाल शर्मा को बनाया गया है। रामबाबू मेठी सह कोषाध्यक्ष एवं गोपाललाल गोस्वामी को सहप्रभारी मंत्री की जिम्मेदारी दी गई है। इनके अलावा 14 लोगों को सहयोगी सदस्य बनाया गया है। इनमें शंकरलाल गुप्ता,कालूजी सैनी, मुकेश खींची, बाबूलाल यादव, राधेश्याम शर्मा, प्रहलाद भगत, गिरिराज बूसर, रामावतार मामोडिया,राधाकिशन जाट, रामप्रसाद गुर्जर, हनुमान गिरी, चम्पेश्वर शर्मा एवं लक्ष्मीनारायण पुरी गोस्वामी प्रमुख हैं।

कृषि में छात्राओं को मिलेगा बढ़ावा, राज्य सरकार देगी प्रोत्साहन राशि

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्राओं को प्रोत्साहन राशि देने की योजना शुरू की है। यह योजना 11वीं कक्षा से लेकर पीएचडी तक की छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान करेगी। सहायक निदेशक कृषि विस्तार

धर्मपाल सिंह ने बताया कि ग्रामीण व शहरी अंचल की आर्थिक रूप से कमजोर छात्राएं जो कृषि विषय में पढ़ाई करना चाहती हैं, उन्हें यह सहायता मिलेगी। योजना के तहत 11वीं-12वीं की छात्राओं को 15,000 रुपये प्रतिवर्ष, कृषि स्नातक (4 वर्षीय) व बीएससी एग्री बिजनेस (5 वर्षीय) की छात्राओं को 25,000 रुपये प्रतिवर्ष, एमएससी कृषि की छात्राओं को 25,000 रुपये प्रतिवर्ष तथा पीएचडी करने वाली छात्राओं को 40,000 रुपये प्रतिवर्ष अधिकतम 3 वर्षों तक दिए जाएंगे। इस योजना का लाभ केवल राजस्थान की मूल निवासी छात्राओं को मिलेगा जो राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों में अध्ययनरत हैं। आवेदन राज किसान साथी पोर्टल पर स्वयं की एसएसओ आईडी या ई-मित्र केंद्र के माध्यम से 31 जनवरी 2026 तक किया जा सकता है। आवेदनों की जांच संबंधित कृषि अधिकारी द्वारा की जाएगी और संस्था प्रधान द्वारा ई-साइन सर्टिफिकेट जारी किया जाएगा। यदि छात्रा अनुत्तीर्ण है या पुनः उसी कक्षा में पढ़ रही है, तो वह इस योजना के लिए पात्र नहीं होगी। योजना का उद्देश्य छात्राओं को कृषि क्षेत्र में उच्च अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना है।

जागीरपुरा गांव के समीप ढाबा से खाना खाते ट्रक ड्राइवर का अपहरण के बाद मारपीट कर किया घायल

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। कोलारी थाना क्षेत्र के जागीरपुर गांव के समीप रंजिश के चलते एक ट्रक ड्राइवर के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल ड्राइवर को अपहरणकर्ताओं से मुक्त कराकर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिला अस्पताल में

भर्ती ट्रक ड्राइवर ने बताया कि गत दो वर्ष पूर्व उसके वाहन से एक युवक दुर्घटनाग्रस्त हो गए था। जिसका ड्राइवर के द्वारा उपचार कराया गया था। उसी बात की रंजिश को लेकर सोमवार की रात 11 बजे खाने खाने के लिए ढाबा पर रुका। तभी एक दर्जन लोगों ने खाना खाते वक्त हमला कर अपहरण कर घर ले गए जहां। उन्होंने पेड़ से बांध कर ड्राइवर को घायल कर दिया। घटना की जानकारी परिजनों के द्वारा पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस के द्वारा युवक को मंगलवार को सुबह बसई नवाब अस्पताल में भर्ती किया गया था। जहां से उसे प्राथमिक उपचार के बाद धौलपुर रेफर कर दिया। जहां मंगलवार को दोपहर 12 बजे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कौलारी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पंच कल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव की पत्रिका का विमोचन

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। कस्बे के बड़े दिगंबर जैन मंदिर में 29 से 31 मई तक आयोजित होने वाले पंच कल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव की पत्रिका का विमोचन झांतला गांव में दिगंबर जैन आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के मुनि संघ के सानिध्य में किया गया। इस अवसर पर दिगंबर जैन आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ने कहा कि पक्षियों की सुरक्षा के लिए तीर्थ क्षेत्र पर पक्षी घर भी बनाया जाना चाहिए।सकल दिगंबर जैन समाज बिजौलियां ने दिगंबर जैन आचार्य से बिजौलियां के लिए निवेदन किया।विदित हैं कि बड़े मंदिर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में होने जा रहा हैं। पत्रिका विमोचन के समय अनिल गोधा,लाभचंद पटवारी, निर्मल सोनी, प्रेमचंद सोनी, वर्धमान ठग, मनोज ठग, मुकेश सोनी, प्रकाश लुहाड़िया, आशीष छाबड़ा, सुनील काला, सुरेश, मनोज पटवारी समेत बड़ी संख्या में दिगंबर जैन समाज बिजौलियां के लोग मौजूद रहे।

चेहरा पत्थर से कुचला हुआ, हाथों में मेहंदी और टैटू, झाड़ियों में मिला युवती का शव

उदयपुर

(निसं.)। झाड़ियों में युवती का शव लहूलुहान अवस्था में खून से सना हुआ मिला। चेहरा बुरी तरह से कुचला होने के कारण पहचान में नहीं आ रहा है। आंख, नाक और मुंह में गहरे घाव थे। हाथ-पैर पर भी चोट के निशान थे। दोनों हाथों में मेहंदी लगी थी और बाएं हाथ पर '?' का टैटू बना हुआ था। ग्रामीण ने शव पड़ा हुआ देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी।

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बिसाऊ (झुंझुनू)

Ph. 01595-264210, Fax - 01595-264210
क्रमाक- 979

Email- bisau.jaipur@gmail.com
दिनांक- 20/05/2025

आपति विज्ञप्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा पट्टेशुद्धा भूमि के नामानतरण हेतु पालिका में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति / हितधारक / संस्था को कोई आपति हो तो आपति सूचना प्रकाशन के सात दिवस के अन्दर - 2 सुसंगत दस्तोवजों के साथ आपति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद मियाद गुजरने किसी आपति पर विचार नही किया जावेगा।

क्र.सं.	पत्रावली सं.	आवेदक का नाम व पता	भूखण्ड का पता	भूखण्ड का क्षेत्रफल	प्रयोजन
1	19 (LSG/BISSAU/ MUT/2025-26 /129883)	पवन कुमार वर्मा पुत्र जगदीश प्रसाद टेलर, वार्ड सं. 06 बिसाऊ	प्रिंसिपल बंगला रेलवे स्टेशन रोड़, वार्ड सं. 06 बिसाऊ	933.33 व.ग.	नामान्तरण

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बिसाऊ

सालासर में मैराथन दौड़ में दिखाया प्रतिभागियों ने उत्साह

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सालासर कस्बे में मंगलवार को राजस्थान लिंक डॉट कॉम के तत्वाधान में देश की एकता, अखण्डता व सम्प्रभुता व सैनिकों के सम्मान में मैराथन दौड़ का आयोजन हुआ। मैराथन सुबह 6 बजे अंजनी माता मंदिर के पास चूरू सांसद राहुल कस्वां व रतनगढ़ पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि हिम्मतसिंह ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। जिसमें युवक - युवतियों ने भाग लिया। मुख्य बाजार, बालाजी मंदिर के सामने से होते हुए सुजानगढ़ रोड़ स्थित श्री बालाजी गौशाला पहुंची। जहां पर युवक वर्ग में प्रथम स्थान पर हेमन्त, द्वितीय स्थान पर सुदांशु राव व तृतीय स्थान पर ओमप्रकाश रहा। बालिकाओं में प्रथम स्थान पर गायत्री शर्मा, द्वितीय स्थान पर ज्योति प्रजापत व तृतीय स्थान प्राप्त किया। अतिथियों ने विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मान किया। इस दौरान गौशाला अध्यक्ष रविशंकर पुजारी, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य व पूर्व जिलाध्यक्ष धर्मवीर पुजारी, डॉ. लादूसिंह राव, इमरान खान शोभासर, महावीरसिंह पार्वतीसर, हिम्मतसिंह मालासी, पूर्व सरपंच महेन्द्र ढुकिया, भवानीसिंह, ललित कौशिक, भरत सैन, मनीष सोनी, कुलदीप भास्कर सहित मैराथन प्रतिभागी मौजूद रहे।

तपस्वी संत मुनि जयकुमार ठाणा 2 का राजलदेसर में आगमन

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर/बीदासर। चूरू जिले के बीदासर से विहार कर युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य मुनिश्री जयकुमार अपने सहवर्ती संत मुनिश्री मुदित कुमार के साथ राजलदेसर की ओर मंगल प्रस्थान किया। प्रातःकाल विहार से पूर्व ही राजलदेसर के उत्साही श्रद्धालु मुनिश्री के दर्शनार्थ व मार्ग की सेवा में बीदासर पहुंच गए। मुनिश्री ने प्रातः लगभग 5.30 बजे बीदासर से प्रस्थान किया तो उनके दर्शन सेवा का लाभ लेते हुए श्रद्धालु भी गतिमान हुए। बीदासर से विहार कर मुनिश्री अनिल खारिया की फेक्ट्री ढढेरू पधारे। मुनिश्री का रात्रि कालीन प्रवास यहीं होगा। मुनिश्री जयकुमार जहां भी पधारते हैं धर्म की खूब प्रभावना करते हैं। लोग उनके विचारों से, वाणी के प्रभाव से खींचे चले आते हैं। जैन ही नहीं अजैन भी उनसे काफी प्रभावित होते हैं। मुनिश्री 21 मई को प्रातः लगभग 5.30 बजे विहार कर जैगणियां सूरजमल सिंह पधारेंगे और रात्रि कालीन प्रवास वहीं करेंगे। 22 मई को प्रातः लगभग 5.30 बजे विहार कर लगभग 7.15 बजे राजलदेसर पूर्व वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र, (पुनमचंद जी बैद की हवेली, पुराने ठिकाणे) पधारेंगे। मुनिश्री के 27 दिवसीय प्रवास काल में यथासंभवतया नमस्कार महामंत्र अनुष्ठान,भक्तामर अनुष्ठान, अभिनव सामायिक, धम्म जागरणा, कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित होंगे।

शुल्क वसूली पूरी, शौचालय की सुविधा अधूरी

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। स्वच्छ भारत मिशन में कस्बे में सात सुलभ शोचालय बने है। जिसमें रखरखाव के नाम पर 15-20 हजार रूपये मासिक भुगतान उठ रहा है। लेकिन इनकी जमीनी स्तर पर देखें तो इनमें पानी की सुविधा ही नहीं है और सुलभ शौचालय की टूटे हुए और गन्दे हो रखे हैं जो बदबू आती है। श्री अन्नपूर्णा रसोई के पास बना एक शोचालय की सफाई नहीं होने से श्री अन्नपूर्णा रसोई में खाना खाने आने वाले लोगों को इस बदबू में बैठ कर खाना खाने की मजबूरी है। एन एच 11 बस स्टैण्ड पर बने सुलभ शौचालय में सीट टूटी है और गन्दी से भरा है। महिलाओं को लघुशंका करने का कोई अन्य स्थान नहीं होने के कारण काफी परेशानी होती है। यदि आमजन इसका उपयोग करें तो कैसे करें? कहीं जगह देखने पर इनके ताले लगे हैं। पालिका प्रशासन और ठेकेदार सांठगांठ कर सफाई के नाम पर हजारों रूपये महिने का राजस्व को चूना लगाया जा रहा है।

राजकीय महाविद्यालय गंगाशहर में परिचर्चा आयोजित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। । राजकीय महाविद्यालय गंगाशहर में ऑपरेशन सिंदूर और भारत-पाक संबंधों के बदलते समीकरण' विषय पर मंगलवार को परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में विद्यार्थियों ने ऑपरेशन सिंदूर के विभिन्न आयामों पर विचार प्रस्तुत किए। प्राचार्य डॉ बबीता जैन ने ऑपरेशन सिंदूर के प्रभाव और परिणाम स्वरूप वैश्विक फलक पर भारत के बढ़ते कद व विश्व राजनीति में भारत की स्थिति पर चर्चा की। परिचर्चा के सूत्रधार डॉ. प्रेम रतन हटीला ने भारत-पाक संबंधों की पृष्ठभूमि और वर्तमान में बदलते समीकरण और उसकी प्रासंगिकता पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। डॉ खुशाल पुरोहित ने हिंदू मुस्लिम सहभाव के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की चर्चा की। परिचर्चा में विद्यार्थियों से देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत रहते हुए देश की संवेदनशील सूचनाओं को सोशल मीडिया पर साझा ना करने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम में डॉ संतोष बैद,डॉ समीक्षा व्यास, डॉ लीला कुमारी व रौनक सोलंकी ने भी विचार रखे।

झुंझुनूं में बढ़े मौसमी बीमारियों के मरीज

बीडीके हॉस्पिटल की ओपीडी में रोजाना आ रहे 4 हजार रोगी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं जिले के राजकीय बीडीके अस्पताल की ओपीडी में इन दिनों मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यहां रोजाना 2500 से 3 हजार मरीज आ रहे हैं। ज्यादातर मरीज उल्टी-दस्त और अन्य मौसमी बीमारियों से पीड़ित हैं। हालांकि अभी तक लू या हीटस्ट्रोक के कारण गंभीर स्थिति में किसी मरीज को भर्ती कराने की नौबत नहीं आई है। पीएमओ व वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जितेन्द्र भाम्बू ने बताया कि तापमान लगातार बढ़ रहा है। गर्म हवा चल रही है। बीमारियां तो बढ़ेंगी। आमजन सतर्क है। ऐसे में अभी हालात नियंत्रण में हैं।

लू-तापघात मरीजों के लिए खास इंतजाम

डॉ. जितेन्द्र भाम्बू ने बताया कि गर्मी में लू-हीटस्ट्रोक से पीड़ित रोगियों के लिए अस्पताल में खास इंतजाम हैं। 10 बेड वाला स्पेशल वार्ड बनाया है। यहां एसी लगाया है। रोगियों के लिए आइस पैक भी तैयार हैं। इमरजेंसी में डॉक्टर तैनात हैं। ओपीडी में 10 फिजिशियन और 12 शिशु रोग विशेषज्ञ सेवाएं दे रहे हैं।

गर्मी से बचाव करें, तुरंत लें इलाज

ये लक्षण दिखें तो हॉस्पिटल पहुंचें- डॉ. भाम्बू ने बताया कि लू या तापघात के प्रारंभिक लक्षण सिरदर्द, चक्कर आना, उल्टी, तेज प्यास, गले का सूखना, कम पेशाब आना, सांस व हृदयगति तेज होना आदि हैं। इन लक्षणों के प्रकट होते ही तत्काल चिकित्सकीय परामर्श लें।

बचने के लिए करें ये उपाय

अधिक पानी पीएं, पानी वाले फल जैसे खरबूजा, संतरा, अंगूर आदि खाएं, तरल पेय जैसे नींबू पानी, नारियल पानी, जूस का सेवन करें, सूती व ढीले कपड़े पहनें। साथ ही, दोपहर 11 बजे से शाम 5 बजे तक तेज धूप से बचें।

इन गंभीर लक्षणों को न करें नजरअंदाज

डॉ. भाम्बू ने कुछ अत्यधिक गंभीर लक्षणों के प्रति सचेत किया, जिन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति की त्वचा बहुत गर्म, सूखी और स्याह लाल हो जाए, सिर में तेज दर्द हो, सांस या हृदयगति अत्यधिक तेज हो, पेशाब न आए, दौरे पड़ें या व्यक्ति बेहोश हो जाए, तो यह अत्यधिक गंभीर स्थिति हो सकती है। ऐसे मामलों में तत्काल आपातकालीन इकाई में ले जाना आवश्यक है।

झुंझुनूं के सरकारी अस्पताल में हो सकेगी कानों की जांच

श्रवण बाधितों के लिए 'बेरा' मशीन शुरू, मरीजों को मिलेगी राहत

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राजकीय बीडीके अस्पताल में श्रवण बाधिता की जांच के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण 'बेरा' मशीन अब पूरी तरह से क्रियाशील हो गई है। यह सुविधा जिले में केवल इसी अस्पताल में उपलब्ध है, जिससे श्रवण बाधित रोगियों और प्रमाण पत्र चाहने वाले आमजन को बड़ी राहत मिलेगी। पीएमओ व वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जितेंद्र भाम्बू ने बताया कि 'बेरा' मशीन के उपकरणों में खराबी के कारण यह पिछले कई महीनों से बंद पड़ी थी। उपकरणों की मरम्मत और सुधार कार्य पूरा होने के बाद, मशीन को फिर से चालू कर दिया गया है। डॉ. भाम्बू ने बताया कि वर्तमान में प्रतिदिन 1 से 2 व्यक्तियों की जांच की जा रही है और लंबित प्रतीक्षा सूची को भी जल्द ही निपटाया जाएगा। श्रवण बाधिता से ग्रस्त व्यक्तियों को दिव्यांग प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अक्सर काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। 'बेरा' जांच इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह श्रवण क्षमता का सटीक आकलन प्रदान करती है। आमजन का मानना है कि 'बेरा' जांच से सुनने की क्षमता का एकदम सही पता चल जाता है और सही श्रवण यंत्र (हियरिंग एड) लगाने में भी मदद मिलती है।

बगड़िया अस्तपाल में जलसेवा कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय राजकीय बगड़िया चिकित्सालय परिसर में लालचंद, प्रकाशचंद, विमल कुमार, मनोज कुमार, नवीन कुमार पाटनी परिवार शिलोंग के सौजन्य से सुजलांचल विकास मंच समिति के तत्वावधान में जल सेवा कार्यक्रम शुरू किया गया। जिसका शुभारंभ पाटनी परिवार के मनोज कुमार पाटनी, अंकित पाटनी, पीएमओ डॉक्टर पुरूषोतम करवा, फिजीशियन डॉक्टर दिलीप सोनी, समिति सचिव विनीत कुमार बगड़ा की ओर से किया गया। समिति उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद पाटनी ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी समिति की ओर से रोगियों व उनके साथ में आए परिजनों को शीतल जल उपलब्ध करने के लिए ये सुविधा चिकित्सालय परिसर में शुरू की गई है। समिति की ओर से रेलवे स्टेशन पर भी जल सेवा निरंतर की जा रही है। साथ ही सार्वजनिक स्थानों के साथ नगर के विभिन्न मोहल्लों में टैंकर के माध्यम से जलापूर्ति की जा रही है।

नरेश मीणा की जमानत पर सस्पेंस बरकरार, कोर्ट में पेशी के बाद बोले- 'भ्रष्ट सिस्टम है जहां जाति देखकर...'

टोंक/जयपुर टाइम्स

(निस)। राजस्थान विधानसभा उपचुनाव के दौरान एसडीएम अमित चौधरी को थप्पड़ मारने वाले निर्दलीय उम्मीदवार नरेश मीणा पिछले 6 महीने से जेल में बंद हैं. उन्हें अब तक जमानत नहीं मिल पाई है. मंगलवार सुबह पुलिस की कड़ी सुरक्षा में नरेश मीणा को टोंक कोर्ट लाया गया, जहां उनकी जमानत याचिका पर सुनवाई हुई. हालांकि जमानत पर कोई फैसला नहीं हो सका और कोर्ट ने अगली तारीख दे दी.

सब जगह भ्रष्ट सिस्टम है...

पेशी के बाद कोर्ट परिसर में मीडिया से बात करते हुए नरेश मीणा ने प्रशासन और न्यायपालिका पर गंभीर आरोप लगाए. उन्होंने कहा, 'सब जगह भ्रष्ट सिस्टम है. पिछले 6 महीने से जेल में सजा काट रहा हूं. मुकदमा 323/32 का बनता है, लेकिन भ्रष्ट सिस्टम की वजह से कुछ ही चल रहा है. न्याय की देवी की आंखों से पट्टी इसीलिए हटाई गई ताकि जात और धर्म देकर न्याय दिया जा सके.' इतना कहने के बाद पुलिसकर्मी ने नरेश मीणा को पुलिस बस में बैठा दिया और फौरन वहां से रवाना हो गए.

थप्पड़ कांड केस में चार्ज बहस पूरी

बताते चलें कि थप्पड़ कांड मामले की मुकद्दमा संख्या 166/24 में चार्ज बहस पहले ही पूरी हो चुकी है. आज उस मामले में जमानत पर फैसला आने की संभावना थी. साथ ही, मुकदमा संख्या 167/24 में आज चार्ज बहस होनी थी. लेकिन नरेश मीणा को कोर्ट से राहत नहीं मिल सकी.

जयपुर में आंदोलन की चेतावनी

14 नवंबर से जेल में बंद नरेश मीणा की जमानत के लिए उनके समर्थकों ने जयपुर जाकर आंदोलन करने का ऐलान किया था. हालांकि आंदोलन शुरू होने से पहले ही सीएम भजनलाल शर्मा ने नरेश मीणा के पिता से मुलाकात करके इसे वापस करवा दिया था. इसके बदले में सीएम ने नरेश मीणा को जेल से निकलने के लिए हर संभव मदद का वादा किया था. पिछली पेशी के बाद नरेश मीणा ने आरोप लगाया था कि सीएम अपना वादा भूल गए हैं. अब धैर्य जवाब दे रहा है. अगर जल्द उनकी जमानत नहीं होती है तो आंदोलन शुरू किया जा सकता है. नरेश मीणा के वकील फतेह सिंह मीणा ने बताया- राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर में 21 और 23 मई को जमानत याचिका पर सुनवाई होगी। हाईकोर्ट के न्यायाधीश से अपील की जाएगी कि यह मामला सामान्य मारपीट का है। पुलिस ने बेवजह मामले को गंभीर धाराओं में दर्ज किया।

12 करोड़ की हेरोइन के साथ 5-तस्कर गिरफ्तार, 7 विदेशी पिस्टल, 13 मैगजीन और 32 जिंदा कारतूस भी बरामद

श्रीगंगानगर/जयपुर टाइम्स

(निस)। भारत और पाकिस्तान के बीच ऑपरेशन सिंदूर के बाद कोल्डवार जारी है। राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में पुलिस हाई अलर्ट पर है और सुरक्षा एजेंसियों ने भी निगरानी बढ़ा दी है। इस बीच श्रीगंगानगर में पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स और हथियार तस्करी के बड़े गिरोह का भंडाफोड़ किया है। कोतवाली और जवाहरनगर थाना पुलिस ने 2 अलग-अलग कार्रवाइयों को अंजाम देते हुए 5 नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों के कब्जे से 2 किलो 183 ग्राम हेरोइन, 7 पिस्टल बरामद की है, जिनमें 6 विदेशी ग्लॉक पिस्टल और 1 जिगाना पिस्टल है। जबकि 13 मैगजीन और 32 जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए। पुलिस के अनुसार, जब्त हेरोइन की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 12 करोड़ रुपए आंकी गई है। गौरव यादव ने बताया- आरोपी अमृतसर और मलोट से हेरोइन और हथियार लाकर श्रीगंगानगर में सप्लाई करने की तैयारी में थे। पुलिस ने समय रहते गिरोह को पकड़ लिया। इससे बड़ी आपराधिक

वारदात टल गई। आरोपियों के पास से एक स्विफ्ट कार और एक मोटरसाइकिल भी जब्त की है। इनका इस्तेमाल तस्करी समेत अन्य अपराधों में किया जा रहा था। पूछताछ में कई अहम जानकारियां सामने आई हैं। पुलिस के अनुसार, गिरोह के पंजाब और अन्य सीमावर्ती राज्यों से तार जुड़े होने की संभावना है। इस ऑपरेशन में जिला स्पेशल टीम के कॉन्स्टेबल अश्विनी की भूमिका अहम रही। उनकी सतर्कता से यह गिरोह पकड़ा गया। डीआईजी गौरव यादव ने कहा कि श्रीगंगानगर जैसे संवेदनशील इलाके में पुलिस चौकसी बढ़ा दी गई है।

डॉ. कच्छावा समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता नियुक्त

बीकानेर(निस)। । राजकीय डूंगर महाविद्यालय में इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कच्छावा को महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में कला संकाय अधिष्ठाता नियुक्त किया गया है। डॉ. कच्छावा शिक्षा जगत में विशिष्ट पहचान रखते हैं।

खोया - दस्तावेज़

मैं, दलिप सिंह पुत्र श्री प्रहलाद सिंह, निवासी बी-51, करधनी स्कीम, गोविंदपुरा, कालवाड़ रोड, जयपुर - 302012, अपने मकान संबंधित मूल दस्तावेज़ों के गुम होने की सूचना देना चाहता हूँ। यह संपत्ति प्लॉट संख्या-373, तारा नगर-ए, झोटवाड़ा, जयपुर स्थित है, जिसका आवंटन दिनांक 22-04-2000 को जयपुर विकास प्राधिकरण (JDA) द्वारा किया गया था। मई 2025 में घर शिफ्टिंग के दौरान ये दस्तावेज़ गुम हो गए। काफी खोजबीन के बाद भी दस्तावेज़ नहीं मिले। दस्तावेज़ न तो किसी को दिए गए हैं, न बेचे गए हैं। यह विज्ञापन प्रमाण हेतु दिया जा रहा है।

भारत-पाक तनाव से पर्यटन को झटका, करोड़ों का नुकसान,80 फीसदी बुकिंग्स रद्द

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव का सीधा असर राजस्थान के पर्यटन उद्योग पर पड़ रहा है। हाल ही राज्यभर के होटलों में 80 फीसदी बुकिंग्स रद्द की जा चुकी हैं। इससे होटल और ट्रैवल इंडस्ट्री को करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। बुकिंग रद्द करने वालों में सबसे अधिक विदेशी पर्यटक शामिल हैं।

होटल खाली, पर्यटक नदारद

राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सन्नाटा सा पसरा है। शेखावाटी जिलों- झुंझुनूं और सीकर में पर्यटक कम हो गए हैं। इसके साथ

ही राजधानी जयपुर में भी पर्यटकों की संया में भारी गिरावट दर्ज की गई है। पिछले माह की तुलना में इस माह विदेशी पर्यटक आधे से भी कम रह गए हैं। स्थानीय पर्यटकों की संया भी लगातार घट रही है।

6 माह के लिए होता है ऑफ सीजन

एक अप्रेल से लेकर सितंबर तक 6 माह के लिए पर्यटन का ऑफ सीजन होता है। इस दौरान विदेशी पर्यटकों राजधानी में कम आते हैं। इस बार मौसम ठीक रहने के चलते विदेशी पर्यटकों की आवक अप्रेल की शुरुआत तक ठीक रही, लेकिन पहलगाम हमले के बाद यहां पर्यटकों की संख्या में गिरावट हुई।

इनका कहना है

राज्यभर के होटलों में करीब 80त्न बुकिंग्स रद्द हो चुकी हैं। वर्तमान में 10 फीसदी कमरे भी बुक नहीं हो रहे हैं। इससे पर्यटन व्यवसाय को करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। हम उम्मीद करते हैं कि स्थिति जल्द सामान्य होगी।

अरविन्द पारीक, पर्यटन व्यवसायी

विदेशी पर्यटक बुकिंग रद्द कर रहे हैं और होटल संचालक उन्हें पूरा रिफंड दे रहे हैं। इस समय हमारी प्राथमिकता पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

मधुसुधन खेमाणी पर्यटन विशेषज्ञ, मण्डावा

घर में घुसकर चोरी करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के वार्ड 8 में 19 व 20 फरवरी की मध्यरात्रि को कल्याणसिंह राजपूत के घर में घुसकर नगदी व आभूषण चोरी करने वाले चार आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मंगलवार को मामले की जानकारी देते हुए बताया कि वार्ड 8 निवासी कल्याणसिंह राजपूत ने मामला दर्ज करवाया था कि 19 और 20 फरवरी की मध्यरात्रि को मेरे घर में अज्ञात चोर घुसे और नगदी व आभूषण चोरी कर ले गए। जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले की जांच एएसआई गोरुराम प्रजापत को सौंपी। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई के निर्देशन में एएसआई गोरुराम प्रजापत ने मामले में कार्रवाई करते हुए वार्ड 15 निवासी 21 वर्षीय गौरवसिंह पुत्र मानसिंह राजपूत, वार्ड 9 निवासी 25 वर्षीय दीपक पुत्र नोरतनमल नाई, वार्ड 20 निवासी बसंत सोनी पुत्र जुगल किशोर सोनी और वार्ड 19 निवासी 21 वर्षीय गोविंद धाणका उर्फ मलिंगा पुत्र हरिराम धाणका को गिरफ्तार किया गया है। थानाअधिकारी ने बताया कि इस कार्रवाई में एएसआई गोरुराम प्रजापत व कांस्टेबल लीलाधर की विशेष भूमिका रही। पुलिस की ओर से आरोपियों से अन्य चोरियों की वारदातों के बारे में पूछताछ की जा रही है।

खेजड़ी के पेड़ से फांसी का फंदा लगाकर युवक ने की आत्महत्या

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। भानीपुरा तहसील के बादड़िया गांव की रोही में मानसिक परेशान 29 वर्षीय युवक ने खेजड़ी के पेड़ से फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। भानीपुरा पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल दौलतराम ने मंगलवार को मामले की जानकारी देते हुए बताया कि बादड़िया निवासी बीरजाराम मेघवाल ने रिपोर्ट दी है कि मेरा एक पुत्र माडा उर्फ राजूराम उम्र 29 साल जो कि शादीशुदा था। जिसकी पत्नी बीमार रहती थी। जिसका इलाज बीकानेर पीबीएम में चलता था। इलाज के चलते उसकी पत्नी की 14 महीने पहले मृत्यु हो गई थी। जिसके कारण मेरा पुत्र माडा उर्फ राजूराम शराब पीने लगा व मानसिक रूप से परेशान रहता था। सोमवार को उसने ज्यादा शराब पी रखी थी। मैं और मेरा पुत्र हमारे खेत में बनी ढाणी में रहते हैं। मंगलवार सुबह मैं अपनी पड़ोसी की ढाणी से कुछ लाने के लिए गया था वापस आया तो देखा कि मेरे पुत्र माडा उर्फ राजूराम ने खेत में खेजड़ी के पेड़ से फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। रिपोर्ट में बताया कि मुझे और किसी प्रकार का कोई शकसूबा नहीं है। वहीं पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के सुपुर्द कर रिपोर्ट के आधार पर मर्ग दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

5 साल से फरार वारंटी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर की पुलिस ने एक फरार वारंटी को गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव के निर्देश पर चल रहे एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई के नेतृत्व में जिला स्पेशल टीम ने आरोपी जगदीश नाथ को गिरफ्तार किया। जगदीश नाथ पुत्र ओमनाथ को कच्चा बस स्टैंड के पीछे रहता है। 2019 के एक मामले में वांछित अपराधी था। केस नंबर 392/2019 में आरोपी पिछले 5 सालों से फरार चल रहा था। गिरफ्तारी में कांस्टेबल संजय कुमार और विनोद कुमार की अहम भूमिका रही। जिला पुलिस अधीक्षक ने टीम के काम की सराहना की। साथ ही अभियान को और प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। पुलिस की लगातार कार्रवाई से क्षेत्र के अन्य फरार अपराधियों में खलबली मच गई है। पुलिस की इस सक्रियता से आम लोगों में सुरक्षा की भावना बढ़ी है।

पुलिस पर जानलेवा हमला व राजकार्य में बाधा का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर की पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पुलिस व तहसील प्रशासन की टीम पर जानलेवा हमला करने और राजकार्य में बाधा डालने वाले भादासर निवासी मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि 9 मई को भादासर गांव में पथरगडी करवाने गई पुलिस व तहसील प्रशासन की टीम पर ट्रैक्टर दौड़ाकर जानलेवा हमला करने और राज कार्य में बाधा पहुंचाने वाले 3 आरोपियों को पुलिस ने पहले गिरफ्तार किया था। वहीं अब मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी भादासर निवासी 40 वर्षीय राकेश कुमार पुत्र रुघाराम जाट को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी ने बताया कि आरोपी को अब न्यायालय में पेश कर न्यायालय के आदेश पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

नए विद्युत ट्रांसफार्मर लगाने पर विवाद, पुलिस बुलानी पड़ी

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर के वार्ड संख्या 28 व 29 के बीच पुलिया संख्या एक के पास जोधपुर डिस्कॉम की ओर से लगाए जा रहे नए ट्रांसफार्मर को लेकर मंगलवार को विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि डिस्कॉम के अधिकारियों को मौके पर पुलिस बुलानी पड़ी। करीब एक घंटे की समझाइश के बाद ट्रांसफार्मर को स्थापित किया गया। मामले के अनुसार शहर के वार्ड संख्या 28 व 29 में गर्मी के इस मौसम में वोल्टेज की काफी समस्या बनी हुई थी और लोड अत्यधिक होने के कारण लोगों के घरों में कम वोल्टेज की समस्या बनी हुई थी और बार-बार ट्रिपिंग की शिकायत थी। इस समस्या के निदान के लिए वार्ड संख्या 28 के पार्षद नंदकिशोर भार्गव ने विभाग से नया ट्रांसफार्मर लगाने की मांग कर रहे थे। जिस पर विभाग ने कुछ दिनों से नया ट्रांसफार्मर लगाने के लिए पुलिया संख्या एक के पास जगह चिन्हित कर फाउंडेशन तैयार किया और मंगलवार को ट्रांसफार्मर लगाने के लिए पहुंच गए। जैसे ही उक्त स्थान के सामने निवास करने वाले कुछ लोगों ने ट्रांसफार्मर देखा, तो वे इसके विरोध में उतर आए। पूर्व पार्षद पवन गुर्जर सहित वार्ड के कई लोगों ने इसका विरोध जताते हुए बताया कि बारिश के दिनों में उक्त स्थान पर करंट आने की संभावना और बढ़ जाएगी। क्योंकि पूर्व में उक्त स्थान के पास ट्यूबवेल की एक डीपी लगी हुई है, जिसमें बारिश के दिनों में करंट आता है और अब 67 केवीए का ट्रांसफार्मर लग जाने से समस्या और गंभीर बन जाएगी तथा जनहानि होने की संभावना रहेगी। वहीं दूसरी ओर पार्षद भार्गव सहित मोहल्ले के कई लोगों ने बताया कि इस ट्रांसफार्मर के लगने से कम वोल्टेज की समस्या से राहत मिलेगी और थ्री फेस के कनेक्शन अब आसानी से मिल जाएंगे। करीब एक घंटे तक चले विवाद के दौरान मौके पर पुलिस को बुलाया गया और समझाइश के बाद नया ट्रांसफार्मर लगाया गया।

श्मशान भूमि से अतिक्रमण हटाने की मांग, आंदोलन की दी चेतावनी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के गांव डालमाण में सांसी समाज के शमशान भूमि पर किए गए अतिक्रमण को हटाने की मांग को लेकर सांसी समाज के लोगों ने तहसीलदार को ज्ञापन देकर समस्या के समाधान की मांग की है। सांसी समाज के लोगोंकी ओर से दिए गए ज्ञापन में बताया कि खसरा नंबर नया 254 व पुराना 195 की भूमि पर हमारे पूर्वजों की छतरी बनी हुई है। जिसमें सांसी समाज का शव दाह स्थान बना हुआ है। इस भूमि पर हमारे गांव के ही बजरंगसिंह पुत्र उम्मेद सिंह राजपूत व हेमू सिंह पुत्र नानू सिंह राजपूत की ओर से अवैध रूप से कब्जा कर रखा है। सांसी समाज के शव दाह स्थान पर अवैध रूप से कब्जा कर उक्त लोगों की ओर से जबरन हड़पने का प्रयास किया जा रहा है। पहले भी मुख्यमंत्री, जिला कलेक्टर, जिला पुलिस अधीक्षक, एसडीएम सरदारशहर व तहसीलदार को ज्ञापन देखकर अवगत करवाया गया। लेकिन आज तक प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। इससे लग रहा है कि कोई राजनीतिक दबाव के कारण प्रशासन उक्त लोगों पर कार्रवाई नहीं करके अतिक्रमण हटाकर उक्त भूमि को मुक्त नहीं करवाना चाहता है। एक बाद फिर तहसीलदार को ज्ञापन देकर बताया गया कि मौके पर पटवारी को भेजकर उक्त भूमि का सीमा ज्ञान करवाकर अतिक्रमण मुक्त कर हमें राहत प्रदान की जाए। अन्यथा हमारी मांग पर अगर प्रशासन ने कोई संज्ञान नहीं लिया तो मजबूरन होकर उग्र आंदोलन किया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में कुंदन राम, श्यामलाल, मक्खन लाल, नोपाराम, सुरेश कुमार, बीरबलराम, सुगनराम सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

श्याम मंदिर का निर्माण, आर्थिक सहयोग कर रहे भामाशाह

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। श्री श्याम सेवा मित्र समिति राजलदेसर के तत्वावधान में ज़ोराराम माली की अध्यक्षता में निर्माणाधीन श्री श्याम मंदिर में एक मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमे समिति अध्यक्ष देवकिशन सुथार ने अब तक मंदिर निर्माण का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। देवकिशन सुथार ने बताया कि राजलदेसर के श्याम प्रेमियों की ओर से अभी तक मंदिर निर्माण के लिए क़रीब 58 लाख रुपये का सहयोग प्राप्त हुआ है। जिसमें भव्य रूप से मंदिर का निर्माण चालू है। करीब 2 करोड़ की लागत से मंदिर निर्माण होगा।समिति के सभी श्याम प्रेमी मीटिंग में उपस्थित्त रहे। सभी श्याम प्रेमियों को मंदिर निर्माण में सहयोग के लिए अध्यक्ष ने जिम्मेदारी सौंपी। मीटिंग में नेमीचंद सैनी, महावीर प्रजापत, श्रवण सैनी, दिनेश प्रजापत, धीरज सैनी, राधेश्याम पारीक, हनुमान सैनी, रामा सोनी, प्रदीप पांडे, कालू जाट, तुलसीराम पांडे, राहुल सैनी, पड़ित ब्रजेश दाधीच, शिवा गोड़ आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का गांधी चौक पर धरना प्रदर्शन जारी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के गांधी चौक पर तहसील कार्यालय के आगे राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के बैनर तले क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान को लेकर 30 दिनों से कार्यकर्ताओं की ओर से धरना दिया जा रहा हैं। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के कार्यकर्ताओं की ओर से प्रशासन को क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर ज्ञापन दिए गए। लेकिन राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी की 9 सूत्रीय मांगों पर प्रशासन की ओर से कई बार वार्ता की गई लेकिन समस्या का समाधान नहीं होने पर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के कार्यकर्ताओं की ओर से धरना लगातार दिया जा रहा है। प्रचंड गर्मी में जहां राज्य सरकार आमजन, पशु पक्षियों की सुविधाओं को लेकर स्थानीय प्रशासन को आदेश जारी किए गए हैं। वहीं प्रचंड गर्मी में कार्यकर्ता गांधी चौक पर अपनी विभिन्न मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। फिर भी प्रशासन की ओर से उनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया जा रहा हैं। जिससे प्रशासन के खिलाफ कार्यकर्ताओं में आक्रोश देखा जा रहा है। किसान नेता रूपचंद सारण राजास ने बताया कि प्रचंड गर्मी में क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर मजबूर होकर धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। लेकिन प्रशासन की ओर से इस पर कोई ठोस संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। अगर प्रशासन ने जल्द ही समस्याओं का समाधान नहीं किया तो मेगा हाईवे सड़क पर जाम लगाकर उग्र आंदोलन किया जाएगा। धरने पर बैठे कार्यकर्ताओं की ओर से तहसीलदार को एक बार फिर ज्ञापन देकर समस्याओं के समाधान की मांग की गई है। कार्यकर्ताओं की ओर से बताया गया कि हमारी कोई बड़ी मांग हमारी नहीं है। बिजली, पानी व सड़क की मांग भी प्रशासन पूरी नहीं कर रहा है। धरने पर अध्यक्ष सांवरमल जाखड़, रूपचंद सारण राजास, राकेश चौधरी, नगर अध्यक्ष धीरेंद्र सैनी, राजूराम नेण सोमासर, हेतराम मुहाल, रामचंद्र, बलबीर, धनाराम, अमराराम, हेतराम, भगवानाराम, लेखराम, केशाराम, नरेश जाट, मोहनराम, गिरधारीलाल, इमीचंद जाट सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे।

पेयजल किल्लत से अधिकारियों को करवाया अवगत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव ठरड़ा में पेयजल किल्लत से परेशान लोग जलदाय विभाग के अधिशाषी अभियंता कार्यालय पहुंचे और एक्स. ईएन. कैलाश माली को समस्या से अवगत करवाया। गांव के लालचंद गुर्जर, जगदीश गुर्जर, नरेंद्र गुर्जर, छगन मेघवाल, ओमप्रकाश मेघवाल, दिलीपसिंह, मोहनसिंह, शंकर गुर्जर, विक्रम आदि ने बताया कि गांव में पेयजल किल्लत है और कई जगहों पर पाईप लाईन का अभाव है। इस पर अधिकारी कैलाश माली ने कहा कि गांव में रोज दो पानी टेंकर भेजे जाने की व्यवस्था की जा रही है। पाईप लाईन के मुद्दे पर आपणी योजना के एक्सईएन जितेंद्र जांम ने बताया कि अमृत योजना के दूसरे फेज में नई पाईप लाईन डलवाने का आश्वासन दिया।

पशुओं के स्वास्थ्य और सुविधाओं की जांच

सरदारशहर में गौशालाओं का निरीक्षण, हीट वेव से बचाव के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। जिले में जिला कलेक्टर और संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग की ओर से गठित दल ने विभिन्न गौशालाओं का निरीक्षण किया। सरदारशहर के तहसीलदार रतन लाल मीणा और पशुपालन विभाग के अधिकारियों ने कामधेनु गौशाला, बेजासर, भादासर उत्तरादा, बंधनाऊ, भोजूसर उपाधियान, सवाई बड़ी की गौशालाओं का दौरा किया। निरीक्षण टीम ने गौशालाओं में पशुओं के लिए चारा, पानी, छाया की व्यवस्था और साफ-सफाई की जांच की। साथ ही गौशालाओं के रिकॉर्ड का भी निरीक्षण किया। उपनिदेशक पशुपालन विभाग डॉ प्रवीण शर्मा ने गौशाला संचालकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। डॉ अजय कुमार चौहान ने पशुओं को संतुलित आहार देने की सलाह दी। डॉ ख्यालीराम सांडेला ने पशुओं में डीवरमिंग और टीकाकरण के बारे में जानकारी दी। पशुधन निरीक्षक कृष्ण कुमार, बाबूलाल, पवन कुमार, धर्मेंद्र सारण और किशोर सिंह पुरोहित ने पशु गणना का कार्य किया। डॉ किशन कुमार ने प्रपत्र 5 और अन्य आवश्यक दस्तावेजों की जांच की। इस दौरान गौशालाओं के प्रतिनिधि बनवारीलाल जांगिड़, रामचंद्र जाखड़, भवरसिंह, गोवर्धनलाल उपाध्याय, भैराराम और मोहनलाल वर्मा आदि मौजूद रहे।

विभिन्न क्षेत्रों में आज तीन घंटे बाधित रहेगी विद्युत आपूर्ति

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। 132 केवी जीएसएस पर विद्युत तंत्र के रखरखाव कार्य के कारण बुधवार को प्रातः 6 से 9 बजे तक 33 केवी औद्योगिक क्षेत्र फीडर, 33 केवी मेडिकल कॉलेज फीडर, 33 केवी सीटी फीडर व 33 केवी करणपुरा फीडर से जुड़े हुए समस्त 11 केवी के फीडर बंद रहेंगे। जोधपुर डिस्कॉम के अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी पवन कुमार शर्मा ने बताया कि इस कारण संपूर्ण चूरू शहर, औद्योगिक क्षेत्र, मेडिकल कॉलेज व 33 केवी करणपुरा से जुड़े 11 केवी घांघू, सिरसला, करणपुरा, दूधवाखारा, बालरासर, इंद्रपुरा, कड़वासर से जुड़े हुए समस्त विद्युत उपभोक्ताओं की विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।

नि:शुल्क नैत्र चिकित्सा व परामर्श शिविर में 98 रोगियों की जांच

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राजस्थान पेंशनर समाज की स्थानीय शाखा की ओर से नि:शुल्क नैत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन राजकीय पीसीबी स्कूल में किया गया। रेखाराम मेहरड़ा ने बताया कि शिविर डॉ महेंद्र चौहान की टीम आयोजित कैंप में मनसा ए एसजी आई हॉस्पिटल सीकर के डॉ अमित शर्मा व पवन कुमार सोनी, धर्मपाल चिकित्सा टीम की ओर से 98 रोगियों की नेत्र की जांच की व परामर्श दिया गया। दवाई एवं जांच सभी नि:शुल्क जांच की गई। जिनमें 30 रोगियो को ऑपरेशन की सलाह दी गई। जिनमें 10 रोगियों को ऑपरेशन करने के लिए अपने साथ हॉस्पीटल सीकर को.ले गए। पेंशनर समाज शाखा सुजानगढ़ के अध्यक्ष रेखा राम मेहरड़ा, सुरजाराम डाबरिया मंत्री, विद्याधर पारीक वरिष्ठ उपाध्यक्ष, मन्ना लाल भींचर कोषाध्यक्ष, बजरंग लाल नाई, सोहनलाल गुर्जर, ओंकारा राम, मूलचंद माली, अर्जुन राम मेघवाल, दीपाराम, कन्हैया लाल सोनी, नथूराम मेहरड़ा, हरि सिंह जानू, भंवर लाल वीर का भी योगदान रहा। स्कूल प्रिंसिपल रणवीर सिंह महरिया प्रिंसिपल, रामेश्वर लाल खीचड़, सुख चेन सिंह, विपिन प्रजापत, अब्दुल सतार आदि ने शिविर को सफल बनाने में योगदान दिया।

विधायक पूसाराम गोदारा ने की जनसुनवाई, साढ़े चार करोड़ गबन का उठा मामला

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में रतनगढ़ विधायक पुसाराम गोदारा ने नगरपालिका भवन में जनसुनवाई की। नगरपालिका भवन में बारह बजे से 2 बजे तक हुई जनसुनवाई में पार्षद कम ही उपस्थित रहे। नगरपालिका में जनसुनवाई के दौरान अधिशाषी अधिकारी व सहायक प्रशासनिक अधिकारी जेकीराम गोयल नदारद रहे। सिर्फ कनिष्ठ अभियंता भरत गौड़ ही मौजूद रहे। उपस्थित पार्षदों की ओर से अधिशाषी अधिकारी के नदारद रहने और नगरपालिका में हुए साढे चार करोड़ रुपये के गबन का मामला जोरों पर उठा। जिस पर विधायक पुसाराम गोदारा की ओर से संज्ञान

लेकर जांच करने की बात कही। पालिका क्षेत्र में साफ सफ़ाई और पालिका के कर्मचारियों की समस्या रखी साथ ही बिजली निगम की ओर से अघोषित बिजली कटौती, कस्बे में पानी की समस्या, बड़े वार्डों में और छोटे वार्ड में निशुल्क टेकर व्यवस्था समान की गई जिसमें बड़े वार्डों में पानी के टेकर बढ़ाने की बात कही।विधायक ने उच्च अधिकारियों को पालिका में हुए भ्रष्टाचार की जांच करने के लिए कहा और आगे से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने को कहा। जन सुनवाई में लोगों को विधायक ने आश्वस्त किया और उनकी समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करने का आश्वासन दिया। आगामी मानसून सत्र को लेकर उपयुक्त व्यवस्था सुचारू रूप से करने का आश्वासन दिया। विधायक पुसाराम गोदारा ने वार्ता में बताया कि नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी पूर्व सूचना के बाद भी अनुपस्थित रहे, इसके बारे में जानकारी की जाएगी। हमारे अधिकार क्षेत्र में जो होगा कार्यवाही की जाएगी। राजकीय चिकित्सालय में रिक्त पदों पर बोले सरकार खुद चुस्त दुरुस्त नहीं है इसलिए प्रशासन भी चुस्त दुरुस्त नहीं है। हमारे पार्षदों की भी शिकायत आई कि हमारी सुनवाई नहीं कर रहा। इस जन सुनवाई कार्यक्रम में पालिका अध्यक्षा गंगा देवी, मंडल अध्यक्ष मोहम्मद जब्बार खोखर,पूर्व नेता प्रतिपक्ष मोहनलाल मेघवाल, पूर्व वाइस चेयरमैन ओमप्रकाश कटारिया, पार्षद भागीरथ रैगर, नबी बक्स निरवान, दानाराम मेघवाल, शरीफ बेहलीम, मिर्जा राम, पूर्व सरपंच मनफूल टांडी , हनुमान चोयल, असफाक बगड़, आरीफ़ खत्री, पूनमचंद गर्ग, पार्षद, पालिका के कनिष्ठ अभियंता, पालिका के स्टाफ और कस्बे के नागरिक मौजूद रहे।

क्रिकेट मैच पर सट्टा लगाते चार आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

2 लैपटॉप, 8 मोबाइल व लाखों का हिसाब किताब बरामद

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर की पुलिस ने कार्रवाई करते हुए क्रिकेट मैच पर सट्टा लगा रहे वार्ड 42 निवासी 28 वर्षीय शिवकुमार सुरेका पुत्र भागीरथ प्रसाद सुरेका, 55 वर्षीय प्रकाश पुत्र ओमप्रकाश अग्रवाल, 20 वर्षीय तिरुपति पुत्र प्रकाश अग्रवाल, वार्ड 13 निवासी 28 वर्षीय उमेश पुत्र बाबूराम ब्राह्मण को गिरफ्तार कर उनके पास से तीन लैपटॉप, 8 मोबाइल व लाखों रुपए का हिसाब किताब बरामद किया है। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर के जरिए सूचना मिलने पर ताल मैदान के पास एक हवेली में दबिश देकर क्रिकेट मैच पर सट्टा लगा रहे जिसे स्थानीय भाषा में क्रिकेट की बुक चलाना कहते हैं। मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है और उनके पास से तीन लैपटॉप 8 मोबाइल और लाखों रुपए का हिसाब किताब बरामद किया गया है। चारों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई जारी है। वहीं इस कार्रवाई में थाना अधिकारी मदनलाल बिश्नोई, एएसआई जयसिंह, कांस्टेबल नंदलाल डूडी, विनोद कुमार चौधरी, कुंदनमल, लीलाधर, सत्यप्रकाश मीणा की विशेष भूमिका रही हैं।

मुख्य सचिव सुधांश पंत ने किए सालासर बालाजी के दर्शन

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सिद्ध पीठ सालासर बालाजी धाम में मंगलवार दोपहर को राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव सुधांश पंत ने सालासर पहुंचकर बालाजी महाराज के दर्शन किए। सालासर पहुंचने पर हनुमान सेवा समिति अध्यक्ष सत्य प्रकाश पुजारी, पूर्व हनुमान सेवा समिति अध्यक्ष यशोदा नंदन पुजारी, पूर्व उपाध्यक्ष मनोज पुजारी, बबलू पुजारी, मांगीलाल पुजारी सहित अनेक पुजारी परिवार के लोगों ने दुपट्टा व बालाजी की प्रतिमा भेंटकर स्वागत किया। मुख्य सचिव ने बालाजी महाराज के नारियल बांधकर प्रदेश में खुशहाली की कामना की।

प्रीति जिंटा ने किए सालासर बालाजी के दर्शन

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सिद्ध पीठ सालासर बालाजी धाम में मंगलवार को पंजाब 11 टीम की मालकिन व बॉलीवुड एक्टर प्रीति जिंटा ने सालासर पहुंचकर बालाजी महाराज के दर्शन किए। सालासर पहुंचने पर नागरमल पुजारी, हनुमान सेवा समिति उपाध्यक्ष मनोज पुजारी, आलोक पुजारी, अरविंद पुजारी, योगेश पुजारी, हेमंत पुजारी, संदीप पुजारी, अर्जुन पुजारी सहित अनेक पुजारी परिवार के लोगों ने स्वागत किया। इसी क्रम में मंदिर के एक नंबर गेट पर चौधरी मिष्ठान भंडार पर सीकर बस यूनियन अध्यक्ष गोपाल ढाका ने भी प्रीति जिंटा को गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। इस दौरान प्रशासनिक अधिकारी भी मौजूद रहे।

नगरपरिषद के 11 कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस जारी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने नगरपरिषद कार्यालय का सोमवार की सुबह 10 बजकर 15 मिनट पर औचक निरीक्षण किया और अनुपस्थित मिले 11 कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस दिए गए हैं। तीन दिनों में अगर उपखंड अधिकारी के समक्ष उपस्थित होकर स्पष्टीकरण नहीं दिया गया, तो अनुशासनात्मक कार्यवाही की चेतावनी नोटिस में दी गई है। दरअसल सोमवार को सुबह उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने नगरपरिषद कार्यालय पहुंचकर कर्मचारियों की उपस्थिति जांची, जिस पर 20 में से दो कर्मचारी व. सहायक धनराज गोदारा, फायरमेन सुनील बिश्नोई अनुपस्थित मिले। बाकी कर्मचारी उपस्थित मिले। इसी प्रकार शहरी नरेगा कार्यालय का निरीक्षण करने पर नरपत जाट, मनीषा गणोलिया, भूपेंद्र सिंह, शरण आधार कुमावत अनुपस्थित मिले। वहीं कम्प्यूटर ऑपरेटर मनीष लोहिया, मोहित सेठी, देवेंद्र दाधीच, निकिता मोयल, कार्तिक जांगिड़ भी अनुपस्थित मिले। उपखंड अधिकारी की ओर से सभी 11 लोगों को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिए गए हैं। आपको बता दें कि नगरपरिषद में बने चैम्बर्स में आम तौर पर सारे अधिकारियों के कमरों के गेट बन्द रहते हैं, जिसके कारण लोगों को दिक्कत होती है। इसी प्रकार बिना सूचना के कर्मचारियों के गायब रहने से भी लोग परेशान हैं।

जिला प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी मनोज ढाका निलंबित

बीकानेर निदेशालय होगा मुख्यालय, अनुशासनात्मक जांच जारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) मनोज ढाका को निलंबित कर दिया गया है। इस संबंध में संयुक्त शासन सचिव एवं वरिष्ठ आईएएस अधिकारी मनीष गोयल ने आदेश जारी आदेश किए है। निलंबन आदेश में ढाका के विरुद्ध अनुशासनात्मक जांच प्रक्रियाधीन होने का उल्लेख किया गया है। इस निलंबन से शिक्षा विभाग में यह चर्चा का विषय बना हुआ है। निलंबन अवधि के दौरान मनोज ढाका का मुख्यालय निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर रहेगा। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि जांच पूरी होने तक वे किसी भी प्रकार के शासकीय कार्य में भाग नहीं ले सकेंगे। यह कदम शिक्षा विभाग में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में उठाया गया है। मनोज ढाका का अब तक का कार्यकाल प्रशासनिक दृष्टि से काफी सक्रिय रहा है। विशेष रूप से विद्यालय निरीक्षण के मामले में वे अग्रणी रहे हैं।

राजनीतिक नाराजगी की अटकलें

हालांकि, इस निलंबन के पीछे राजनीतिक कारणों की भी अटकलें लगाई जा रही हैं। सूत्रों का कहना है कि मनोज ढाका को मंडावा क्षेत्र के एक वरिष्ठ भाजपा नेता की नाराजगी का सामना करना पड़ा है। यह भी कहा जा रहा है कि हाल ही में हुई कुछ प्रशासनिक गतिविधियों को लेकर उक्त नेता असंतुष्ट थे, जिसके चलते यह मामला उच्च स्तर तक पहुंचा और अंततः निलंबन के रूप में सामने आया। यह निलंबन विभागीय हलकों में चर्चा का विषय बना हुआ है और इससे शिक्षा विभाग की आंतरिक राजनीति भी है।

भाजपा नेताओं में नोंकझोंक

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। नगरपरिषद कार्यालय सुजानगढ़ में गत दिवस को पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ की मीटिंग होने के बाद कुछ पार्षद और कार्यकर्ता आयुक्त के चैम्बर में मिले। जिसमें कार्यक्रम को लेकर पार्षद रेंवतमल पंवार ने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ पार्षदों से राजेंद्र जी का स्वागत सबसे पहले करवाया जाना चाहिए था, क्योंकि मीटिंग नगरपरिषद में थी। इसी प्रकार एक भाजपा पार्षद की ओर से सड़क की बात को लेकर आक्रोश जाहिर किया गया। वहीं एक पार्षद प्रतिनिधि ने भी विकास कार्यों को लेकर जिद बहस की। वहीं नेता प्रतिपक्ष और नगरपरिषद के एक वरिष्ठ पार्षद के नोंक झोंक हुई। जिस पर नगरपरिषद के आयुक्त सीट से उठकर चले गए। नेता प्रतिपक्ष जयश्री दाधीच की ओर से बताया गया कि विकास कार्यों को लेकर आपस में हम लोग बात कर रहे थे।

राज्यपाल कल आएंगे बीकानेर

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(नि.सं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे 22 मई को बीकानेर आएंगे। बागडे जयपुर से वायु मार्ग से रवाना होकर प्रातः 9.30 बजे नाल एयरपोर्ट पहुंचेंगे। राज्यपाल यहां से 9.35 बजे सड़क मार्ग से रवाना होकर 10.35 बजे देशनोक पहुंचेंगे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित कार्यक्रमों में शामिल होंगे। बागडे यहां से 12 बजे सड़क मार्ग से नाल एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान करेंगे?। वे दोपहर 1 बजे नाल एयरपोर्ट आएंगे और दोपहर 2.30 बजे स्टेट प्लेन से औरंगाबाद के लिए प्रस्थान करेंगे।

सीकर में गर्मी से पहली मौत, सड़क पर पड़ा मिला युवक का शव

जयपुर टाइम्स

सीकर(नि.सं.) सीकर में सिंगरावट से मोरड़ूंगा जाने वाले मार्ग पर सड़क किनारे एक अधेड़ व्यक्ति का शव पड़ा मिला, जिससे क्षेत्र में सनसनी फैल गई। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख्त पूर्णपुरा निवासी नेमाराम जांगिड़ (47 वर्ष) के रूप में की। धोद थानाधिकारी राकेश कुमार मीणा ने बताया कि मृतक नेमाराम मजदूरी का काम करता था और सोमवार दोपहर को अपने घर से निकला था। मंगलवार सुबह जब उसका शव मिला, तब तक वह काला पड़ चुका था।

प्रारंभिक जांच में यह अनुमान लगाया जा रहा है कि भीषण गर्मी में डिहाइड्रेशन के कारण उसकी मौत हुई होगी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई की और शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के बाद परिजनों को सौंप दिया। मौत के सटीक कारणों का पता लगाने के लिए पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। परिजनों ने रिपोर्ट दी है कि ज्यादा गर्मी और प्यासा रहने की वजह से नेमाराम की जान गई।

पुरानी रंजिश में ट्रक ड्राइवर का अपहरण, पुलिस ने कराया मुक्त

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(नि.सं.) धौलपुर के कोलारी थाना क्षेत्र में एक ट्रक ड्राइवर के साथ पुरानी रंजिश के चलते अपहरण और मारपीट का मामला सामने आया है। सोमवार रात करीब 11 बजे जागीरपुर गांव के पास एक ढाबे पर खाना खा रहे ड्राइवर को 12 लोगों ने अगवा कर लिया। पीड़ित ड्राइवर ने बताया कि दो साल पहले उसके वाहन से एक युवक की दुर्घटना हुई थी। ड्राइवर ने युवक का इलाज करवाया था। इसी बात की रंजिश रखते हुए आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया। अपहरण के बाद आरोपी उसे अपने घर ले गए। वहां उन्होंने ड्राइवर को पेड़ से बांधकर मारपीट की। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने कार्रवाई की। मंगलवार सुबह पुलिस ने ड्राइवर को आरोपियों से मुक्त कराया। पहले उसे बसई नवाब अस्पताल में भर्ती कराया। प्राथमिक इलाज के बाद उसे धौलपुर रेफर किया गया। दोपहर 12 बजे उसे जिला अस्पताल में भर्ती किया गया। कौलारी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बकानी में रैगर समाज की जमीन पर कब्जे पर विवाद

जयपुर टाइम्स

झालावाड(नि.सं.) झालावाड़ के बकानी में रैगर समाज ने मिनी सचिवालय में विरोध प्रदर्शन किया। समाज के लोगों ने अपनी खरीदी हुई जमीन पर अवैध कब्जे को लेकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। अखिल भारतीय रैगर महासभा के नेतृत्व में राजू रैगर ने बताया कि माचलपुर रोड पर स्थित खसरा नंबर 1052 की जमीन पर समाज का 50-60 वर्षों से मालिकाना हक है। वे इस जमीन को किराए पर देते आ रहे हैं। कुछ वर्ष पहले पीडब्ल्यूडी ने समाज से सहमति लेकर यहां सड़क का निर्माण किया था। शेष बची जमीन को समाज ने पत्थर स्टॉक के लिए किराए पर दी थी। राधेश्याम गांधी और उनके पुत्र ने इस भूमि के पीछे अवैध कब्जा कर आवासीय प्लानिंग काट दी है। समाज का आरोप है कि राधेश्याम गांधी प्रशासन से मिलीभगत कर उन्हें जमीन से बेदखल करने की कोशिश कर रहे हैं। प्लानिंग का रास्ता समाज की भूमि से निकाला जा रहा है। विरोध करने पर प्रशासन और पुलिस समाज के लोगों को जेल में डाल रही है। उन्हें धमकाया भी जा रहा है। पहले भी प्रशासन को इस मामले की जानकारी दी गई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। प्रशासन के इस रवैये से समाज में आक्रोश है। यदि इस पर कार्रवाई नहीं की जाती है, तो समाज आंदोलन करेगा।

रैगर समाज ने खरीद भूमि की पैमाइश समाज के व्यक्तियों की मौजूदगी में कराकर भूमि रैगर समाज को सौंपने की मांग की।

धाबास में विकास कार्यों को मिली रफ्तार, जनता ने जताया कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का आभार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। कैबिनेट मंत्री व झोटवाड़ा विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने क्षेत्र में जनता और कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर झोटवाड़ा में जारी विकास कार्यों पर विस्तार से संवाद किया। नागरिकों ने बीते डेढ़ वर्षों में झोटवाड़ा और विशेष रूप से धाबास क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व विकास कार्यों के लिए कर्नल राठौड़ का आभार प्रकट किया। जनता ने कहा कि वर्षों से लंबित विकास कार्य, जो पूर्व में केवल वादों तक सीमित थे, अब धरातल पर दिखने लगे हैं। धाबास क्षेत्र के निवासियों ने भी कई वर्षों से रुके हुए विकास कार्यों जैसे सड़क, जल निकासी, आवास योजनाओं और अन्य बुनियादी सुविधाओं को गति मिलने पर विशेष धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि निरंतर जनसंवाद से प्राप्त सुझाव क्षेत्र के सर्वांगीण विकास का मजबूत आधार बनते हैं। सशक्त जनसंवाद से ही प्रभावी समाधान निकलते है, और यही लोकतंत्र की असली ताकत है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में राजस्थान प्रगति की नई ऊँचाइयों को छू रहा है। हमारा संकल्प है कि झोटवाड़ा विकास का एक आदर्श मॉडल बने, जिसमें हर क्षेत्र चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण समान रूप से आगे बढ़े।

भीलवाड़ा में गोतस्करी के खिलाफ आक्रोश

भीलवाड़ा(नि.सं.) भीलवाड़ा में गोतस्करी के खिलाफ मंगलवार को लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। सोमवार रात काछोला इलाके में गोतस्करी कर रहे एक ट्रक के पकड़े जाने के बाद आज श्रीनन्द गोपाल गोशाला सेवा समिति और खजूरी क्षेत्र के ग्रामीणों ने उप तहसील कार्यालय पहुंचकर एसडीएम के नाम ज्ञापन दिया। लोगों ने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। मुख्यमंत्री के नाम दिए ज्ञापन में बताया- खजूरी एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में आए दिन गोवंश की अवैध तस्करी की घटनाएं हो रही हैं। माफिया लंबे समय से सक्रिय हैं। प्रशासन-पुलिस की निष्क्रियता के चलते तस्करों के हौसले बुलंद हो चुके हैं। गाय धार्मिक आस्था का प्रतीक है। गाय का अवैध परिवहन व शोषण समाज की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाता है। अगर समय रहते कठोर कार्रवाई नहीं हुई तो क्षेत्र में आंदोलन किया जाएगा।

संविधान बचाओ रैली को लेकर मंडेलिया ने किया गांवों में जन सम्पर्क

घांघू में बीआर अंबेडकर की मूर्ति पर पुष्प अर्पित कर किया दौरे का शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर केंद्र और राज्य सरकार की नीतियों के खिलाफ 22 मई को सांय 4 बजे दादा बाड़ी में संविधान बचाओ रैली का आयोजन किया जाएगा। रैली को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सहित कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता संबोधित करेंगे। इसी को लेकर मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष

रफीक मंडेलिया ने ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया। मंडेलिया ने गांव घांघू में भारत रत्न बाबा साहेब बी.आर अम्बेडकर की मूर्ति पर पुष्प अर्पित कर दौरे का शुभारम्भ किया। इस दौरान मंडेलिया ने कहा कि केन्द्र की भाजपा सरकार भारतीय संविधान के साथ छेड़छाड़ करने का प्रयास कर रही है। वो अब सफल नहीं होगी। भाजपा नेता आए दिन बद जुबानी पर उतर गए हैं। यह लोग उच्च पदों पर रहते हुए पद की गरिमा के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। नेताओं ने इनकी कार गुजारियो पर चुपी साध रखी है। चूरू जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष जमील चौहान ने बताया कि रैली को सफल बनाने के लिए बुधवार को दुधवाखारा, सिरसली, दुधवाखारा स्टेशन, आसलू, दांदू, घांघू आदि गांवों में रफीक मंडेलिया ने जन संपर्क कर रैली में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने का आग्रह किया। इस अवसर पर देहात अध्यक्ष किशोर धांधू, शहर कांग्रेस अध्यक्ष असलम खोखर, धर्मेन्द्र बुड़ानिया, नारायण बालान, मोहम्मद हुसैन निर्वाण, डॉ. प्यारेलाल दानोदिया, पार्षद विमल शर्मा, पूर्व उपजिला प्रमुख सोहनलाल मेघवाल, विधाधर मेघवाल, श्रवण बसेर, शिव कुमार शर्मा, दयाराम कस्वां, महावीर मेघवाल, शंकरलाल शर्मा व सूर्य प्रकाश वर्मा दौरे पर आदि कार्यकर्ता साथ रहे। डॉ. अम्बेडकर स्थल पर जतनलाल मेघवाल, पूर्व बीडीसी मेंबर बरकत खान, हनुमान प्रसाद बरोड़, सत्तार व्यापारी, जगदीश दर्जी, सुमेर तंवर, खिंवाराम मेघवाल, एडवोकेट राकेश मेघवाल आदि ने प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया का स्वागत किया।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।